'ଗ'

# ଉଜନ ସମ୍ମିର

### ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ଠାକୁର ଅନୁକୂଳଚନ୍ଦ୍ରଙ୍କର

### ଭଜନ ସମ୍ଭାର



ସଂଗ୍ରାହକ : ସୁବ୍ରତ କୁମାର ଚକ୍ରବର୍ତ୍ତୀ

ପୁରୁଷୋଉମ କ୍ଲବ୍

ବରଗଡ଼ ବ୍ରିଟ୍ କଲୋନୀ, ଭୁବନେଶ୍ର-୧୮ ॰ . ୯୩୩୭୭୮୦୪୦୦ ୦୯୯୮୫୧୯୯୮

ଫୋନ ନଂ.: ୯୩୩୭୭୮୦୪୦୦, ୦୯୯୮୫୧୯୯୮୬୮

#### ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ଠାକୁର ଅନୁକୂଳଚନ୍ଦ୍ରଙ୍କର ଭକନ ସମ୍ଭାର

ପ୍ରକାଶକ :

ପୁରୁଷୋରମ କୁବ୍

ବରଗଡ଼ ବ୍ରିଟ୍ କଲୋନୀ,

ଭୁବନେଶ୍ୱର-୧୮

ମୁଦ୍ରକ :

ଶ୍ରୀ ଗୁରୁଗୌରାଙ୍ଗ ପ୍ରେସ ଟ୍ରଷ୍ଟ

ନୟାପଲ୍ଲି (ଇସ୍କୁନ) ଭୁବନେଶ୍ୱର-୧୫

ପ୍ରଥମ ସଂସ୍କରଣ :

୨୦୦୭ ମସିହା

ଦ୍ୱିତୀୟ ସଂୟରଣ :

୨୦୦୮ ମସିହା

ମୂଲ୍ୟ : ୫୨.୦୦ ଟଙ୍କା ମାତ୍ର

#### ନିବେଦନ

ସାତୋଟି ରଙ୍ଗରେ ସେ, ସାତୋଟି ରଙ୍ଗର ସମାହାର ମଧ୍ୟ ସେ, ତାଙ୍କର ରଙ୍ଗ ଅନ୍ଧି, ଆଉ ରଙ୍ଗ ବି ନାହିଁ । ସେହି ରଙ୍ଗରୁ କାହା ମନରେ କେଉଁ ରଙ୍ଗ ଲାଗିଛି ଅବା କେଉଁ ମନଟି ଶୁକ୍ତ ଉତ୍କଳ, ତାହା ତାଙ୍କର ଶ୍ରୀଚରଣ ତଳେ ନିବେଦିତ ଉକ୍ତି ଅର୍ଘ୍ୟ, ଭକ୍ତ ହୃଦୟକୁ ପରସିପାରେ ।

ନାନା ରଙ୍ଗର ଫୁଲରେ ଫୁଲ ଚାଙ୍ଗୁଡିଟି ଭରା । କେଉଁ ଫୁଲ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ଠାକୁରଙ୍କ ପାଦରେ ଲାଗିବ, କେଉଁ ଫୁଲଟି ତାଙ୍କ ଗଳାହାରର ପଦକଟି ହେବ, ଅବା କେଉଁ ଫୁଲଟିକୁ ପରମ ଦୟାଲ ନିଜ ହାତରେ ଚାଙ୍ଗୁଡିରୁ ତୋଳି ନେବେ ତାହା ତାଙ୍କୁ ହିଁ କଣା ।

ଭକ୍ତ ମାନସର ଏହି ସାମୂହିକ ନିବେଦନ ତାଙ୍କର ଶ୍ରୀଚରଣ ସେବାରେ ଲାଗିବ । ଏତିକି ଆଶ୍ୱାସନା କେବଳ । ମୁଦ୍ରଣ କନିତ କୌଣସି ପ୍ରମାଦ ଥିଲେ, ସଦୟ ହୃଦୟରେ କ୍ଷମା କରିଦେବେ, ଏତିକି ମୋର ପ୍ରାର୍ଥନା ।

> ତାଙ୍କର ଦିନ ସନ୍ତାନ ସୁଶାତ୍ତ କୁମାର ବେହେରା

### ସୂଚୀପତ୍ର

|              | ଓଡ଼ିଆ   |      |
|--------------|---|------|
| ١.           | ଅନାଦି ଅନତ ତୁମେ  | - 6  |
| 9.           | FIGIO GIGICO GIO  | - 0  |
| n.           | #UCO COOKS  | - m  |
| ٧.           |   | ~    |
| 8.           |   | - 0  |
| <b>9</b> .   |   | - a  |
| 9.           | - 1 - 5 - 1   |      |
| г.           |   |      |
|              |   |      |
| 90           |   | • •  |
| 66           | . କି ଦେଇ ପୂଜିବି ଚରଣେ ତୂମର<br>. କି ସୁନ୍ଦର କି ସୁନ୍ଦର      | 99   |
| 200          |   |      |
|              |   | e en |
|              |   |      |
| 38.50        |   | 0.0  |
| 64           |   | a. 9 |
| 9 :          | 5 00 00   | 9.0  |
|              |   |      |
|              |   |      |
|              | 2 - 5 000 01000   | 70   |
|              |   | 9 0  |
| 9            | . କାବନ ମୋର ଦଦରା ନା<br>. କପେ ମୋ ମନ କନ୍ଦରେ                |      |
|              |   | 9 91 |
|              |   | 9 X  |
| 98           | 그는 그는 그는 그리고        | 9 4  |
| 98           | ତ୍ମ ଅନତ ତୁମେ ଅଧ୍ୟାମ<br>ତୁମେ ପରମ ଦରଦୀ ପ୍ରେମମୟ            | 9.5  |
| 99           | ତ୍ମ ପରମ ବରଦା ପ୍ରେମାୟ<br>ତୁମେ ସ୍ରଷ୍ଠା ତୁମେ ବୃଷ୍ଠି        | 9.0  |
| 99           | .   ତୁମେ ସଞ୍ଜା ତୁମେ ବୃଷ୍କ<br>.   ତୁମେ ଇଶ୍ୱର ସାରା ବିଶ୍ୱର | 9.   |
| <del>7</del> | , ଦୁଧ୍ୟ ଇଣ୍ଡର ସାରା ବଶ୍ୱର                                | 9.0  |
| 0.0          | ତ୍ମକୁ ଜୀବନେ ଲଭିଛି ମରମେ<br>ଚବ ସୁନ୍ଦର ସେହି ରୂପ            | 900  |
| 110.         | ଜନ୍ୟ ଧୁନ୍ଦର ସେହ ରୂପ                                     | en e |
|              | ତ୍ମେ ଯେ ଜଗତ ମୁଣ   | en e |
| 17.          | ତୁମକୁ ଦେଖିଛି ମୁହିଁ ସାଗରର ଗରକନେ                          | m m  |
|              | ଚୁମକୁ ଧରି ମୁଁ ଯେବେଠୁ ଚାଲିଛି                             | 4141 |
| ١٧.          | ତୁମ ନାମେ କିଁ ରସ ଭରିଛ ହେ                                 | 418  |

|               | ଦ୍ୟାଧ୍ୟ ପ୍ରଭ ମୋର କରଣା ମାଗର                  |      |
|---------------|---|------|
| MD.           | ଦିଗହଳା ପଥହରା ପଥ୍କର ଧୃବତାରାଦ୍ୟାର ଖେରି ଦେଖନ   | ୩8   |
| no.           | ଦୁଆର ଖୋଲି ଦେଖରେ                             | ¶9   |
| Mr.           | ଧରମର ମାତେ ରେଠ ରହି                           | ୩୭   |
| <b>୩୯.</b>    | ଧରମର ମାନେ ଦେଲ କହି                           | ୩୮   |
| 80.           | ପ୍ରଭୁ ତୁମରି ଧ୍ଆନେ                           | ୩୯   |
| 80.           | ପ୍ରକୃ ତୂମ ଶ୍ରୀଚରଣ ବିନା                      | 80   |
| 89.           | ପ୍ରଶମେ ବାର ବାର ଗୁରୁପାଦ ପଦେ                  | 86   |
| ٧¶.           | ପୁରୁଷୋରମ ଜୟ ଜୟ                              | 89   |
| 88.           | ପ୍ରିୟ ପରାଶ ଦେବତା                            | ४ भा |
| 88.           | ପ୍ରେମର ପୂଳାରୀ ଦରଦୀ ଠାକୁରବିଶ ମାନ୍ୟ ନର୍ମ ନର୍ମ | 88   |
| <b>٤</b> ٩.   | ବିଶ୍ୱ ମାନସେ ଚରଣ ବହିତ                        | 8.8  |
| ٧9.           | ବଦେ ପୁରୁଷୋରମମ୍ ଜୟ ଲକ୍ଷ୍ମାକାନ୍ତମ୍            | 83   |
| ۷Г.           | ଭକତି ପ୍ରଦିପ କାଳିଦିଅ ପ୍ରଭୁ                   | 89   |
| 80.           | ଭବ ସଂସା୨େ ୨୨୨୨୨ର ସାର ତବ ଶ୍ରୀ ଚରଣ            | 8 L  |
| 80.           | ରଳ ଭାଇ କପ ଭାର                               | 86   |
| 80.           | ମନ ବନ୍ଧୁରେ                                  | 80   |
| 89.           | ମୋ ମନର ତୁମେ ଗନ୍ଧ କସ୍ତୁରୀ                    | 8 6  |
| 8 <b>9</b> 1. | ମୋର ଜୀବନ ଜୋର                                | 89   |
| 88.           | ମହାମିକନର ତୀର୍ଥ ତୁମେ ଗୋ                      | 8 ना |
| 88.           | ମନର ମରିଷ ବୋଲି                               | 88   |
| 89.           | ମନରେ ଜନ୍ମମୟ ସେହି ଏକାରେ                      | 88   |
| 89.           | ମୋ ଠାକୁର ଜୀବନ୍ୱାଥ                           | 89   |
| 8 F.          | ମନ ବାୟା ନୟନ କବାଟି ଖୋଇମଥା ମୋଇ ରୋଜିପାର        | 89   |
| 80.           | ମଥା ମୋର ଲୋଟିଯାଇ                             | 8 F  |
| 90.           | ମୋ ମନର କଥା ହୃଦୟର ବ୍ୟଥା                      | 8 6  |
| ge.           | ମଧୁମୟ ତୁମେ ପ୍ରାଣମୟ ତୁମେ                     | 90   |
| 99.           | ଶଙ୍କ ବାଳିଲାରେ ପ୍ରାଣ ନାଚିଲା                  | 96   |
| ∌¶.           | ସହର ଚରମ ଦୂମେ                                | 97   |
| 98.           | ସକକ ଇଭିଛି ପ୍ରଭୁ ତୂମକୁ ପାଇ                   | 941  |
| 98.           | ସ୍ୱର୍ଗ ଯାହାର ସିଂହାସନ                        | 90   |
| 99.           | ସାଧନାର ପଥେ ଉଇରେ ସାଧକ                        | 22   |
| 99.           | ସ୍ୱାଇତମ୍ ମା ସ୍ୱାଇତମ୍                        |      |
| ₽F.           | ହେ ମାତା                                     |      |
| ec.           | ହେ ତରାମର                                    | 90   |
| 90.           | ହେ ପ୍ରାଣକ ପ୍ରାଣେଶ୍ୱର                        | 90   |
|               | 33.4  |      |

#### ବଗଳା

| ୧. ଆମି ବେଦ ବିଧି ଛାଡି                                     | 96    |
|--|-------|
|  | 00    |
| 사용하는 경우 사용하는 사용하는 사용하는 사용하는 사용하는 사용하는 사용하는 사용하는          | 6) W  |
|  | D     |
|  | 67 -6 |
|  |       |
|  |       |
|  |       |
| ୭୮. ଓଗୋ ସୁନ୍ଦର ଅପରୂପ୭୮. ଓଠୋ ଜାଗୋ ଉହ୍ଲ                    | 96    |
| ୭୯. ଓଠୋ ଜାଗୋ ଉକ୍କ<br>୮୦. ଓରେ ଓ ମାଝି ଭାର                  | Го    |
| ୮୦. ଓରେ ଓ ମାଝି ଭାଇ<br>୮୧. କେ ବଲେ ତୁମି ନାଇ                | L 6   |
| ୮୧. କେ ବଲେ ତୁମି ନାଇ<br>୮୨. କତ କନମେର ପୂନ୍ୟଫଲେ             | Г9    |
| ୮୨. କତ କନମେର ପୂନ୍ୟଫଲେ୮୩. କି ଦିଏ ପୂଳିବୋ ରାତୁଲ ଚରନ         | Γen   |
|  |       |
|  |       |
|  |       |
|  | . 60  |
| C 00001  |       |
|  |       |
|  |       |
| ୯୦. ଜୀବନେର ଭାଲୋଟାକ ମନ୍ଦି ବା କ<br>୯୧. ଜଦି ମାନୁଷ ହୋୟେ ଥାକୋ | 0.0   |
| ୯୧. ଜଦି ମାନୁଷ ହୋୟେ ଥାଲେ                                  | ~ ~   |
| ୯୧. ଛଦି ମାନୁଷ ହୋୟେ ଆକୋ<br>୯୨. ଠାକୁର୍ ତୋମାର ନାମଟି ନିଏ     | ~~    |
| ୯୨. ଠାକୁର୍ ତୋମାର ନାମଟ ନିୟ<br>୯୩. ଠାକୁର୍ ଆମାର ଦୟାଲ ଆମାର   | 6.41  |
| ୯୩. ଠାକୁର୍ ଆମାର ଦଧାଲ ଆଧାର<br>୯୪. ଠାକୁର ତୋମାର ପରଶ ଓଗୋ     | 6.8   |
| ୯୫. ତୁମି ଆମାୟ ଆଦର କରୋ                                    | 6.8   |
| ୯୬. ତୋମାରି ଚରନ କରିଆ ସୁରନ                                 | 6.3   |
| ୯୭. ତୁମି ଦେଖାଲେ ମୋଦେର ଯେ ପଥ                              | 6.0   |
| ୯୮. ତୋମାକେ ଯଖନ ମନେ ପଡେ                                   | GL    |
| ୯୯. ଡବ ରାଡୁଲ ଚରନ ପରଶେ                                    | 66    |
| ୧୦୦. ତୋମାର କଥାଇ ବଲେ ଯାରା                                 |       |
| ୧୦୧. ତୋମାର ମନେର ମତ କରେ                                   | 606   |
| ୧୦୨. ତୋରା ଆୟ ଆୟ ଅୟ                                       |       |
| ୧୦୩. ତୁମି ଧନୁକ୍ଧାରୀ ରାମ୍                                 |       |
| ୧୦୪. ତୁମି ସତ୍ୟ ତୁମି ନିତ୍ୟ                                | 608   |
| ୧୦୫. ଦୂର୍ କରୋ ମନେ ଯତ ଦୁର୍ବଲତା                            | 809   |

| ୧୦୬. ଦ୍ୟାଖ୍ନକଲ ପାଗଲ                      |           |
|--|-----------|
| ୧୦୭. ଧିତାଂ ଧିତାଂ ବୋଲ ବାଳେ                | e09       |
| ୧୦୮. ଧରାର ଧୂଲିତେ ଏଲୋଯେ ଆବାର୍             |           |
| ୧୦୯. ନିତ୍ୟାନନ୍ଦ ମୁକ୍ତିଦାତା               | e o L     |
| ୧୧୦. ନିରାର ରଚନ୍ଦ୍ର                       | e o G     |
| ୧୧୦. ନିତାଇ ବଲରେ                          | 6 6 0     |
| ୧୧୧. ନିଷା ଦେଓ ଇଭି ଦେଓ                    | 6 6 6     |
| ୧୧୨. ନାନାନାମୋରା ତୋମାୟ                    | 6 6 9     |
| ୧୧୩. ପର୍ମେଶ କେବା କାନେ                    | e e a     |
| ୧୧୪. ପରମ ଦ୍ୟାଲ ପ୍ରାନେର୍ ଠାକୁର୍           | 6 6 8     |
| ୧୧୫. ପୂକାର ଫୁଲ ଆମି ସାକିଏ ରାଖି            | 8 9 9     |
| ୧୧୬. ପ୍ରେମୀ ତୋମାରେ ପ୍ରନାମ କାନାଇ          | 6 6 ð     |
| ୧୧୭.ପରମ ଦ୍ୟାଲ ପୁରୁଷୋରମ                   | e 9 9     |
| ୧୧୮.ପୁରୁ ତୋମାର୍ କଥା ଶୁନବୋ ଏବାର୍          | e e L     |
| ୧୧୯.ପୁରୁଷୋରମ ଶ୍ରୀ ଅନୁକୂଲ                 | 6 6 G     |
| ୧୨୦. ପାବନା କେଲାୟ ହିମାଇତପୁରେ              | ę 9 o     |
| ୧୨୧. ପ୍ରକାମ ତୋମାୟ ପ୍ରକମେ ପ୍ରଭୁ           | 6 9 9     |
| ୧୨୨.ପ୍ରାନେର ଠାକୁର ତୁମି ଅନୁକୂଲ            | e 9 m     |
| ୧୨୩. ପୋଡେଥାକ୍ ଧନ ସମ୍ପଦ ସମ୍ମାର            | e 9 X     |
| ୧ ୨ ୪ . ପ୍ରିଥିବୀତେ ତୂମି ସୁଧ୍ର ତୋମାର ଉପମା | 6 9 8     |
| ୧୨୫. ବିଶ୍ୱ ପିତାକେ ସାମନେ ରେଖେ             | e 9 Đ     |
| ୧୨୬. ଭତ ସାଧକେର ରହ ଭରିପ୍ରାଣ               |           |
| ୧୨୭.ମଧୁର କରେ ନାଓ ହେ ପ୍ରଭୂ                |           |
| ୧୨୮.ମାନୁଷ ହଖାଇ ବଡଇ କଠିନ                  | e 9 c     |
| ୧୨୯.ମାନୁଷ ହୋୟେ ଦୟାଲ ମାଝି                 | ९ ୩ ०     |
| ୧୩୦.ମୋରେ ରାଖୋ ରାଜା ଦୂଟିପାୟ               | ୧୩୧       |
| ୧୩୧. ରୁନ୍ଝୁନ୍ ରୁନ୍ଝୁନ୍                   |           |
| ୧୩୨.ଶ୍ରୀ ଗୁରୁ ଚରଣ କର ସାର                 |           |
| ୧୩୩. ଶ୍ରୀପଦ ପଙ୍କଳ ଆଲୋକ ରଂଜିତ             |           |
| ୧୩୪. ଶୁନରେ ଜଗତବାସୀ                       |           |
| ୧୩୫.ଶୋନୋ ମାନୁଷ ଶୋନୋ                      | (C) 1A/70 |
| ୧୩୬. ସୂଜନ ବନ୍ଧୁରେ                        |           |
| ୧୩୭.ସାଥେତୋ ଯାବେନା କିନ୍ତୁ                 |           |
| ୧୩୮.ସଦ୍ଗୁରୁ ଧର ଦେଖ୍ବି ଯଦି ତାରେ           |           |
| ୧୩୯.ସବାର ଚେୟେ ତୋମାୟ ଭାଲୋ                 |           |
| ୧୪୦.ହେ ଠାକୁର୍ ଜୀବନ ପଥେ                   | e x 9     |

| ହନ୍ଦୀ  | 719 000    |
|--|------------|
| ୪୧.୯ ମନ୍ଦ୍ରାରେ   | 6 R dJ     |
| 에게 위한  |            |
|  |            |
| ୧୪୩.ସୋ ମେରେ ପ୍ରାଚମ ସେ ପ୍ୟାର କରେ<br>୧୪୪.ଠାକୁରକୀ ମେରେ ପରମ ଦୟାଲ                       | 6 & P      |
| ୧୪୪.ଠାକୁରକୀ ମେରେ ପରମ ଦୟାଲ<br>୧୪୫.ତୁମ୍ବିନ୍କନ୍ପୁଭୁପାର ଲଗାଏ                           | 6 & D      |
| ୧୪୫.ତୁମ୍ ବିନ୍କନ୍ପୁଭୁ ପାର ଲଗାଏ<br>୧୪୬.ଦୟାଲ ତୁହି ମେରା ଜୀବନ ଧରେ                       | 68L        |
| ୧୪୬.ଦୟାଲ ତୁହି ମେରା ଜୀବନ ଧରେ<br>୧୪୭.ପରମ କରୁଣା ଘନ                                    | 686        |
| ୧୪୭.ପରମ କରୁଣା ଘନ୧୪୮.ପୁରୁ ଅବର୍ଯାମୀ  |            |
| ୧୪୮. ପୁଭୁ ଅବର୍ଯାମୀ୧୪୯. ବନ୍ଦୁ ମେ ତୋଲା ବାର ବାର                                       | 686        |
| ୧୪୯. ବହୁ ମେ ତୋଲା ବାର ବାର<br>୧୫୦.ଭଳୋ ମନ ଠାକୁର ଚରନ୍                                  | 689        |
| ୧୫୦.ଭଳୋ ମନ ଠାକୁର ଚରନ୍୧୫୧.ମେରେ ହିଏମେ ବଳତ ବଧାଇ                                       | 6 & dl     |
| ୧୫୧.ମେରେ ହିଏମେ ବଳତ ବଧାଇ<br>୧୫୨.ସେ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ର ହେ                                   | 688        |
| ୧୫୨.ସେ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ର ହେ<br>୧୫୩. ସବସେ ସୁନ୍ଦର ନାମ ଠାକୁରଳୀ                              | 688        |
| ୧୫୩. ସବସେ ସୁନ୍ଦର ନାମ ଠାକୁରକୀ<br>୧୫୪.ସର୍ବମଙ୍ଗଲ ଦାତା ହେ                              | 689        |
| ୧୫୪.ସର୍ବମଙ୍କଇ ବାଚା ହେ୧୫୫.ସଦ୍ଗୁରୁ ଜେ ସରଣମେ ଆଓ                                       |            |
| ୧୫୫. ସତ୍ଗୁରୁ କେ ଏକ୍ଟୋମ ପାତ   | 681        |
| ୧୫୫. ସଦ୍ଗୁରୁ ଜେ ସରଣମେ ଆଓ<br>୧୫୬.ହେ ଠାକୁର୍ ଚୂମ୍ ଶାବି ଦାତା<br>୧୫୭.ହୋଗା ଭାଇ ଧନ୍ୟ ଜୀବନ |            |
| ୧୫୭. ହୋରା ଭାଇ ଧନ୍ୟ କ୍ଷାଧ୍ୟ କରିବ  | THE STREET |
|  |            |
| ୧୫୮. ଅମ୍ରିତେରୀ ପୁତ୍ର ତୋରା  |            |
|  |            |
|  | 197        |
|  |            |
| 2 2 200 000  |            |
|  |            |
| ୧୬୩. ଏକି ଆନନ୍ଦ ପରମାନନ୍ଦ<br>୧୬୪. କି ଦିଏ ପୂଳିବୋ ଦୟାଇ                                 | ووع        |
| ୧୬୫. କିଏ ଗୋ ତୁମେ ରଖିଇ ବାହି   |            |
| ୧୬୬. ଟ୍ୟୁ ଗୋ ତୁମେ ରଖିଲ ବାଦ୍ଧ୧୬୬. ଗୁରୁ ନାମ ନିଏ ଭାଷାନୋ ତରୀ                           |            |
| ୧୬୭. ଜୀବନ ନାଥ ଜୀବର ଏଠି   | e 9 6      |
| ୧୬୮. ତୁମକୁ ଜୀବନେ ପ୍ରଭୁ ନଥିଲେ ଧରି   |            |
| ୧୬୯. ତୋରା କେ ଦେଖବି ମନେର ମାନୃଷ  | 6 9 6      |
| ୧ ୭ ୦ . ନାମର ଅନଳ ଜାଳରେ   | ୧୭୨        |
| ୧୭୧. ବଦନ ଭରିଆ ଗୁରୁନାମ ନିଆ  | ୧୭୩        |
| ୧୭୨. ବ୍ୟାବନ ବ୍ୟାବନ   | ९୭४        |
| ୧୭୩. ମୋରି ଠାକୁରଳୀକି ବାନି   | 6 9 8      |
| 00V 0800ISS  | 21212      |

#### ଅନାଦି ଅନନ୍ତ ତୁମେ ଅଭିରାମ

ଅନାଦି ଅନତ ତୂମେ ଅଭିରାମ (୨ଥର) ବଦେପୁରୁଷୋଇମମ୍.... (୬ ଥର) ଅନାଦି...... ॥୦॥

କେତେ ଅବତାରେ ଅଇଲ ଏ ଭବେ ବୃଦ୍ଧ ଚଇତନ୍ୟ ରାମକୃଷ୍ଣ ଭାବେ (॥) ମହନ୍ନଦ ଯୀଶୁ ରାମ ପର୍ଶୁରାମ ... (୨ଥର) ରହିଲ ସବୁରି ଧାମେ... ବଦେ ପୁରୁଷୋଭମମ୍...(୬ ଧର) ଅନାଦି...... ॥୧॥

ଆଜି ଆସିଅଛ ଅନୁକୂଳ ଭାବେ କୂଳେ ଲଗାଇବ ଏହାମୁହିଁ ଭାବେ (॥) କକ୍କି ଅବତାରେ ପାପୀ ତାରୁଅଛ ... (୨ଥର) ଜୀବ ଜଗତଧାମେ... ବନ୍ଦେ ପୁରୁଷୋଢମମ୍... (୬ ଥର) ଅନାଦି...... ॥ ୨ ॥

### ଅସାର ସଂସାରେ ସାର

ଅସାର ସଂସାରେ ସାର ନାମ ଏକା ସିନା ନାମ ବିନା ନାହିଁ ଆନ ପଥ ମୁଢ଼ ମନା... ଆନ, ପଥ ମୁଢ଼ ମନା... (॥) ଅସାର...... ॥୦॥

ନାମ ସୁଧା ରସ ଯାର ଅଧର ଛୁଇଁଛି (॥) ସେଇ ଜନ ସୁଖା କେତେ (୨ଥର) ଜନମ ପାଇଛି ନାମ ଏକା ସତ ସିନା... ଆନ, ଏକା ସତ ସିନା ଅସାର......॥୧॥

ନାମେ ସଦା ନାମି ଯିଏ ସେ ଜାଣେ ମହିମା (॥) ଆନକୁ ଅବୁଝା ସିନା (୨ଥର) ନାମର ଗରିମା... ସୁନାରୀ, ଚିହ୍ନ ଏ ସୁନା ସୁନାରୀ ଚିହ୍ନ ଏ ସୁନା ଅସାର...... ॥୨॥

#### ଆହେ ପ୍ରେମମୟ ଦରଦୀ ଦୟାଲ

ଆହେ ପ୍ରେମମୟ ଦରଦୀ ଦୟାଲ କେତେ ମତେ ପାଅ ଭଲ (॥) ନିକର କରି ମୋ ଚୁନା ସଂସାରକୁ (୨ଥର) ସୁନା କରି ଗଢ଼ିଦେଲ। ଆହେ.....॥୦॥

ମୁଁ ମଜିଥିଲି ଆମ୍ ପ୍ରୀତି କର୍ମେ ବୃଝି ନ ପାରିଲି ମୋର ଏ ମରମେ (॥) ନିଦ୍ଧା, ଘୃଣା, ଅପମାନ ହସି ସହିନ୍ଦ କଷଣ (୨ଥର) ଜୀବନ ମୋହର ପ୍ରେମେ ଭରିଲ ଆହେ.....॥୧॥

ମୁଁ ମାଗୁଥିଲି ଧନ, କନ, ମାନ ବୁଝି ନପାରିଲି ତବ ପ୍ରୟୋକନ (॥) ରସଭରା ଭବସିନ୍ଧୁ, ମୁଁ ଏକ କ୍ଷୁଦ୍ର ବିନ୍ଦୁ (୨ଥର) ଅକାତରେ ପ୍ରଭୂ ଅଜାଡ଼ି ଦେଲ ଆହେ.....॥୨॥

> ମାଗୁଣି ମୋହର ତବ ଶ୍ରୀପୟରେ ମଧୁ ରାଧାନାମ ବାଜୁ ମୋ ଅନ୍ତରେ (॥) ମୋ ନୟନେ ନାଚୁଥାଅ (ପ୍ରଭୁ ହେ) ସଦା ତୁମେ ଦୟାମୟ (॥) ନିତି ସେବିବି ତବ ପଦଯୁଗଳ ଆହେ.....॥୩॥

### ଆରତୀ ସଳେଇ ଦେବି

ଆରତୀ ସଳେଇ ଦେବି ପ୍ରଣତି ଜଣାଉଥିବି (॥) ଶ୍ରୀଚରଣ ଧୂଳି ସାରା ଅଙ୍ଗେ ବୋଳି ଜୟରାଧା (ଗାଉଥିବି...) (୪ଥର) ଆରତୀ ସଳେଇ ଦେବି......॥୦॥

ଚରଣ କମଳେ ପଶିଛି ଶରଣ ତୁମ ହାତଖେଳ ଜନମ ମରଣ (୨ଥର) ଭାବକୁ ନିକଟ ତୁମେ, ଅଭାବକୁ ଦୂର (୨ଥର) ଭାବରେ ବନ୍ଧା ହେ ଦୟାଲ ଠାକୁର ଦରଶନେ (ଧାଉଁଥିବି...)(୪ଥର) ଆରତୀ ସଜେଇ ଦେବି...... ॥୧॥

ଜୀବନର ପଥ ଅନ୍ଧାର କେତେ ତୁମେ ହିଁ ଆଲୋକ ମୋର ଚଲାପଥେ (୨ଥର) ମୋହରି ନାଆରେ ତୁମେ ସେ ନାଉରି (୨ଥର) ଭବ ପାରାବାରୁ କରିଦିଅ ପାରି ତୁମ ପଦ (ଧାଉଥିବି...)(୪ଥର) ଆରତୀ ସଜେଇ ଦେବି......॥୨॥

#### ଆକି ଆସିଛିରେ ଶୁଭ ଲଗନ

ଆଜି ଆସିଛିରେ ଶୁଭ ଲଗନ ପ୍ରେମେ ପୂଜିବା ପ୍ରଭୂଙ୍କ ଚରଣ (॥) ଅନ୍ତର ବେଦନା ସେ ବୁଝନ୍ତି ସିନା (୨ଥର) ସେ ପରା ଭକତ ଜୀବନ ଆଜି.....॥୦॥

ଯୁଗ ଅବତାର ଦୟାଲ ଠାକୁର ଦେଖ ଦିଶୁଛନ୍ତି କେଡ଼େ ସୁନ୍ଦର (॥) ନିଜେ ପରାଆସି ଲୀଳା ପରକାଶି (୨ଥର) ଦେଲେ ସେ ସତ୍ୟର ସନ୍ଧାନ ଆଜି.....॥୧॥

ନୂତନ ସଂସ୍କାର ଆସିଲେ ନେଇ ଜଗତ କଲ୍ୟାଣ କରିବା ପାଇଁ (॥) ଏତେ ପ୍ରିୟ କେହି ତାଙ୍କ ପରି ନାହିଁ (୨ଥର) ସଭିଏଁ ତାଙ୍କରି ସନ୍ତାନ ଆଜି......॥୨॥

କୀବନେ ଯାହାର ଆଦର୍ଶ ନାହିଁ ଭଲ ମନ୍ଦ ସିଏ କାଣିବ କାହିଁ (॥) ହୃଦୟ ଆସନେ ବସାଇ ଯତନେ ( ୨ଥର) ସତନାମ କର ମନନ ଆଜି......॥॥॥

### ଆଜି କି ଆନନ୍ଦ ଦିନରେ

ଆଜି କି ଆନନ୍ଦ ଦିନରେ, ଆଜିକି ମଧୁର ଦିନ (୨ଥର) ଜଗତ ଜନନୀ ଲକ୍ଷ୍ମୀ ଠାକୁରାଣୀ (୨ଥର) ଧରାରେ ହେଲେ ଜନମରେ ଦ୍ୟାମୟୀ କରୁଣାମୟୀ ସେ ଭକତ ଜୀବନ ଆଜି କି ......॥୦॥

ପ୍ରେମମୟଙ୍କର ପ୍ରେମମୟୀ ସିଏ
ଦୁଃଖୀଙ୍କ ଦୁଃଖ ହାରିଣୀ
ମଙ୍ଗଳମୟୀ ସେ କଗତର ମାତା
ଦାରିଦ୍ର୍ୟ ଦୁଃଖ ଭଞ୍ଜନୀ
ଧରା ହେଲା ଧନ୍ୟ (୨ଥର) ମାତାଙ୍କ ଜନମେ (୨ଥର)
ପୁରୁଷୋତ୍ତମ ସଙ୍ଗିନୀ ସେ
ଅନ୍ନପୂର୍ଣ୍ଣ ସୁଖ ଦାୟିନୀ ମା ଜଗତଜନନୀ
ଆଙ୍ଗି କି ......॥୧॥

ହୁଳହୁଳି ଶଙ୍ଖନାଦ ଶବଦରେ ପୁରି ଉଠୁଛି ଧରଣୀ ସର୍ବମୟୀ ଲକ୍ଷ୍ମୀ କମଳିନୀ ସିଏ ଦୁଃଖ ବିପତ୍ତି ହାରିଣୀ କୋଟି କୋଟି ଭକ୍ତ (୨ଥର) ସେ ପାଦ କମଳେ ଲୋଟି ଯାଆନ୍ତି ଶରଣ ଯେ କଗତ କଲ୍ୟାଣୀ ଲକ୍ଷ୍ମୀ ମା ଚରଣେ ପ୍ରଣାମ ଆଜି କି ......। । ୨ ॥

#### ଆସ ଭାଇ ଯିବା ଦର୍ଶନ କରିବା

ଆସ ଭାଇ ଯିବା ଦର୍ଶନ କରିବା ଏ ଯୁଗର କୃଷ ରାମ ଚୈତନ୍ୟ ରସୁଲ ବୁଦ୍ଧ ଯୀଶୁ ଜାଣ ଏ ଯୁଗ ପୁରୁଷୋଉମ ଏ ଯୁଗର କୃଷ ରାମ ଆସ ଭାଇ... ॥୦॥

ମଶିଷ ଜନମ ଅଟେଇ ପରମ, ମୁକଡିର ବାଟ ଏହି ଜୀବନ ପଥରେ ଚାଲରେ ମନୁଆ, ଇଷ୍ଟନାମ ସଦା ଗାଇ ଏହି ଜୀବନରେ ଉନ୍ନତି ସାଧିବୁ (୨ଥର) ଧରିଲେ ଯୁଗ ଗୋସାଇଁ (୩ଥର) ଆସ ଭାଇ... ॥୧॥

ନିଜେ କରି କର୍ମ ଶିଖାଡି ନିୟମ, ମଣିଷର ଶିକ୍ଷା ପାଇଁ ଯୁଗେ ଯୁଗେ ସେହି ଆସଡି ଓହ୍ଲାଇ, ମଣିଷ ରୂପକୁ ନେଇ ଏ ପରମ ସତ୍ୟ ଚିଭେ ବୃଝି ରଖ (୨ଥର) ଏ ପଥ ହୁଡିବୁ ନାହିଁ (୨ଥର) ଭଜିବୁ ଯୁଗ ଗୋସାଇଁ ଆସ ଭାଇ ... ॥୨॥

### ଆହେ ଅନୁକୂଳ ପୁରୁଷୋଉମ

ଆହେ ଅନୁକୂଳ ପୁରୁଷୋରମ ଭଳତ ବସ୍କ ହରି କେତେ ପାପି ତାପି ତାରିଛ ପ୍ରଭୂ ହେ ନାମ ବହିଛ ମୁରାରୀ ( ୨ଥର) ଆହେ.....॥୦॥

ତୁମେ ବୃହ୍ନା, ବିଷ୍ଣୁ, ଦେବ ମହେଶ୍ୱର ତୁମେଡ ଜଗତ ପତି ତୁମ ନାମ ସଦା ମଙ୍ଗଳର ଗୀତି (୨ଥର) ତୁମେ ହିଁ ଗତି ମୁକତି (୨ଥର) ଆହେ.....॥୧॥

ପ୍ରେମମୟ ତୁମ ସୁଧାମୟ ବାଣୀ କରିଛି ବିଶ୍ୱ ମୋହିତ ତୁମ ଦେଖାପଥେ ୟଲିବି ସତତ (୨ଥର) ଗାଉଥିବି ତୁମ ଗୀତି (୨ଥର) ଆହେ......॥୨॥

ଦରଦୀ ଦୟାଲ ପତିତ ତାରଣ ହେ ବିଶ୍ୱପିତା ଠାକୁର ତୁମ ନାମ ଜପି ତୁମ ଛବି ଭାବି (୨ଥର) ସଂସାରୁ ହୋଇବି ପାରି (୨ଥର) ଆହେ.....।୩॥

#### କରୁଣାମୟ ହେ ତୁମେ

କରୁଣାମୟ ହେ ତୁମେ ପୁରୁଷୋତ୍ତମ (୨ଥର) ତୁମ ପ୍ରେମ ତୁମ ବୟା ଅନନ୍ତ ଅସୀମ (୨ଥର) କରୁଣାମୟ...... ॥୦॥

ସେ ଜୀବନ ହାହାକାରେ ଝଡ଼ିପଡୁଥିଲା ଡୁମରି ପରଶ ଲଭି ପଲୁବି ଉଠିଲା (॥) ପରଶମଣି ହେ ଡୁମେ ଅନ୍ତରତମ ଡୁମ ପ୍ରେମ... କରୁଣାମୟ......॥ ॥ १॥

ଶତ ସାଧନାର ଫଳେ ଯାହା ନ ମିଳଇ ତୁମରି ଦର୍ଶନ କ୍ଷଣେ ସକଳ ଭରଇ (॥) ଚିର ପ୍ରେମମୟ ତୁମେ ହେ ପ୍ରିୟପରମ ତୁମ ପ୍ରେମ... କରଣାମୟ......॥ ॥ ॥

ମାନବ ଉଦ୍ଧାର ଲାଗି ତବ ଆଗମନ ବୁଝି ବି ଅବୁଝା ହୁଏ ଏ ଅବୋଧ ମନ (॥) ତଥାପି ଆଶୀଷ ଝରେ ଦରଦୀ ପରମ ତୁମ ପ୍ରେମ... କରୁଣାମୟ...... ॥୩॥

### କି ଦେଇ ପୁଳିବି ଚରଣେ

କି ଦେଇ ପୂଜିବି ଚରଣେ ତୁମର
(ପ୍ରଭୂ ହେ) ମୋର ବୋଲି କିଛି ନାହିଁ (॥)
ଅନ୍ତରେ ଭକତି ରଖିଛି ସାଇତି ( ୨ଥର)
ପୂଜା ନିବେଦନ ପାଇଁ...
କି ଦେଇ......॥୦॥

ମାଗିଲେ ମାଗିବି ତୂମ ଦୟା ସ୍ନେହ କରିବି ଦଇନି ପ୍ରଭୂ ପଦେ ଲୟ (॥) ଆରତୀ ବେଳାର ସଳିତା ହୋଇ ମୁଁ (୨ଥର) ଆଲୋକ ବିଛାଇ ଦେବି... କି ଦେଇ...... ॥୧॥

ଅନ୍ତରରେ ମୋର ସଞ୍ଚିତ ବେଦନା କା ଆଗେ କହିବି ପ୍ରଭୁ ତୁମ ବିନା (॥) ପାଦେ ଢ଼ାଳିଦେଇ କାମନା ବାସନା (୨ଥର) ନୟନୁ ନୀର ଝରାଇ... କି ଦେଇ...... ॥୨॥

### କି ସୁନ୍ଦର କି ସୁନ୍ଦର

କି ସୁନ୍ଦର କି ସୁନ୍ଦର ଦରଦୀ ଠାକୁର ମୋର (୨ଥର) ସ୍ନେହପ୍ରୀତି ମମତାର ପ୍ରେମଘନ କଳେବର... କି ସୁନ୍ଦର...... ॥୦॥

ଆଖିରେ ମିଶିଲେ ଆଖି ପରାଣ ମୋ ଯାଏ ଲାଖି ନିରେଖି ବାଙ୍କ ଷହାଣୀ ମୋହନ ତ୍ରିଭଙ୍ଗୀ ଠାଣି (॥) ମନ ଯମୁନାରେ ମୋର ଉଠେ ପୀରତି କୁଆର କି ସୁନ୍ଦର...... ॥ ୧ ॥

ହସରେ ହସେ କଗତ ଶୃଷ୍ଠତରୁ ପଲ୍ଲବିତ ଆନଦେ ମଗନ ଚିଉ ତନୁ ମନ ପୁଲକିତ (॥) ପ୍ରେମାନଦେ ବିକଶିତ ହୃଦୟ କୋମଳ ମୋର କି ସୁନ୍ଦର.....॥ ୨॥

ବଚନ କେଡ଼େ ମଧୁର କିଣେ ମଧୁ କଣ୍ଠସ୍ୱର ଜୀବନ ବୀଣାରେ ମୋର ତୋଳଇ ମଧୁ ଝଙ୍କାର (॥) ପରାଣ ଚକୋରୀ ମୋର ଝୁରେ ଝୁରି ବାରୟାର କି ସୁନ୍ଦର...... ॥୩॥

### କାମ ନ ଛାଡ଼ିଲୁ, କ୍ରୋଧ ନ ଛାଡ଼ିଲୁ

କାମ ନ ଛାଡ଼ିଲୁ, କ୍ରୋଧ ନ ଛାଡ଼ିଲୁ ନ ଛାଡ଼ିଲୁ ଲୋଭ ମୋହ (॥) ମଦ ନ ଛାଡ଼ିଲୁ ମାସ୍।ର୍ଯ୍ୟେ ବୁଡ଼ିଲୁ (୨ଥର) କେମିତି ବଞ୍ଚିବୁ କହ... ତୁ, କେମିତି ବଡ଼ିବୁ କହ କାମ ନ......॥୦॥

ଅହଂକାର କଲୁ ଜୀବନରେ ତୋର, ସହଚର ଚିରଦିନ ଆଣିଲୁ ଅଶାଡି ତହୁଁ ସ୍ୱାର୍ଥବୁଦ୍ଧି (୨ଥର) କାମ, କ୍ରୋଧ, ହିଂସା, ମାନ ଶ୍ରଦ୍ଧା ନକରିଲୁ ଗୁରୁ ଗୁରୁଳନେ, ଲଘୁଜନେ ନାହିଁ ସ୍ନେହ (୨ଥର) ଏକୂଳ ଛାଡ଼ିଲୁ ସେକୂଳ ଛାଡ଼ିଲୁ (୨ଥର) କେମିତି ବଞ୍ଚିବୁ କହ ତୁ, କେମିତି ବଢ଼ିବୁ କହ କାମ ନ.......॥୧॥

ଅଭାବରେ ଯେବେ ପରିଶ୍ରାନ୍ତ ହେଲୁ, କଲୁରେ ବ୍ରହ୍ଲ କିଞ୍କାସା ଗୁରୁପଦ ସିନା ମୁକଡି ଦୁଆର, ମାନବ ଆଶା ଭରସା (୨ଥର) ହୁଅ ତଦଗତ ପରମ ଆଶ୍ରିତ, ରଖି ପ୍ରଭୂପଦେ ଲୟ (୨ଥର) ସରବ ଦୂରିତ ହେବ ବିଖଣ୍ଡିତ (୨ଥର) ନାହିଁ ଭୟ ନାହିଁ ଭୟ, ରେ (୨ ଥର) କାମ ନ......।୩॥

#### କୁଲୁକୁଲୁ ପଦ୍ନା ନଈ ଲୋ ସକନୀ

କୁଲୁକୁଲୁ ପଦ୍ନା ନଈଲୋ ସଜନୀ କୁଲୁକୁଲୁ ପଦ୍ନା ନଈ(॥) ପୁରୁଷୋଭମଙ୍କ ଚରନ ଛୁଇଁ (୨ଥର) ନିରତେ ଯାଉଛେ ବହି (୪ ଥର) କୁଲୁକୁଲୁ.....॥୦॥

ମନ୍ମୋହିନୀ ମାତା କଗତ ପିତା ଦିବା ୟରି ଦଣ୍ଡ କୋଡ଼ିଏ ଲିତା (॥) ଆଦ୍ୟ ଶୁକ୍ରବାର ନବମୀ ତିଥି ବିହଙ୍ଗ ଗାଆନ୍ତି (ମଙ୍ଗଲ ଗୀତି ଲୋ) (୨ଥର) ଏକାଲେ କନ୍କ ହେଲେ ଅନୁକୂଲ (୨ଥର) କଗତ ଉଦ୍ଧାର ପାଇଁ (୪ଥର) କୁଲୁକୁଲୁ.....॥୧॥

ମୁଷ୍ଟେ ନାହିଁ କେଶ ତୁଣ୍ଡରେ ହସ ମନଛୁଆଁ ରୂପ କିବା ରହସ୍ୟ (॥) ଆଲୋକିତ ହେଲା ସୁଡିକା ଘର କନମିଲେ ପ୍ରଭୁ (ପଦ୍ମ ପୟର ଲୋ ) (୨ଥର) ଏ ସୁନ୍ଦର ବେଶ ଦରଶନେ ଆସେ (୨ଥର) ଭକତ ଆସିଲେ ଧାଇଁ (୪ ଥର) କୁଲୁକୁଲୁ......॥୨॥

ମାତା ଦେଲେ ନାମ ଶ୍ରୀ ଅନୁକୂଲ ଆକୂଲେ ପଡ଼ିଲେ ଦେବୁଟି କୂଲ (॥) ଦୀନହୀନ ଜନ ଶୋକ କଷନ କୋଟି ମାନବର (ମନ ଗହନ ଲୋ) (୨ଥର) ମାତାଙ୍କ ଆଦେଶେ ନେଲେ ପରଶ (୨ତର) ପ୍ରେମର ପରଶ ଦେଇ (୪ଥର) କୂଲୁକୁଲୁ.....॥୩॥

#### କା ଆଗେ ଗାଇବି ଗୀତ

କା ଆଗେ ଗାଇବି ଗୀତ, ଏକ୍ତାରା ମୋ ହାତେ ଧରି ମିଳନ ମଧୁରସ୍ୱତି (୨ଥର) ବିରହର ତାନ ତୋଳି କା ଆଗେ ଗାଇବି.....।।।।

ଅୟୁତ କୀବନ ଗାଥା, ବ୍ୟଥା ବେଦନାରେ ଭରା ଆନନ୍ଦର ଶିହରଣ, ସପନର ସୁଧା ଧାରା ତୂମେ ସେ ନିଖିଳ କଣ୍ଟେ, ପ୍ରଣୟର ମିଠା ସୁରେ ସେ ନିଖିଳ ଅନୁଭବ ବିତରିବି ଚରାଚରେ (୨ଥର) କୀବନ ବୀଣାର ତାରେ (୨ଥର) ନବରାଗ ଛନ୍ଦ ତୋଳି ଏକ୍ତାରା ମୋ ହାତେ ଧରି (୨ଥର) କା ଆଗେ ଗାଇବି......॥୧॥

ବିଜନ ତଟିନୀ ତୀରେ, ସଞ୍ଜ ଆକାଶେ ୟହିଁ ପ୍ରାଣର ଉତ୍ତଳ ସୁରେ, ପ୍ରୀତିର ମହ୍ଲାର ଗାଇ ତୁମରି ବିରହ କ୍ୱାଳୀ, ମିଳନ ଆକୂଳ ଗୀତି କାହାକୁ ଛୁଇଁଲା ନାହିଁ ଜାମିନୀତ ଗଲା ବିତି (୨ଥର) କେତେ ଯାତ୍ରୀ ଗଲେ କେହି (୨ଥର)ୟହିଁଲେନି କର୍ଷ ଡ଼େରି ଏକ୍ତାରା ମୋ ହାତେ ଧରି (୨ଥର) କା ଆଗେ ଗାଇବି......॥୨॥

ତୁମେତ କରିଛ ପୂର୍ଣ୍ଣ, ଶୂନ୍ୟ ହୃଦୟ ମୋର ସବୁରି ଅନ୍ତର ବୁକୁ, ହଜିଛି ଜୀବନ ସୁର ତୁମ ଦେବଗାନ ଆଜି, ତୁମକୁ ମୁଁ ଶୁଣାଇବି ଉଲ୍ଲାସ ବିଭୋର ତାନେ, କଣ୍ଡ ଭରି ଗାଇଯିବି (୨ଥର) ତୁମ ଲାଗି ପ୍ରିୟତମ (୨ଥର) ଅଶୁର ପ୍ରଦୀପ ଜାଳି ଏକ୍ତାରା ମୋ ହାତେ ଧରି (୨ଥର) ଜା ଆଗେ ଗାଇବି......।୩॥

#### ଗାଅ ରାଧେ ରାଧେ ରାଧେ

ପାଇଛି ଜୀବନ ବ୍ୟଥ୍ତ ପରାଣ, ତୁମରି ନାମକୁ ସ୍କୁରି ଦୁଃଖ ଶୋକ ସବୁ ମନରୁ ପାଶୋରି ଗାଏ ରାଧା ରାଧା ବୋଲି ॥ ଗାଅ ରାଧେ ରାଧେ ରାଧେ, ନାଚ ଆନନ୍ଦେ ଦିବାହୁ ଡୋଳି ସେଇ ପ୍ରେମେ ହଜି ମଜି, ପ୍ରାଣ ପ୍ରଦୀପ ଦିଅରେ ଜାଳି ॥ ଭୂବନ ମୋହନ ରୂପ ଦରଶନ କରରେ ନୟନ ଭରୀ ଶ୍ରୀରଙ୍ଗା ଚରଣ ଚିରେ କରି ଧ୍ୟାନ (୨ଥର) ତନୁ ମନ ଧନ ଢ଼ାଳି ଗାଅ ରାଧେ ରାଧେ ରାଧେ .....॥।।। ସତନାମ ସ୍କର ସଦ୍ଗୁରୁ ଧର ସତ୍ସଙ୍ଗ ଆଶ୍ରୟ କର ରେ ମନ, ସତ୍ସଙ୍ଗ ଆଶ୍ରୟ କର ଉଷାରେ ନିଶାରେ ମନ୍ତସାଧନ ଯନ୍ତ ସେ ଯନ୍ତୀ ତୋର ରେ ମନ, ଯନ୍ତ ସେ ଯନ୍ତୀ ତୋର ଜୀବନ ରଥରେ ସାରଥି ରୂପରେ ଦିଅରେ ତାହାଙ୍କୁ ବରି ମାନ ଅପମାନ ତାଡନ ପିଡନ (୨ଥର)

ଦିବା ଅବସାନ ହୁଅ ସଚେତନ ସମ୍ମୁଖେ କର୍ମ ଆହ୍ୱାନ ରେ ମନ, ସମ୍ମୁଖେ କର୍ମ ଆହ୍ୱାନ ପରମପିତାଙ୍କ ଅମୃତ ସନ୍ତାନ କର ଆତ୍ମ ସମର୍ପଣ ରେ ମନ, କର ଆତ୍ମ ସମର୍ପଣ ଯାଗରେ ଆର୍ଯ୍ୟ ନବୀନ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଆଚାର୍ଯ୍ୟଙ୍କୁ ଅନୁସରି ଝଞ୍ଜାବେଗେ ଅଗ୍ନିରାଗେ ( ୨ଥର ) ଦ୍ୱନ୍ଦ ବାଧା ବିଘ୍ନ ଦଳି ଗାଅ ରାଧେ ରାଧେ ରାଧେ..... ॥ ୨ ॥

ଗାଅ ରାଧେ ରାଧେ ରାଧେ ..... ॥ ୧ ॥

### ପାଟିଆ ଭାଇରେ ନାଉରିଆ ଭାଇ

ଘାଟିଆ ଭାଇରେ ନାଉରିଆ ଭାଇ ( ୨ଥର) ଆରକୂଳେ ଲଗା ତରୀ ହୋ... ଆରକୂଳେ ଲଗା ତରୀ (॥) ସଂସାର ସାଗରୁ ପାରିକରି ଦେବୁ ( ୨ଥର) ତୋ ହାତେ ଆହୁଲା ମାରି ହୋ (୪ଥର) ଘାଟିଆ ଭାଇରେ.....॥୦॥

ଜୀବନ ନଉକାପରେ ତୁହି ଏକା ମଂଗୁଆଳ ସଂସାର ବାରିଧି ଜଳେ ଭାସେ ଦିଗବାଗ ଦିଶୁନାହିଁ ଆତଙ୍କରେ ବୁଡ଼େ ମୁହିଁ ଦୁନିଆ ଅନ୍ଧାର ପରି ଦିଶେ (॥) ଆସୁଛି ଝଡ଼ ବତାସ... ଆସୁଛି ଝଡ଼ ବତାସ ଦୁଃଖଭରା ସହତାସ (୨ଥର) ସଳଖରେ ମଙ୍ଗ ଥିବୁ ଧରି ହୋ...(୪ଥର) ଘାଟିଆ ଭାଇରେ......॥୧॥

କାତ ମୋର ପାଉନାହିଁ ଅନୁକୂଳ ନାଆ ନେଇ ଭସାଇ ଦିଅରେ ଆରପାରେ ପାଲ ମୁଁ ଦେଇଛି ମେଲି ତୋ ଠାରେ ଭରସା କଲି ନିରାଶେ ମୁଁ ଆଶା ଦିଅ ବାରେ (॥) ଦଦରା ନାବରେ ମୋର... ଦଦରା ନାବରେ ମୋର ତୁହି ଏକା କର୍ଷଧାର (୨ଥର) ତୁମରି ନାମରେ ହେବି ପାରି ହୋ...(୪ଥର) ଘାଟିଆ ଭାଇରେ.....॥ ।॥

### କନମ ଦେଲ ଯଦି କରୁଣା କର ପ୍ରଭୁ

କନମ ଦେଲ ଯଦି କରୁଣା କର ପ୍ରଭୁ (୨ଥର) ସେବିବି ମୁଁ ତୁମ ଚରଣ ମହାପ୍ରଭୁ ସେବିବି ମୁଁ ତୁମ ଚରଣ କନମ ଦେଲ... ॥୦॥

ଆସୁ ଯେତେ ବାଧା ସହିଯିବି ସବୁ ନହାଡିବି ତୁମ ଚରଣ (॥) ଚରଣ ଧୂଳି ଯାହା ଊଲିବା ପଥରେ ତାହା ମଣିଷ କୂଳ କରେ ତାରଣ ସଂସାରର ଅନ୍ଧକାରେ ଆଲୋକ ସେ ବିତରେ (୨ଥର) ପ୍ରବୃତ୍ତି ଠାରୁ କରେ ବାରଣ ଜନମ ଦେଲ...॥୧॥

ତୁମେ ପରମ ପିତା ଗୁରୁ ଇଷ ଦେବତା ସର୍ବ ମଙ୍ଗଳ ତୁମ ନାମ ଆହେ ପରମ ସଭା ଦେଲ ଏହି ବାରତା ସଂସାରୁ ଅପସରୁ ମରଣ ଜୀବନ ନଭକା ମୋର ଚଳାଅ ପ୍ରାଣେଶ୍ୱର (୨ଥର) ମାଗୁଣି କରେ ଅକିଞ୍ଚନ ଜନମ ଦେଲ... ॥୨॥

# କୟ କଗତ ଜନନୀ, ଜୟ ବିଶ୍ୱ କଲ୍ୟାଣୀ

ମା...... ମା..... ମା.... ଗୋ ଜୟ ଜଗତ୍ ଜନନୀ, ଜୟ ବିଶ୍ୱ କଲ୍ୟାଣୀ ଘେନ ପ୍ରଣାମ ନିବେଦନ, ମା .... ଘେନ ପ୍ରଣାମ ନିବେଦନ ଭକ୍ତି ନିେବେଦ୍ୟ ଢ଼ାଳି, ପୂଷ ଅଞ୍ଜଳି ଭରି ( ୨ଥର ) ବନ୍ଦନା କରୁ ଶ୍ରୀ ଚରଣ... ଘେନ ପ୍ରଣାମ ଜୟ ଜଗତ...... ॥୦॥

> ସଦାସ୍ମିତ ଗନ୍ତୀର ଅଥଳ ପାରାବାର (୨ଥର) କରୁଣାମୟୀ ମହିୟସୀ ମହାଲକ୍ଷ୍ମୀ ସ୍ୱରୂପା (୨ଥର) କର ସନ୍ତାନେ କୃପା ତାମସ କାଳେ ମା ବିନାଶି... ମା... ଜୟ ଜଗତ....... ॥୧॥

ହେ ପରମା ପ୍ରକୃତି, ପାବନି ଅଭିଭୂତି (୨ଥର) ମାତୃବିଭବ ପ୍ରସାୟିନୀ ସେବାରେ ଜଗଧାତ୍ରୀ (୨ଥର) ପାଳନେ ମହାପାତ୍ରୀ ଭକତ ଶକ୍ତି ପ୍ରଦାୟିନୀ... ମା... ଜୟ ଜଗତ.......॥୨॥

ଚିର ସୁର ବନ୍ଦିତା, ନିତ୍ୟ ରକ୍ଷି ଅଶ୍ୱିତା (୨ଥର) ଅମର ଇନ୍ଦ୍ର ବିରକା ସ୍ୱଞ୍ଜି ସୁଧା ରାଗିନୀ (୨ଥର) ପୂଣ୍ୟଶ୍ଳୋକା କନନୀ ରଙ୍ଗୀ ଚରଣେ ସରକା... ମା... କୟ କଗତ...... ॥୩॥

#### କୟତୁ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ବଡଦା

କୟତୁ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ବଡଦା, ଆମରି ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ବଡଦା ପରମ କଲ୍ୟାଣ କଗତ ବନ୍ଦନ ଆମରି ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ବଡଦା । କୟତୁ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ବଡଦା..... ॥୦॥

ଜୀବନ ଦରଦୀ ଅନ୍ତର୍ଯ୍ୟାମୀ ସେ ନିଖିଳ ଆରତ ତ୍ରାଣ ସତ୍ୟ ଶିବ ସୁର ଶାନ୍ତ ସୁନ୍ଦର ପରମ ପିତାଙ୍କ ଦାନ ସୁଖ ଦୁଃଖରେ ସବୂରି ଭରଷା ଆମରି ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ବଡଦା ଜୟତୁ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ବଡଦା...... ॥१॥

ଇଷ୍ପହିଁ ତାଙ୍କର ଧ୍ୟାନ ଜ୍ଞାନ ପ୍ରାଣ, ଇଷ୍ଟ ହିଁ ତାଙ୍କ ଜୀବନ ଶଙ୍କଟ ମୋଚନ ବିପଦ ଭଞ୍ଜନ ଚିର କରୁଣା ନିଧାନ ଲକ୍ଷ ଜୀବନ ତାଙ୍କ ଦିଶାରୀ ଅାମରି ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ବଡଦା ଜୟତୁ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ବଡଦା...... ॥୨॥

ପୁରୁଷୋତ୍ତମ ଆଶୀଷ ଧନ୍ୟ ତାଙ୍କରି ମୂର୍ତ୍ତ ବିଧାନ ସାଧକ ବରେଣ୍ୟ ତାପସ ପ୍ରଣମ୍ୟ ନିରାଶି ନିର୍ମମ ପ୍ରାଣ ଅଜ୍ଞାନ ତିମିରେ ପ୍ରଜ୍ଞାର ଜ୍ୟୋତି ସଦ୍ଗୁରୁ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ବଡଦା ଜୟତୁ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ବଡଦା.....।୩॥

### କାଣିନାହିଁ ପ୍ରଭୁ ତୁମକୁ ଜୀବନେ

ଜାଣିନାହିଁ ପ୍ରଭୁ ତୁମକୁ ଜୀବନେ ପାଇଛି କି ନାହିଁ ଭଲ କାଣିଛି ଏତିକି ତୁମ ବିନା ମୋର (୨ଥର) ଜୀବନର ନାହିଁ ମୂଲ (୨ଥର) ଜାଣିନାହିଁ ... ॥୦॥

ହଳି ନିଜେ ମନେ ଏକାକି ବି ଜନେ ଦେଖେ ଏ ଜୀବନ ଶୂନ୍ୟ ପଲକେ ଦେଖୁଛି ତୁମରି ପରଶେ ରହିଛି ସବୁତ ପୂର୍ତ୍ତ କୌତି ଜାଣିବି ଏଇ ଦୁନିଆରେ (୨ଥର) କିଏ ମନ୍ଦ ଜିଏ ଭଲ (୨ଥର) ଜାଣିନାହିଁ ... ॥୧॥

ବୃଝିଛି ଯେତିକି ତୂମକୁ ସେତିକି ଝରିଛି ଅନ୍ତରୁ ଲୁହ ମରଣ ଯାତନା ସହିଛି ସେତିକି ତୂଟିଛି ଜୀବନେ ମୋହ ଜାଣିନାହିଁ ପ୍ରଭୁ କେଉଁ ଭାବେ ଅବା (୨ଥର) ତୁମକୁ ପାଇବି ଭଲ (୨ଥର) ଜାଣିନାହିଁ ... ॥୨॥

### ଜୀବନ ମୋର ଦଦରା ନାଆ

ଜୀବନ ମୋର ଦଦରା ନାଆ ନାଉରୀ ତୂମେ ଗୁରୁ... ଭରସା ତୂମେ ପାରି ହେବାକୁ ସଂସାର ପାରାବାରୁ (୨ଥର) ଜୀବନ ମୋର.....॥୦॥

ଅଜ୍ଞାନତାର ଅନ୍ଧକାରରୁ (ପଥ ପାଏନା ଖୋଜି) (୨ଥର) ଜ୍ଞାନ ମଶାଲ ଜଳାଇ ଦେଇ (ଡ଼ାକେ କିଏସେ ଆଜି) (୨ଥର) ତୁମେ ମୋ ପିତା ତୁମେ ମୋ ମାତା (୨ଥର) ତୁମେ ମୋ ପରମଗୁରୁ (୨ଥର) ଜୀବନ ମୋର......॥୧॥

ଦୂର୍ବଳ ଅତି ନାହିଁ ଶକତି (ବାହି ନେବାକୁ ନାଆ) (୨ଥର) ପ୍ରବଳ ଝଡ଼ ବତାସେ ମୋର (କିଏସେ ହେବ ସାହା) (୨ଥର) ତୂମେ ମୋ ବନ୍ଧୁ ତୂମେ ମୋ ସଖା (୨ଥର) ତୂମେ ମୋ ପରମଗୁରୁ (୨ଥର) ଜୀବନ ମୋର......॥୨॥

ତୁମ ଚରଣ ତଳେ ଶରଣ (ସତ୍ୟ ପଥରେ ନିଅ) (୨ଥର) ଗତି ମୁକତି ପରମାର୍ଥର (ପଥ ଦେଖାଇ ଦିଅ) (୨ଥର) ତୁମେ ଦେବତା ପରମପିତା (୨ଥର) ତୁମେ ମୋ ପରମଗୁରୁ (୨ଥର) ଜୀବନ ମୋର......॥୩॥

#### କସେ ମୋ ମନ ଜନ୍ଦରେ

କପ୍ତ ମୋ ମନ କସରେ ପୁରେ ମୁଁ ନିତି ଅଷରେ ତୁମ ନାମ ଜାନି ଆଖି ଲୁହ କାଳି ଡ଼ାକୁଛି ମୁଁ ନିଚନ୍ତରେ କପ୍ତ ମୋ... ॥୬॥

ବୟାମୟ ତୁମେ ବୟାକର ପ୍ରଭୁ ଏହି ବୀନକୁ ତୁମର ଏ ଜବ ସାଗରୁ ପାରିକର ମୋତେ ଦେଇ କରୁଣାର ଧାର ତୁଟଲ ମନରୁ ସକଳ କାମନା (୨ଥର) ପ୍ରୀତି ଜରା ଏ ହୃଦୟେ ଜପେ ମୋ... ॥୧॥

> ତୂମ ଇଙ୍ଗିତରେ ସାରା ଏ କଗତ ଚାଲୁଅଛି ଦିନରାତି ଜବାର କରିବା ପାଇଁ ଆସିଅଛ ହେ ମୋ ଜୀବନ ସାଥ ତୂମ ଛବି ନିତି ଆଙ୍କି ହୋଇଉଠୁ ଏ ମୋ ମନ ମାନସରେ ଜପେ ମୋ... ॥ ୨ ॥

### Chararacat-172

#### ଳୀବନ ସାଗରେ ନାଆ ବାହୁ ବାହୁ

ଜୀବନ ସାଗରେ ନାଆ ବାହୁ ବାହୁ ହେଲି ସେବେ ଡିଗହରା ଅକୁକରେ ତେଲ କୁକର ସହାନ (୨ଅର) ତୁମେ ମୋର ଧୁକତାରା ଜୀବନ ସାଗରେ... ॥୦॥

ପ୍ରେମମୟ ତୁମେ ବୟାଲ୍ ଠାକୁର, ପ୍ରେମରେ ବେଲଛ ଧରା ତୁମ ସତ୍ନାମେ ଆଶୀଷର ଝର, ପ୍ରୀତି ମହାକିନୀ ଧାରା କୋଟି ଜନମର କକୁଷ କାଳିମୀ (୨ଥର) ସବୁ ଧୋଇ ଦେଇ ପରା ଜୀବନ ସାଗରେ ... ॥୧॥

ସକନ ସାଳନ ଇଷ୍ଟଭୃତି ତୁମ, ଜୀବନ ନିର୍ତିର ପାଇଁ ପାପ ତାପ ତ୍ୱାଳା ସନ୍ତଣାରେ ପଡି, କେବେ ବି ଭୁଲିବି ନାହିଁ ସଂସାର ସାଗରେ ଅମା ଅନ୍ଧାରେ ତୁମେ ଜଗଳ୍ୟୋତି ପରା ଜୀବନ ସାଗରେ... ॥ ୨ ॥

ଅଲୋତା ସଂସାରେ ଅସାର ଜୀବନ, ଯେତେବେଳେ ଯିବ ଝରି ସେହି ସତ ନାମ ପଥର ସଙ୍ଖାଳି, ତୁମେ ରାମ କୃଷ୍ଣ ହରି, ଜୀବନ ଦୀପ ମୋ ଲିଭି ଗଲା ବେଳେ ତୁମେ ପାଖେ ଥିବ ପରା ଜୀବନ ସାଗରେ... ।।୩।।

### କଗତ କୀବନ ନାଥ ଘେନ ମୋ କୁହାର

କଗତ କୀବନ ନାଥ ଘେନ ମୋ କୁହାର ଶ୍ରୀପଦ ପଙ୍କଜେ କୋଟି କୋଟି ନମୟାର ଜଗତ ଜୀବନ... ॥୦॥

ମନମୋହିନୀ ଜନମ ଦେଲେ ମନମୋହନ ତୁମରି ଆଭା ଜ୍ୟୋତିପ୍ରକାଶେ ରବିନିଉନ ତୁମ ଭଜନ ଅମୃତ ସ୍ତମ, ପାଗଳ କରିଛି ସଂସାର ଜଗତ ଜୀବନ ... ॥ ୧ ॥

ଦୁଃଖ ଯାତନା ଆସୁ ଜୀବନେ ଶୋଚନା ନାହିଁ ଦେଖିଲା ଦିନୁ ସାମ୍ୟ ମୁରତି ଭୁଲି ହୁଏ ନାହିଁ ଦର ହାସିତ ପଙ୍କଢ ମୁଖ ଦେଖିଲେ ଲକିତ ଅଧର ଜଗତ ଜୀବନ ... ॥୨॥

ଅଳିକ ସଂସାର ଭେଳିବ ପାଶୋରା ପଥନୁସାରୀ ଭରସା ସତତ ଥାଉ ତୁମ ପଦେ ତବ ପରିୟରୀ ଶ୍ରବଣ କୁହୁରେ ତୁମରି ମହିମା ଝଙ୍କୃତ ହୁଏ ବାରୟାର ଜଗତ ଜୀବନ ... ॥୩॥

### BhajaBeat -136

#### ତୁମେ ଅନନ୍ତ ତୁମେ ଅସୀମ

ତୁମେ ଅନନ୍ତ ତୁମେ ଅସୀମ (ପ୍ରଭୁ) ତୁମକୁ ଧରିବା ଲାଗି ଶକତି କାହିଁ ମମ ତୁମେ ଅନନ୍ତ... ॥୦॥ କରୁଣା କରିବାରେ ଦେଇଛ ଧରା ମୋରେ ସେ ଲାଗି ତୁମ ପୂଳା ଲଭିଛି ପ୍ରିୟତମ (॥) ତୁମେ ଅନନ୍ତ ... ॥୧॥

> ବିଶ୍ୱ ତବ ଧୂଳି ଖେଳା ମୋତେ ସେ ଅବୋଧ ଲୀଳା ତବ ଜ୍ଞାନାଞ୍ଜନ ବିନା ବୁଝିବାରେ କେ ବା କ୍ଷମ (॥) ତୁମେ ଅନନ୍ତ ... ॥ ୨ ॥

ତୂମେ କଗଦୀଶ୍ୱର ମୁଁ ଦୀନ ସେବକ ଛାର କେଉଁ ଗୁଣ ଅଧିକାରେ ଯିବି ତୂମ ସନ୍ନିଧାନ (॥) ବହେ ଜୀବନ ସରଣୀ ଭାସି ଯାଏ ମୋ ତରଣୀ (॥) ବାହିବ କେଉଁ ଉଜାଣି କୁହ ହେ ତୁମ ସମ ( ୨ଥର) ତୂମେ ଅନନ୍ତ ... ॥୩॥

### ତୁମେ ପରମ ଦରଦୀ ପ୍ରେମମୟ

ତୁମେ ପରମ ଦରଦୀ ପ୍ରେମମୟ (୨ଥର) ଛାର ମଣିଷ ମୁଁ, ସେ ପ୍ରେମସାଗର (୨ଥର) କଳିବି କିପରି କୃହ... ତୁମେ ପରମ.....।।।।।

ସୁନ୍ଦର ଏ ବିଶ୍ୱ, ସୁନ୍ଦର ଏ ଧରା ସୁନ୍ଦର ଗିରି କାନନ ଏଇ ଦୁନିଆରେ ସବୁତ ସୁନ୍ଦର ଯେଣୁ ତୁମ ଅବଦାନ ଅପରୂପ ତୁମେ ଅଛିକେ ସୁନ୍ଦର (୨ଥର) ତୁମଠାରୁ କିଏ କୁହ... ତୁମେ ପରମ ......॥୧॥

ଯୁଗେ ଯୁଗେ ତୂମେ ସହିଛ କଷଣ ମାନବ ଉଦ୍ଧାର ପାଇଁ ଅକୂଳରେ କୂଳ ଦେବାକୁ ଆସିଛ ଏବେ ଅନୁକୂଳ ହୋଇ ତୁମ ନୟନରୁ ଝରେ ଯେ ଲୋତକ ( ୨ଥର) ପୋଛି ପାରିବିକି କୁହ... ତୁମେ ପରମ.......॥ ୨॥

ଅନତ ସାଗର ଅନତ ଆକାଶ ଅନତ ମନ ବାସନା ଅନତ ଜନମ ବିତାଇ ତଥାପି ଭୂଲେ ତୁମ ଉପାସନା ଅନତ କରୁଣା କଣିକା କଣାଏ (୨ଥର) ପାଇବିକି ନାହିଁ କୁହ... ତୁମେ ପରମ.....।୩॥

#### ତୁମେ ସ୍ରଷ୍ଟା ତୁମ ସୃଷ୍ଟି

ତୂମେ ସ୍ରଷ୍ଟା ତୁମ ସୃଷ୍ଟି କି ସୁନ୍ଦର ବିଭବରେ ତୁମେ ସତ୍ୟ ତୁମେ ଶାବ ଦୟା, କ୍ଷମା, କରୁଣାରେ (॥) ତୁମେ ସୁଷ୍ଟା.....॥ । । ।

ତୂମେ ଝରା ଶେଫାଳିର ସୌରଭ ତୂମେ ନିଃସ୍ୱ ପ୍ରାଶର ବଇଭବ(॥) ଅନାଥର ଅଗତିର ଆପଣାର ଭରସାରେ (୨ଥର) ତୁମେ ସ୍ରଷ୍ଟା.....॥୧॥

ତୁମେ ସକଳ ସତ୍ତାର ଆପୂରଣୀ ତୁମେ ଅନାହତ ନାଦ ସପ୍ତଧ୍ୱନୀ (॥) ଭାବାତୀତ ଗୁଣାତୀତ ପରଂବ୍ରହ୍ନ ଚରାଚରେ ( ୨ଥର) ତୁମେ ସ୍ରଷ୍ଟା......॥ ୨॥

ଆଳି ପାପି ହୁଏ ସାଧୁ ଭକ୍ତ ଶ୍ରେଷ କେତେ କାମୁକ, ମଦ୍ୟପ ଇଷ୍ଟନିଷ (॥) ହେଲେ ଦକ୍ଷ ହେଲେ ମୋକ୍ଷ, ପାଦଧୂଳି ପରଶରେ (୨ଥର) ତୁମେ ସ୍ରଷ୍ଟା.....।୩॥

### ତୁମେ ଈଶ୍ୱର ସାରା ବିଶ୍ୱର

ତୁମେ ଈଶ୍ୱର ସାରା ବିଶ୍ୱର ହେ ଗୁରୁ ମୋର ଦୟାଲ ଠାକୁର (॥) ତୁମେ ଈଶ୍ୱର..... ॥୦॥

ତୁମେ ହିଁ ସ୍ବର ତୁମେ ହିଁ ତାଳ ଆ...ଆ.... ( ୨ଥର) ତୁମେ ହିଁ ନାଦ ତୁମେ ହିଁ ଲୟ (॥) ତୁମେ ଜୀବନ ବୀଣାର ଝଙ୍କାର ( ୨ଥର) ତୁମେ ଆଧାର ସକଳ ସୃଷ୍ଟିର ତୁମେ ଈଶ୍ୱର...... ॥ ୧ ॥

ରାମକୃଷ ତୁମେ ଯୀଶୁ ବୂଦ୍ଧ ତୁମେ ଆ... ଆ... (୨ଥର) କେତେ ଯୁଗେ ଜନମିଛ କେତେ ନାମେ (॥) ଦୁଷ୍ଟଳନ ତା'ର ସନୁ ଜନପାଳ (୨ଥର) ସବୁ ପ୍ରତିକୂଳେ ତୁମେ ଅନୁକୂଳ ତୁମେ ଈଶ୍ୱର...... ॥୨॥ Blog Beat 144

#### ତୁମକୁ ଜୀବନେ ଲଭିଛି ମରମେ

ତୁମକୁ ଜୀବନେ ଲଭିଛି ମରମେ (୨ଥର) ତୁମେ ପ୍ରେମମୟ ତୁମେ ଦୟାମୟ (୨ଥର) ପରମ ଦରଦୀ ତୁମେ ତୁମକୁ ଜୀବନେ ...... ॥୦॥

ତୁମେ ଶକ୍ତିଦାତା ତୁମେ ମୁକ୍ତିଦାତା ତୁମେ ପରମ ପିତା ବିଶ୍ୱର ତୁମେ ପ୍ରାଣର ତୃପ୍ତି ତୁମେ ନୟନର କ୍ୟୋତି ସର୍ବ ଶକ୍ତିମାନ ଈଶ୍ୱର (॥) ଶୀତଳ ସମୀରେ ସାଗର ଅୟରେ ( ୨ଥର) ଜଡାଇ ଧରିଛ ତୁମେ ତୁମକୁ ଜୀବନେ .....॥ ॥ ॥

ତୁମେ ମନ୍ତଦାତା ତୁମେ ଜ୍ଞାନଦାତା ତୁମେ ସବୁରିତ ଭଗବାନ ତୁମେ ଅଗତିର ଗତି ଧର୍ମର ସାରଥି ମୋତେ କରିଦେଲ ଭାଗ୍ୟବାନ (॥) କରୁଣା ସାଗର ଶରଣ ଦେଇଛ (୨) ବିରାଜିଛ ନିଜ ନାମେ ତୁମକୁ ଜୀବନେ ......॥୨॥

### ତବ ସୁନ୍ଦର ସେହି ରୂପ

ତବ ସୁନ୍ଦର ସେହି ରୂପ, ମମ ହୃଦୟେ ଅବିରାମ (୨ଥର) ସଦା ବିରାଜିଛି, ପ୍ରଶମ (୨ଥର) ପାରେନା ଦେଖି ତାରେ, ଅନ୍ଧ ମୁଁ ପ୍ରିୟତମ... ତବ ସୁନ୍ଦର ସେହି ରୂପ, ସଦା ବିରାଜେ ଅବିରାମ...... ॥୦॥

ନୟନେ ଦେଖେ, ଯାହା ମୁଁ ସବୁ ତୁମରି ରୂପର ଛାୟା ପ୍ରକାଶଇ ଯାହା ଚରାଚରେ ପ୍ରଭୂ ସବୁତ ତୁମରି କାୟା (॥) ପାରେନା ବୁଝି, ବିଷୟାରେ ମଜି ( ୨ଥର ) ମାୟାରେ ହୋଇ ଭ୍ରମ, ଅନ୍ଧ ମୁଁ ପ୍ରିୟତମ... ତବ ସୁନ୍ଦର ସେହି ରୂପ, ସଦା ବିରାଜେ ଅବିରାମ ......॥ ୧॥

ତବ ପ୍ରେମ ସୁଧା, ହୋଇ ରସଧାରା ବହଇ ଏ ରସାସାରା ପ୍ରେମ ପାରାବାରେ, ସଦା ହରଷରେ ଭାସଡି ଗ୍ରହତାରା ବିଷାଦେ ମୁଁହି, ହୁଏ ଦିଗହରା ( ୨ଥର ) ଭୂଲି ତୁମରି ସେ ନାମ, ଅନ୍ଧ ମୁଁ ପ୍ରିୟତମ... ତବ ସୁନ୍ଦର ସେହି ରୂପ, ସଦା ବିରାଜେ ଅବିରାମ...... ॥ ୨॥

ଜୀବ ଜଗତରେ ଯାହା ଅଛି ସବୁ ବୁଝିଛି ଏ ମିଛମାୟା ଜୀବନେ ଯାହା ପାଇଅଛି ପ୍ରଭୂ ସବୁତ ତୁମରି ଦୟା ଗାଇ ତୁମ ନାମ, ଯାଉ ଏ ଜୀବନ ଏତିକି ଅଳି ମମ...ଅନ୍ଧ ମୁଁ ପ୍ରିୟତମ... ତବ ସୁନ୍ଦର ସେହି ରୂପ, ସଦା ବିରାଜେ ଅବିରାମ......।୩।

#### ତୁମେ ଯେ କଗତମୟ

ତ୍ମେ ସେ କଗତମୟ...ପୁଭୁ ତୁମେ ଯେ ଜଗତମୟ ବିଶ୍ୱ ଚରାଚର ସର୍ଜନା ତୁମର (୨ଥର) ଅନୁପମ ଲୀଳାମୟ ତୁମେ ସେ..... ॥୦॥ ରୂପେ ରୂପେ ତବ ଅରୂପ ଚେତନା ପ୍ରେମ ଅପଘନ ମାନସୀ ତନିମା (॥) ରୂପ ବିନା କାହୁଁ ଲଭିବୁ ତୁମରି (୨ଥର) ଦୁଲୁଭ ଜ୍ୟୋତିର୍ମିୟ .. G999 ଫୁଲର ସୁବାସେ ପକ୍ଷୀର କୁଜନେ କଲ୍ଲୋଳିନୀ କଳା ମଞ୍ଜୁଳ ସ୍ୱନେ (॥) ତ୍ୟରି ପ୍ରତିଟି ରାଜେ ନିରନ୍ତର (୨ଥର) ଗାଏ ସୃଷ୍ଟି ତବ ଜୟ ତୁମେ ସେ..... ॥ ୨ ॥

ଅନ୍ତରର ଯେତେ ବିପାକ ବେଦନା ମନତଳେ କେତେ ଅଶୁଭ କାମନା (॥) ତବ ପୁଣ୍ୟନାମ ସ୍କରଣେ ମନନେ (୨ଥର) ଏ ଜୀବନ ବରାଭୟ ତୁମେ ସେ.....॥୩॥ ତୁମକୁ ଦେଖିଛି ମୁହିଁ ସାଗରର ଗରକନେ

sharp

ତୁମକୁ ଦେଖିଛି ମୁହିଁ ସାଗରର ଗରକନେ ତୁମକୁ ପାଇଛି ମୁହିଁ ଦୁଃଖ ଆଉ ଦହନେ (॥) କୋକିଳର କୁଳନେ, ଭୁମରର ଗୁଞାନେ ତୁମକୁ ଦେଖିଛି.....॥୦॥

ବିଶ୍ୱ ଜୀବନ ତୂମେ ବିଶ୍ୱ ଗୋିରବ ଜରା ମରଣର ତୁମେ ଶାନ୍ତିର ବିଭବ (॥) ପିତନର ଶିହରଣେ ପୁଲକର କମ୍ପନେ ତୁମକୁ ଦେଖିଛି.....॥ ॥ ॥

ମେଘଭରା ଆକାଶରେ ପ୍ରଶୟର କୋଛନା କୁଶଳ ମରୁ ହୃଦୟେ ତୃଷାର ଝରଣା (॥) ବରଷାର ସ୍ୱନେ ସ୍ୱନେ ଜୀବନର ସ୍ମନ୍ଦନେ ତୁମକୁ ଦେଖିଛି......॥୨॥

#### ତୁମକୁ ଧରି ମୁଁ ଯେବେଠୁ ଊଲିଛି

ତୁମକୁ ଧରି ମୁଁ ଯେବେଠି ୟଲିଛି, ପ୍ରଭୁ... (୨ଥର) କେତେ ଅପବାଦ ମୋ ପାଇଁ ସହିଛ ନିରାଶା ବୁକୁରେ ଆଶାର ଭରସା (୨ଥର) ଦେଇ ପ୍ରଭୁ ତୋଳିନେଇଛ... ତୁମକୁ ଧରି ......॥୦॥

> ମୋ କଣ୍ଟକ ପଥେ, ପୁଷ୍ପମୟ ତୁମେ ଅନ୍ଧକାରେ ଧୁବତାରା ତୁମବିନା ମୋର ଜୀବନଟା ସାରା ହୋଇଥାନ୍ତା ବିଷ ଭରା ଲହୁ ଲୁହ ଢାଳି ଆପଣାର କରି ପ୍ରଭୁ ମୋତେ ବୋହି ନେଇଛ... ତୁମକୁ ଧରି......॥ ୧॥

ଆଶାର ସାଗରେ ଶୀତଳ ନିର୍ଝର ଚେତନାରେ ଚିଦାନନ୍ଦ ସ୍ୱତିର ଉପାସ୍ୟ ପ୍ରୀତି ପୂଜା ତୁମେ ମିଳନର ମହାଛନ୍ଦ ସକଳ କଳଙ୍କ ଧୋଇ ଦେଲ ମୋର ଧନ୍ୟ ପୂଶ୍ୟ ମୋତେ କରିଛ ତୁମକୁ ଧରି......॥ ୨ ॥

# ତୁମ ନାମେ କି ରସ ଭରିଛ ହେ

ତୁମ ନାମେ କି ରସ ଭରିଛ ହେ (୨ଥର) ସେହି ରସେ ରସି ଗୋପନରେ ବସି (୨ଥର) ବିଶ୍ୱ ଜତାଇଛ ହେ ତୁମ ନାମେ... ॥୦॥

ସେବେ ସେବେ ହୁଏ ଧରମର ହାନି ଅଜ୍ଞାନୀ ମାନବ ହୁଏ ଅଭିମାନୀ (॥) ନର ଦେହ ଧରି ଯୁଗେ ଯୁଗେ ଆସେ ( ୨ଥର) ନାମେ ଭୁଲାଇଛ ହେ ତୁମ ନାମେ... ॥୧॥

ଅନ୍ଧ ନୁହେଁ ସେ ନାହିଁ ଯାର ଆଖି ଅନ୍ଧ ତୁମ ରୂପ ନ ପାରଇ ଦେଖି (॥) ଜ୍ୟୋତିର୍ମାନ ତୁମେ ସବୁରି ପରାଣେ ( ୨ ଥର) ଜ୍ୟୋତି ରୂପେ ଅଛ ହେ ତୁମ ନାମେ ... ॥ ୨ ॥

ତୂମ ଲୀଳାଖେଳା ଗୋଚର କାହାକୁ ତୂମେ ଆସି ନିଜେ ବୁଝାଅ ତୂମକୁ (॥) ବୟାମୟ ତୁମ ବୟାର ପତାକା (୨ଥର) ତୂମେ ଉଡାଇଛ ହେ ତୁମ ନାମେ ... ॥୩॥

### Rupak-152

#### ଦୟାମୟ ପ୍ରଭୁମୋର

ଦୟାମୟ ପ୍ରଭୁମୋର କରୁଣା ସାଗର (୨ଥର) ଅନନ୍ତ କରୁଣା ଯାର (୨ଥର) ନାହିଁ ପଟାନ୍ତର... ଦୟାମୟ......॥୦॥

ଅଗତିର ଗତି ଦୀନ ପତିତପାବନ ଅନାଥର ନାଥ ସେ ଯେ କଗତ ଜୀବନ (॥) ମୋ ହୃଦୟ ନିଧି ସେ ଯେ (୨ଥର) ପରମ ଈଶ୍ୱର... ଦୟାମୟ.....॥९॥

ପ୍ରେମର ମନ୍ଦିରେ ଖୋକେ ତା ପୂଜା ଆରତୀ ପ୍ରେମର ପିୟାସୀ ସେ ଯେ ସୁନ୍ଦର ମୁରତି (॥) ଜନମ ଜନମ ଧରି (୨ଥର) ଖୋଜୁଛି ପୟର... ଦୟାମୟ...... ॥୨॥

ଏ ଜୀବନେ ମାଗୁଛି ମୁଁ ଶ୍ରୀ ଚରଣ ଧୂଳି ଜନମ ଜନମ ଧରି ହେଉଥିବି ବୋଳି (॥) ତୁମ ସେବା ହେଉ ପ୍ରଭୂ (୨ଥର) ସୟଳ ମୋହର... ଦୟାମୟ......॥୩॥

### ଦିଗହଳା ପଥହରା

ଦିଗହଳା ପଥହରା ପଥକର ଧ୍ରୁବତାରା (୨ଥର) ସତ୍ୟ ସନାତନ ହେ ଚିର ନୂତ୍ନ (୨ଥର) ଝରାଅ ଅମୀୟ ଧାରା... ଦିଗହଳା.....॥୦॥

> ଜୀବନେ ତୁମକୁ ଦେଇନି ତ କିଛି ପାଇଛି ସକଳ ଆଜି ଦଗ୍ଧ ପରାଣ ସ୍ନିଗ୍ଧ କରିଛ ନାମର ଝଙ୍କାର ସୁଝି ବିଶ୍ୱ ଜୀବନ ହେ ପ୍ରିୟପରମ (୨ଥର) ପ୍ରଣୟର ଫଲ୍ଗୁ ଧାରା (୨ଥର) ଦିଗହଳା......॥୧॥

ଯତ୍ତନ ଯାଜନ ଇଷ୍ଟଭରଣ, ତ୍ରୀବେଶୀର ଧାରେ ଧାରେ ଜୀବନ ବୃଦ୍ଧିର ପୁଲୁହନ ହସେ, ଶାନ୍ତିର ଡ଼େଭ ଖେଳେ ମୁକ୍ତି କପୋତ ଗାଏ ଦୂରେ ତେଜି (୨ଥର) ଦୈନ୍ୟ ଜୀବନ ସାରା (୨ଥର) ଦିଗହଳା......।୨॥

ତବ ନାମ ସୁରେ ଏ ମରୁ ପରାଣ, ମୁଞ୍ଜରୀ ଉଠେ ଆକି ଛିନ୍ନ ବୀଣାରେ ମହାର ଶୁଭେ, ମଳୟ ପରଶ ବାକି ତବ ନାମ ଗାନେ ଲିଭିଯାଏ ପ୍ରଭୁ (୨ଥର) ଶତ ବେଦନାର ଧାରା (୨ଥର) ଦିଗହଳା.....।୩॥

#### ଦୁଆର ଖୋଲି ଦେଖରେ

ଦୁଆର ଖୋଲି ଦେଖରେ ତାର ଭୂବନ ଭୂଲା ରୂପରେ (॥) ସୁଗ ସୁଗର କେତେ ନିକର ( ୨ ଥର) ଦରଦ ଭରା ଡ଼ାକରେ ଦୁଆର.....॥ ।। ।।

ବିଶ୍ୱେ ଅଭିନବ ଅପୂର୍ବ ସୁନ୍ଦର ବିଲୋକନ୍ତି ସୁର, ନର ଶ୍ରୀମନ୍ଦିର ସ୍ମନ୍ଦିତ ହେବରେ ଭାବାଦର୍ଶ ତାର ଧ୍ୟନିତ ହେବରେ କଥାର ନିର୍ଝର ମନ୍ଦ୍ରିତ ହେବ ମହା ସଂଗୀତ ( ୨ଥର) ବିଶ୍ୱ ଧର୍ମ ମହାତୀର୍ଥରେ ଦୁଆର......॥ ୧॥

ଆର୍ତ୍ତ ଦୁଃଖୀ କେତେ ପାଇବେ ସାନ୍ତ୍ୱନା ଅଶୀନ୍ତ ପ୍ରାଣରେ ଶୀନ୍ତିର ମୁର୍ଚ୍ଛନା ଭକତ ସାଧକ ଜୀବନେ ଲଭିବ ସମ୍ପୁହାନ ଭାବ ଅଈଶୀ ଚେତନା ଧନୀ ମାନୀ ଗୁଣି ସାଧୁ ସନ୍ତ ମୁନି (୨ଥର) ସାଧକର ସମାବେଶରେ ଦୁଆର......॥ ୨॥

ଜୀବନ୍ତ ଜାଗ୍ରତ ଲକ୍ଷ୍ମୀ ନାରାୟଣ ପ୍ରାଣ ଭରି ଜୀବ କରରେ ଦର୍ଶନ ନିତ୍ୟ ବୈକୁଣ୍ଠ ନବ ବୃନ୍ଦାବନ ଭକ୍ତ ଭଗବାନ ଅପୂର୍ବ ମିଳନ ସର୍ବ ଦେବାଦେବୀ ମିଳନ ବେଦୀ ( ୨ଥର) ପୁରୁଷୋତ୍ତମ ପୀଠରେ ଦୁଆର.....।୩॥

### ଧରମର ମାନେ ଦେଲ କହି

ଧରମର ମାନେ ଦେଲ କହି ଦୟାଲ ଠାକୁର ଦୟାବହି (॥) ମରଣ ମୁହଁରୁ ଟାଣି ଆଣି ମୋତେ ( ୨ଥର) ବଞ୍ଚବା ବଢ଼ିବା ଦେଲ ଶିଖାଇ, ଆ... ଧରମର ମାନେ... ॥୦॥

ଅସାର ସଂସାର ମାୟା ମରିଚିକା ଶାନ୍ତି ଖୋଜି ମିଳେ ଅଶାନ୍ତିର ଧୋକା ଅଛି ଏ ଜୀବନେ ଘୃଣା ପରିହାସ କଣ୍ଠାର ଆଘାତେ ବେଳ ହେଲା ଶେଷ ନିରାଶ ମନରୁ ହରିଲ ବିରସ (୨ଥର) ଆଶାର ପ୍ରଦୀପ ଦେଲ ଜଳାଇ ଧରମର ମାନେ... ॥୧॥

ଅଳପ ଯେତିକି ରହିଲା ଜୀବନ ସଞ୍ଚବି ପଡିରେ ସତ୍ସଙ୍ଗ ଧନ ଯଜନ ଯାଜନ ଇଷ୍ଟଭୂତି କରି ୟଲୁଥିବି ବାଟ ଆୟର୍ଯ୍ୟଙ୍କୁ ଧରି ଆଉ ନ କାନ୍ଦିବି ଲୁହ ନ ଡ଼ାଳିବି (୨ଥର) ଧନ୍ୟ ମୋ ଜୀବନ ତୁମରି ପାଇଁ ଧରମର ମାନେ ... ॥୨॥

### ପ୍ରଭୂ ତୁମରି ଧିଆନେ

ପ୍ରଭୂ ତୁମରି ଧିଆନେ ତୂମରି ଚରଣେ ଏ ଜୀବନ ବିତି ଯାଉଗୋ (॥) ତୁମରି ସେବାରେ ଦିବାରାତି ମୋର (୨ଥର) ସରସ ସୁନ୍ଦର ହେଉ ଗୋ... ପ୍ରଭୂ......॥୦॥

ନୟନର ନୀରେ ଧୋଇ ଶ୍ରୀ ଚରଣ ଅରପିବି ମନ କୁସୁମ ଚନ୍ଦନ (॥) ପୂଜା ଉପଷର କି ଦେବି ସମ୍ଭାର (୨ଥର) ଏ ହୃଦୟ ବିନା ଆଉଗୋ... ପ୍ରଭୂ.......॥୧॥

କାଣେନା ଭକତି ପୂଜା ଆରାଧନା ନକରି କେମିତି ପାଇବି କରୁଣା (॥) ତୁମରି ଆଶିଷେ ବଞ୍ଚିବାର ପଥ ( ୨ଥର) ସହଜ ସରଳ ହେଉ ଗୋ... ପ୍ରଭ୍....... ॥ ୨॥

କଳୁଷ କାଳିମା ଯେତେ ଜୀବନର ତୁମରି ପରଶେ ହୋଇଯାଉ ଦୂର (॥) ତୁମ ଦେଖା ପଥ ଭୁଲିବିନି କେବେ (୨ଥର) ଦରଦୀ ଠାକୁର ଆଉ ଗୋ ପ୍ରଭୂ......॥୩॥

### ପ୍ରଭୁ ତୁମ ଶ୍ରୀଚରଣ ବିନା

ପ୍ରଭୁ ତୂମ ଶ୍ରୀଚରଣ ବିନା ଝଡ଼ିଯିବ ମୋର ଜୀବନ କୁସୁମ ହରାଇ ମହକ ସିନା...ହୋ... ପ୍ରଭୁ ତୁମ...... ॥୦॥

ଅସାର ସଂସାରେ ବାସନା ମଦିରା ଭରିଅଛି କେତେ ରସର ପସରା (॥) ତୁମ ନାମ ରସ ବିନା ମୋ ଜୀବନ ନିରସ ହୋଇବ ସିନା...ହୋ... ପ୍ରଭୁ ତୁମ...... ॥୧॥

ଦୂଃଖ ଘନଘଟା ସୁଖର କୁଆର ଆସିଛି ଜୀବନେ କେତେ ବାରବାର(॥) ତୁମ ବିନା ମୋର ଜୀବନ ପ୍ରଦୀପ ଯାଇଥାନ୍ତା ଲିଭି ସିନା...ହୋ... ପ୍ରଭୁ ତୁମ...... ॥ ୨ ॥

ତଥାପି ମନରେ ହୁଏ ଭାବାନ୍ତର ପ୍ରଭୂ ବୋଲି କାଳେ କରିବ ଅନ୍ତର(॥) କରୁଛି ଗୁହାରୀ ଚିରଦାସ ବୋଲି କର ବାରେ ମୋତେ ଘେନା...ହୋ... ପ୍ରଭୁ ତୂମ......॥୩॥

#### ପ୍ରଣମେ ବାରବାର ଗୁରୁପାଦ ପଦ୍ୱେ

ପ୍ରଣମେ ବାରବାର ଗୁରୁପାଦ ପଦ୍ନେ (୨ଥର) ବିଭୋର ଏ ମନପ୍ରାଣ (୨ଥର) ରୂପ ରସ ଗନ୍ଧେ... (୩ ଥର) ପ୍ରଣମେ.....।।।।

ସାଗର ତରଙ୍ଗରେ ଝରଣାର ଝଙ୍କାରେ (୨ଥର) ମନବୀଣା ତୋଳିଅଛି ରାଗିଣୀ (୨ଥର) ନୀଥର ଏ ଅନ୍ତରେ ଶୁଷ୍କମରୁ ପ୍ରାନ୍ତରେ (୨ଥର) ଆଶା ସ୍ରୋତ ବହୁଅଛି ଉଚ୍ଚାଣି ସେହି ସ୍ରୋତେ ଯାଏ ଭାସି (୨ଥର) ପରମ ଆନନ୍ଦେ... (୩ ଥର) ପ୍ରଶମେ......। ୧॥

ଗୁରୁକୃପା କରି ସାର ପଙ୍ଗୁ ଲଫେ ଗିରି ପାର (୨ଥର) ଶୁଷ୍ପତରୁ କିଶୋଳୟେ ଶୋଭିତ (୨ଥର) ଗୁରୁମୋର ଗଉରବ, ଗୁରୁମୋର ଶଉରଭ (୨ଥର) ଗୁରୁ ମୋର ହୃଦୟର ସଙ୍ଗୀତ ମୋ ଜୀବନ ସେ ଚରଣେ (୨ଥର) ଭକ୍ତି ଡ଼ୋରେ ବାହେ..... (୩ଥର) ପ୍ରଣମେ..........।୩॥

### ପୁରୁଷୋଉମ ଜୟ ଜୟ

ପୁରୁଷୋରମ ଜୟ ଜୟ ଶ୍ରୀ ଅନୁକୂଳ ଜୟ ଜୟ (॥) ବଦେ ପୁରୁଷୋରମମ୍ (୪ଥର) ପୁରୁଷୋରମ.....॥୦॥

କୋଟିଏ କଣ୍ଠରେ ଉଠେ ଆଜି ଧ୍ୱନି ଜୟ ପ୍ରେମମୟ ଶ୍ରୀ ଅନୁକୂଳ (॥) ପୁରୁଷୋତ୍ତମ.....॥ ॥ ।।

ଅପରୂପ ହେ ବିଶ୍ୱରୂପ, ନରଲୀଳାର ଅନୁରୂପ (୨ଥର) ଚଲା ବୁଲା ତୁମ ସବୁ କିଛି ପୁଭୂ (୨ଥର) ସତ୍ୟ ଶିବ ଚିର ସୁନ୍ଦର ପୁରୁଷୋଢମ......॥୨॥

ରାମଚନ୍ଦ୍ର, ଶ୍ରୀକୃଷ, ବୁଦ୍ଧ, ଯୀଶୁ ରୂପେ ହେଲ ଉଭବ (୨ଥର) ରସୁଲ ଚୈତନ୍ୟ ରାମକୃଷ ରୂପେ (୨ଥର) ତୋଳି ଧରଣୀକୁ କଲ ଉଦ୍ଧାର ପୁରୁଷୋତ୍ତମ......।୩॥

ସର୍ବ ଶେଷେ ନେଲ ଜନମ, ତୁମେ ଯୁଗପୁରୁଷୋଉମ (୨ଥର) ଜୀବନ ଆଲୋକେ ଆଲୋକିତ କଲ (୨ଥର) ମିଛ ମାୟା ଭରା ସାରା ସଂସାର ପୁରୁଷୋଉମ......॥୪॥ Bhajan-120

### ପ୍ରିୟ ପରାଣ ଦେବତା

ପ୍ରିୟ ପରାଣ ଦେବତା ଘେନ ମୋ ଅନ୍ତର କଥା ବହୁଦିନୁ ହେ ଠାକୁର ରହିଛି ଅକୁହା କଥା (॥) ପ୍ରିୟ ପରାଣ.....॥୦॥

ତୁମ ରୂପ ଦରଶନ ନିତି କରୁ ଏ ନୟନ (୨ଥର) ସେ ସୁନ୍ଦର ରୂପ ଦେଖି ନତ ହେଉଥିବ ମଥା ପ୍ରିୟ ପରାଣ.....॥୧॥

ଜିଭକୁ ନ ରୁଚେ ମୋର ଆନ ସଂଗୀତର ସୁର (୨ଥର) ନୀତି ରଚୁଥିବି ତୁମ ଭଜନ କୀରତି ଗାଥା ପ୍ରିୟ ପରାଣ......॥୨॥

ହୃଦୟ ମନ୍ଦିରେ ମୋର ସଦା ବିରାଜ ଠାକୁର (୨ଥର) କୃପା ରହିଥାଉ ପ୍ରଭୂ ଏହି ଅଳି ବିଶ୍ୱପିତା ପ୍ରିୟ ପରାଣ.....।୩॥

# ପ୍ରେମର ପୂଜାରୀ <sub>ଦରଦୀ</sub> ଠାକୁର

ପ୍ରେମର ପୂଜାରୀ ଦରଦୀ ଠାକୁର ତୁମେ ପରା ପ୍ରିୟ ସକଳ ଜୀବର (॥) ଦେଓଘରେ ବସି ଲୀଳା କରୁଅଛ (୨ଥର) ଏ ଦୀନ ଦୂଃଖାକୁ ନ କର ହେ ପର (୨ଥର) ପ୍ରେମର ପୂଜାରୀ... ॥୦॥

ହତାଶାର ପାରାବାରେ ଭଙ୍ଗା ନାବ ମୋହର ଭାସି ଭାସି ଯାଉଅଛି ନ ଲାଗେ ଯେ କୂଳର (॥) ଆଶାର ଆଲୋକ ଜୀବନ ଯାକର (୨ଥର) ତୁମେ ସାହା ପ୍ରଭୁ ଏ ଦୀନ ଦୁଃଖୀର (୨ଥର) ପ୍ରେମର ପୂଜାରୀ ... ॥୧॥

ନିରାଶାର ନିଳୟରେ ନାମମୟ ହୃଦୟ ରାଧାନାମ ଜପୁଥାଉ ଆହୁଲା ମୋ ଭେଳାର (॥) ଝଡର ବାଦଲ ଥମି ଥମି ଯାଉ (୨ଥର) ଡୁମେ ଦୟାମୟ କରୁଣା ସାଗର (୨ଥର) ପ୍ରେମର ପୂଜାରୀ ... ॥୨॥

ଅସାର ଏ ବୁନିଆଁରେ ସତନାମ ସାର ନାମଧ୍ୟାନ ସବୁକିଛି ଟଙ୍କାଟା ଯେ ପର (॥) ପାଳୁଅଛି ପ୍ରଭୁ ସ୍ୱୟ୍ତୟନୀ ବ୍ରତ (୨ଥର) ଆନନ୍ଦିତ ପ୍ରାଣେ ଉନ୍କୁଳେ କୁଆର (୨ଥର) ପ୍ରେମର ପୂଜାରୀ... ॥୩॥

### ବିଶ୍ୱ ମାନସେ ଚରଣ ବନ୍ଦିତ

ଗୁରୁ ବ୍ରହ୍ନା, ଗୁରୁ ବିଷ୍ଣୁ, ଗୁରୁଦେବ ମହେଶ୍ୱର ଗୁରୁସାକ୍ଷାତ ପରମବ୍ରହ୍ନ ତସ୍ନୈ ଶ୍ରୀଗୁରବେ ନମଃ ତସ୍ନୈ ଶ୍ରୀଗୁରବେ ନମଃ ।

> ବିଶ୍ୱ ମାନସେ ଚରଣ ବନ୍ଦିତ ତବ ଶରଣେ ପ୍ରଭୂ ପରାଣ ନନ୍ଦିତ (॥) ମଳିନ ଜୀର୍ଣ୍ଣ ଛିନ୍ନ ଜୀବନ (୨ଥର) କର ତବ ପ୍ରେମେ ଛନ୍ଦିତ (୨ଥର) ବିଶ୍ୱମାନସେ.....॥୦॥

ଭଠେ କଣ୍ଟେ କଣ୍ଟେ ଜୟ ସଂଗୀତ ହୁଟେ ଘଟେ ଘଟେ ଲୀଳା ଇଙ୍ଗିତ (॥) ଇଥର ଚିତ୍ତେ ଦିବସ ରାତ୍ରେ (୨ଥର) ହେଉ ତବ ମହା ସୁରମଣ୍ଡିତ (୨ଥର) ବିଶ୍ୱମାନସେ.....॥୧॥

କମ୍ପିତ ଥର ଥର ଶଂକିତ ପଦକର ଅରୂପ ତବ ରୂପେ ବାରବାର (॥) ନିଖିଳ ଯଥାସ୍ତବି ସେ ରୂପେ ଅଛି ଦ୍ରବି (୨ଥର) ହେମ ସିନ୍ଧୁ କୂଳେ ପୂର୍ଷ ଇନ୍ଦୁସିତ (୨ଥର) ବିଶ୍ୱମାନସେ......॥୨॥

# ବଦେ ପୁରୁଷୋଉମମ୍ ଜୟଲକ୍ଷ୍ମୀକାନ୍ତ॰

ଚନ୍ଦେ ପୁରୁଷୋଇମମ୍ (୪ଥର) ଜୟଲଷ୍କାକାନ୍ତମ୍ କମଳ ନୟନଂ ଶ୍ରୀ ଅନୁକୁଳମ୍ ଶତତଂ ନମାମୀ (୩ଥର) ବନ୍ଦେ...... ॥୦॥

ସଂସାର ସାରଂ ନିଗମ ପ୍ରୟରଂ ଧର୍ମାବତାରଂ ହୃତ ଭୂମି ଭାରଂ ବିଶ୍ୱ ପ୍ରଣାମଂ କୃତ ଭକ୍ତ କାମଂ ଶ୍ରୀ ଅନୁକୂଳମ୍ ଶତତଂ ନମାମୀ (୩ଥର) ବଦେ......॥୧॥

କର୍ପୂର ଗୌରଂ କରୁଣା ବତାରଂ ସଂସାର ସାରଂ ଭୂଳକେନ୍ଦ୍ର ହାରଂ ସଦା ବସନ୍ତଂ ହୃଦୟାର ବିନ୍ଦେ ଭବଂ ଭବାନୀ ସହିତଂ ନମାମୀ (୩ଥର) ବନ୍ଦେ......॥ ୨ ॥

> ବ୍ରଳେ ପ୍ରସିଦ୍ଧଂ ନବନୀତ ଗୌରଂ ବ୍ରଳାଙ୍ଗନାନଂ ଦୂଳୁଳଂଚ ଚୌରଂ ଅନେକ ଜନ୍ନାର୍ଜିତ ପାପ ଚୌରଂ ଚୌରାତ୍ୟ ଗଣ୍ୟଂ ପୁରୁଷମ୍ ନମାମୀ (୩ଥର) ବସେ......॥୩॥

#### ଭକତି ପ୍ରଦୀପ ଜାଳିଦିଅ ପ୍ରଭୁ

ଭକତି ପ୍ରଦୀପ କାଳିଦିଅ ପ୍ରଭୁ ହୃହୟ ମନ୍ଦିରେ ମୋର (॥) କୋଟି ଜନମର ଅଜ୍ଞାନ ତିମିର (୨ଥର) ଏ ଜନମେ ହେଉ ଦୂର... ହୃଦୟ ମନ୍ଦିରେ ମୋର... ଭକତି.....॥୦॥

ଜୀବନ ମୋହର ବିତିଯାଉ ପ୍ରଭୁ ତୁମ ଅରଚନା ପାଇଁ ଜୀବନରେ ଯେତେ କଳୁଷ କାଳିମା ଆଖି ନୀରେ ଦେବି ଧୋଇ (॥) ଏତିକି ମିନତୀ ତୁମ ଶ୍ରୀଚରଣେ... ଜଣାଉଛି ନିରନ୍ତର... ହୃଦ୍ୟ ମନ୍ଦିରେ ମୋର... ଭକତି......॥ ॥ ॥

ତୂମ ବିନା ମୋର ନାହିଁ ଆନଗତି କର ମୋତେ ପରିତ୍ରାଣ ତୂମେ ନ ରଖିଲେ ଜୀବନ ମୋହର ଯିବ ନିଷ୍ଟେ ଅକାରଣ(॥) ତୁମ ନାମ ଧରି ହେଲେ ଯିବି ତରି ଏ ସଂସାର ପାରାବାର... ହୃଦୟ ମନ୍ଦିରେ ମୋର ଭକତି......॥ ॥ ॥ Broga Beat - 12

### ଭବ ସଂସାରେ ସାର ଡବ

ଭବ ସଂସାରେ ସାର ତବ ଶ୍ରୀଚରଣ (୨ଥର) ଦୁର୍ଲ୍ଭ ସତନାମ ସତସଙ୍ଗ ଶରଣ (୨ଥର) ଭବ ସଂସାରେ..... ॥୦॥

ଅଧରେ ସ୍ମିତ ହାସ୍ୟ ନିତ୍ୟ ନୂତନ ଆଚାନୁ ଲୟିତ ବାହୁ ସୋମ୍ୟ ବଦନ (॥) ହେ ପ୍ରାଣାରାମ... ହେ ପ୍ରାଣାରାମ ହେ ପ୍ରିୟ ପରମ ପୁରୁଷୋତ୍ତମ ତବ ଧରାବତରଣ ଭବ ସଂସାରେ..... ॥୧॥

ପ୍ରବୃତ୍ତି ଅଭିଭୂତ ଭୀତ ମାନସ ଅଶାନ୍ତ ଦାବାନଳେ ଶୁଷ ନିରସ (॥) ହେ ପରମେଶ... ହେ ପରମେଶ ପରମ ପୁରୁଷ ନାମରସ ପିୟୁଷେ ପୁଲକିତ ପ୍ରାଣ ଭବ ସଂସାରେ..... ॥ ୨ ॥

ନୟନେ ନୀରଧାର ତବ ଗୁଣ ଗାନେ ଦିବ୍ୟ ଆନନ୍ଦ ପ୍ରଭୂ ମନ୍ତ ସାଧନେ (॥) ହେ ଭାବାତୀତ... ହେ ଭାବାତୀତ ତ୍ରିଗୁଣ ରହିତ କୋଟି ପ୍ରଣାମ ଶ୍ରୀପଦେ, ନର ନାରାୟଣ ଭବ ସଂସାରେ....ା୩॥

### ଭକ ଭାଇ, କପ ଭାଇ, ଲକ୍ଷ୍ମୀମାଆ

ଭକଭାଇ କପଭାଇ, ଲକ୍ଷ୍ମୀ ମାଆ ମହାମାୟୀ ( ୨ଥର) ସବୁ ସୁଖ ପାଇବୁରେ, ସବୁ ସୁଖ ପାଇବୁରେ, ପାଇବୁରେ ସବୁ ସୁଖ ପାଇବୁରେ ତାର ନାଁଆଟାକୁ ଗାଇ ଗାଇ ମହାମାୟୀ ଗୋ ଭଳ ଭାଇ..... ॥୦॥

ମାଆ ମୋର କଗତ କନନୀ... ଅଖିଲ ଭବ ଧାରିନୀ ସରବ ଦୁଃଖ ନାଶିନୀ... ଅଭୟ ବର ଦାୟିନୀ (॥) ଜୀବନ ଧାୟନ୍ ହୋଇଯିବା, ଜୀବନ ଧାୟନ୍ ହୋଇଯିବା ହୋଇଯିବା ଜୀବନ୍ ଧାୟନ୍ ହୋଇଯିବା ତାର ନାଁଆଟାକୁ ଗାଇ ଗାଇ ମହାମାୟୀ ଗୋ ଭଜ ଭାଇ..... ॥୧॥

ମାଆ ମୋର ସରବ ସହନୀ... ସକଲ ସୁଖ ଦାୟିନୀ ଅଖିଲ ବିଶ୍ୱ ପାଲିନୀ.... ନିଖିଲ ବିଶ୍ୱ କଲ୍ୟାନୀ (॥) ସରଗ ସୁଖ ପାଇବୁରେ, ସରଗ ସୁଖ ପାଇବୁରେ, ପାଇବୁରେ ସରଗ ସୁଖ ପାଇବୁରେ ତାର ନାଁଆଟାକୁ ଗାଇ ଗାଇ ମହାମାୟୀ ଗୋଟି ଜିଥିଲା ଭଳ ଭାଇ..... ॥ ୨ ॥

ସିଏତ ଲକ୍ଷ୍ମୀ ରୂପିନୀ... କମଲା ନାରାୟନୀ ଶାରଲା ଉମା ଭବାନୀ... ଭବସାଗର ତାରିନୀ (॥) ଗତି ମୁକ୍ତି ପାଇବରେ, ଗତି ମୁକ୍ତି ପାଇବରେ, ପାଇବରେ ଗତି ମୁକ୍ତି ପାଇବୁରେ ତାର ନାଁଆଟାକୁ ଗାଇ ଗାଇ ମହାମାୟୀ ଗୋ ଭଳ ଭାଇ..... ।ା୩।।

### ମନ ବନ୍ଧୁରେ

ମନ ବନ୍ଧୁରେ... ଓ ... ଓ ବନ୍ଧୁ ମନ ବନ୍ଧୁରେ, ମୋ ବନ୍ଧୁ, ମନ ବନ୍ଧୁରେ କା ଆଗେ କହିବି, ବନ୍ଧୁ ଗୋପନ କଥା ମୋ ବନ୍ଧୁ ଗୋପନ କଥା ବନ୍ଧୁରେ... ଓ... ମାୟାଘେରା ଜୀବନର ଗହନ ବ୍ୟଥା ମୋ ବନ୍ଧୁ ଗୋପନ କଥା......।।।।

ଇନମ ମୃତ୍ୟୁ ଚକ୍ରରେ (ଘୁରୁଛି ଅଚେତନରେ) (୨ଥର) ଅନେକ ଳନ୍ନ ସାଧନ, ସବୁ ହେଲା ବିସ୍ନରଣ (୨ଥର) ତଥାପି ବିଭୁପୟରେ (୨ଥର) ନଲାଗେ ମଥା ମୋ ବନ୍ଧୁ ଗୋପନ କଥା......॥ ।। ୧॥

କାମ କ୍ରୋଧ ବୟ ଲୋଭ (ଷଡରିପୁ ପରାଭବ) ( ୨ଥର) କାମିନୀ କାଞ୍ଚନେ ବସ, ନାମ ଯଶେ କରିଆସ ( ୨ଥର) ମାନବ ଜନମ ସିନା ( ୨ଥର) ହୋଇଲା ବୃଥା ମୋ ବନ୍ଧୁ ଗୋପନ କଥା ...... ॥ ୨॥

ବୃତ୍ତିର ଜାଲରେ ପଡ଼ି (ସନାତନ ପଥ ହୁଡି) (୨ଥର) ତ୍ରିତାପ ଜ୍ୱାଳା ଯନ୍ତଣା, ବେଦନା ଅନୁଶୋଚନା (୨ତର) କାଳର ମୁହଁରେ ଶେଷେ (୨ଥର) ଜୀବନ ବୃଥା ମୋ ବନ୍ଧୁ ଗୋପନ କଥା ......॥୩॥

ଲଭିଛି ଇଷ୍ଟଚରଣ (ସତସଙ୍ଗ ସତନାମ) (୨ଥର) ତାଙ୍କରି ସେବା ପ୍ରୟାସ, ସତତ କର ମାନସ (୨ଥର) ପ୍ରେମାନଦେ ଗାଅ ମନ (୨ଥର) ପ୍ରଭୁର ଗାଥା ମୋ ବନ୍ଧୁ ଗୋପନ କଥା ......॥୪॥

### ମୋ ମନର ତୁମେ ଗନ୍ଧ କସ୍ତୁରୀ

ମୋ ମନର ତୂମେ ଗନ୍ଧ କସ୍ତୁରୀ ନୟନର ଦୀପ୍ତିଶିଖା ଯଶ ଗଉରବେ, ମାନ ଅପମାନେ (୨ଥର) ତୁମେ ମୋ ବିଜୟ ଟୀକା... ମୋ ମନର ......॥୦॥

ବେତନାରେ ତୁମେ ଚିଦାନନ୍ଦ ରୂପ ଜୀବନେ ଅମୃତ ଆଶା ଉଷାର ପରାଣେ ଅମୀୟ ସିଞ୍ଚନ ଧ୍ୱାନ୍ତ ନିଶାନ୍ତର ଉଷା... ଅୟୁତ ଭୂବନ ରାଜରାଜେଶ୍ୱର (୨ଥର) ମାଗେ ପଦରକ ଭିଷା... ମୋ ମନର .....॥१॥

ମରଣ ମରୁରେ ପ୍ରୀତି ମନ୍ଦାକିନୀ ମରମର ମନସିକ ହେ ପ୍ରିୟ ବରେଣ୍ୟ ତାପସ ପ୍ରଣମ୍ୟ ଦେବଗଣ ଶୀରଧିକ (॥) ସ୍ଟଳନ ପାଳନ, ନିଖିଳ ଜୀବନ ( ୨ଥର) ମୁକତିର ହୋମଶିଖା...

ଅଶୀନ୍ତ ବଳୟେ ତୁମେ କାନ୍ତଦ୍ୟୁତି ଭକ୍ତ ମାନସ ଆଶ୍ରୟ ନିଶୁଦ୍ଧ ପ୍ରାଣରେ ଅନ୍ତର୍ଯ୍ୟାମୀ ତୁମେ ସନ୍ତାପେ ଗନ୍ଧମଳୟ (॥) ପରମ ଦରଦୀ ହେ ଜୀବନଶିଳ୍ପ (୨ଥର) ବିଧିର ଜୀବନ ରେଖା...

### ମୋର ଜୀବନ ଡୋର

mad ba-1-

ମୋର ଜୀବନ ତୋର, ମୋର ପ୍ରିୟ ଠାକୁର ( ଠାକୁର ହେ) ତୁମେ ପରା ଦୁଃଖୀ ରଙ୍କିର ( ୨ଥର) ମୋର ଜୀବନ ତୋର...... ॥୦॥

ଦୁନିଆଁରେ କେହି ନାହିଁ ମୋହର ନିକର ଭୂଲିବି ନାହିଁ ପ୍ରଭୁ ରାଧାନାମ ସୁର (॥) ତୁମେ ସତ୍ୟ ସୁନ୍ଦର ମୋର ଜୀବନ ଧାର ( ୨ ଥର) ଜ୍ୟୋର୍ତିମୟ ତୁମେ ସୃଷ୍ଟିର (ଠାକୁର ହେ) ତୁମେ ପରା ଦୁଃଖୀ ରଙ୍କିର ( ୨ ଥର) ମୋର ଜୀବନ ଡୋର...... ॥ ୧ ॥

ତୁମେ କନ୍ଦାଉ ଥିଲେ କାନ୍ଦୁଥିବି ମୁହିଁ ।।) ତୁମେ ହସାଉଥିଲେ ହସୁଥିବି ମୁହିଁ (।।) ମୋତେ ଖେଳାଅ ପଛେ ମୋତେ କଳାଅ ପଛେ ( ୨ ଥର) ରହିଥାଉ ଟେକ ତୁମର (ଠାକୁର ହେ) ତୁମେ ପରା ଦୁଃଖୀ ରଙ୍କିର ( ୨ ଥର) ମୋର ଜୀବନ ତୋର...... ।। ୨ ।।

#### D#measure Garba/Dadra-128

### ମହାମିଳନର ତୀର୍ଥ ତୁମେ ଗୋ

ମହାମିଳନର ତୀର୍ଥ ତୂମେ ଗୋ ଅମୃତମୟ ଧାରା (॥) ତୁମରି ସୋହାଗେ ... ( ୨ଥର) ଶିକ୍ତ ଧରଣୀ (॥) ମମତାରେ ମଧୁଝରା ଅମୃତମୟ ଧାରା... ମହାମିଳନର...... ॥०॥

ଅସୀମ ପରେ କ୍ଷଣିକେ ସୁଝିଚ୍ଛ ମହାମିଳନର ବେଦି ସତ ବୁକୁକ୍କଳା ବିରହ ଯାତନା ନିଭାଇଛ ବୁକେ ବାନ୍ଧି (॥) ଦିଗହରା ମୁଁ ଯେ (୨ଥର) ବିଭ୍ରାନ୍ତ ପଥିକ (॥) ତୁମେ ମୋର ଧୁବତାରା ଅମୃତମୟ ଧାରା... ମହାମିଳନର......॥ ॥ ॥

ପ୍ରଳୟ ବୁକୁରେ ସାନ୍ତ୍ୱନା ତୁମେ ଝଞ୍ଜାରେ କୁହୁ ସ୍ୱନ ବୈଶାଖି ଝଡ଼େ ଶାନ୍ତ ପରଶେ ମୁଗୁ କରିଛ ପ୍ରାଣ (॥) ହେ ସଚ୍ଚିଦାନନ୍ଦ... (୨ଥର) ପରମଆନନ୍ଦ (॥) ଦେଇଛ ଜୀବନ ସାରା ଅମୃତମୟ ଧାରା...

### ମନର ମଣିଷ ବୋଲି

ମନର ମଣିଷ ବୋଲି ତୁମକୁ କଲି ଆଶରା (୨ଥର) ହୃଦୟର ଦୁଃଖ ବୁଝ ମୋ ହୃଦ ଈଶ୍ୱର ପରା (॥) ମନର ମଣିଷ...... ॥୦॥

ବିଶ୍ୱସାଇଁ ତୂମ ପାଇଁ ତୁହାଇ କାନ୍ଦୁଛି ଏତେ ଅବୁଝା ମୋ ମନ କଥା ମରମର ବ୍ୟଥା ଯେତେ (॥) ପୋଛିଦେଇ ସରାଗରେ ନିତ୍ୟଛାଏଁ ଦେଲଧରା (୨ଥର) ହୃଦୟର ଦୃଃଖ... ମନର ମଣିଷ...... ॥୧॥

ଅଲୋତା ଅଖୋଚ୍ଚା ଏହି ଚ୍ଚୀବନକୁ ଖୋକିନେଲ କଳଙ୍କ କାଳିମା ଧୋଇ ମୁଗ୍ଧ ମଞ୍ଜୁଳ କଲ ହଳାଅ ଚ୍ଚୀବନ ବ୍ୟଥା ତୁମେ ବ୍ୟଥାହାରୀ ପରା ( ୨ ଥର) ହୃଦ୍ୟର ଦୃଃଖ... ମନର ମଣିଷ୍ଠ.....॥ ୨ ॥

ମହିମାର ମେରୁ ଡୁମେ ଭକ୍ତ ବାଞ୍ଜା କଳ୍ପତରୁ ଯୁଗ ପୁରୁଷୋରମ ପୂର୍ଣ୍ଣବ୍ରହ୍କ ସଦଗୁରୁ (॥) ମୋ ଜୀବନ ପ୍ରତିକୂଳେ ତୁମେ ଅନୁକୂଳ ପରା ( ୨ ଥର) ହୃଦ୍ୟର ଦୁଃଖ... ମନର ମଣିଷ...... ॥୩॥

ତୃପତିର ଧାରା ତୁମେ ଢ଼ାଳିଲ ଅଶୀନ୍ତ ପ୍ରାଣେ ତପମୂର୍ତ୍ତି ଲୀଳାକଲ ଅଖିଳ ବିଶ୍ୱଭୂବନେ (॥) ପ୍ରେମମୟ ଅନୁପମ ତୁମେ ମୁକତି ପସରା ( ୨ଥର) ହୃଦୟର ଦୁଃଖ... ମନର ମଣିଷ......॥४॥

### ମନରେ...ଇଚ୍ଛାମୟ ସେହି ଏକାରେ

Broken

ମନରେ...କ୍ରହାମୟ ସେହି ଏକାରେ କ୍ରହାମୟ ସେହି ଏକାରେ (୨ଥର) କୋଟି ବିଶ୍ୱ ପୁଣ ଯା ଇହାରେ ଜାଣ (୨ଥର) ପଲକେ ଦେଇଛି ଦେଖାରେ (୨ଥର) କ୍ରହାମୟ.....।।।।

କ୍ୟୋତିର୍ମୟ ଧାମ ଅଟେ ତା'ର ବାସ ମର ଦେହେ ତୋର ହୋଇଛି ପ୍ରକାଶ (॥) ପ୍ରେମମୟ ସେହି ମୋହଗ୍ରସ୍ଥ ହୋଇ ବନ୍ଧନୁ କରେ ସେ ରକ୍ଷାରେ ଇଚ୍ଛାମୟ.....॥୧॥

ଭାବୁ ତାକୁ ତୁହି ଦୂରେ ବହୁ ଦୂରେ ଗୋପତ ଭାବରେ ଅଛି ତୋ ଅନ୍ତରେ (॥) ଅରୂପ ଅନନ୍ତ ମହିମା ବିଚିତ୍ର ( ୨ଥର) ସେ ପରା ପରମ ସଖାରେ ଇଚ୍ଛାମୟ.....॥୨॥

# ମୋ ଠାକୁର ଜୀବନ୍ନାଥ

ମୋ ଠାକୁର ଜୀବନ୍ୱାଥ ଜୀବନର ନାଥ ଅନୁକୂଳ ନାମେ ଆଜି ଜଗତେ ବିଦିତ ମୋ ଠାକୁର... ॥୦॥

ଜୀବନେ ସଞ୍ଚିତ ସମ୍ପଦ ଯେତେ ତବ ଶ୍ରୀପଦେ ମୁଁ ସମର୍ପି ଦେଇ ତବ ମହାଦାନେ ପାଇଅଛି ସବୁ ଦୂର୍ଦ୍ଦିନ ଯାତନା ଯାଇଛି ମୁଁ ଭୁଲି ଜ୍ଞାନ ଚକ୍ଷୁଦାତା ଜଗତ କରତା ପ୍ରେମମୟ ତୁମେ ଗତିମୁକ୍ତି ଦାତା ଏ ବିଶ୍ୱର ବିଶ୍ୱେଶ୍ୱର ମୋ ସକଳ ତୀର୍ଥ ମୋ ଠାକୁର... ॥ ୧ ॥

ମନ ଆକାଶରେ ତୁଟେ ସେବେ ଆଶା ସାହାବଳୀ ହୋଇ ଦେଇଛ ଭରସା ଉଦ୍ଧାରୁ ପରାଣେ ଅମିୟ ସିଞ୍ଚନ ଧ୍ୱାନ୍ତ ନିଶାନ୍ତର ତୁମେ ଦିବ୍ୟ ଉଷା ଝରା ଫୁଲ ପରି ଜୀବନ କୁସୁମ ଫୁଟାଇଛ ତୁମେ ହେ ପ୍ରିୟ ପରମ ପୁଷ୍ଟମୟ କରିଦେଲ ମୋ କଣ୍ଟକ ପଥ ମୋ ଠାକୁର... ॥ ୨ ॥

### ମନ ବାୟା ନୟନ କବାଟି ଖୋଲ

ମନ ବାୟା ନୟନ କବାଟି ଖୋଲରେ ... (୨ଥର) ମନୁଆ ହୃଦୟ ଦୁଆର ଖୋଲ ନିଜେ ପରା ବିଜେ ରାଜଅଧିରାଜ ପ୍ରେମମୟ ସେ ଅନୁକୂଳ... ରେ ବାୟା...... ॥୦॥

> ବରଣ ଥାଳିରେ ଧୂପ ଦୀପ କଳେ ସୁବାସ ଚନ୍ଦନ ସୁବାଷିତ ଫୁଲେ (॥) ଶୋହେ ପଦଶତ ଦଳ... ରେ ବାୟା...... ॥୧॥

ହୁଳୁଧ୍ୱନି କରେ ଶୁଭ ଆବାହନ ଗୃହ ବଧୁଙ୍କର ଶୁଭ ଶଙ୍ଖସ୍ୱନ (॥) ମଙ୍ଗଳ ଚରଣ ତାର... ରେ ବାୟା.......॥ ୨॥

ମନ ମତାନିଆ ଶୁଭେ ବିନତୀର ସୁର ଭକତ ଜନର ଜୟ କଳରୋଳ (॥) ଚିତ୍ତେ ଜଗାଏ ତୋଳ... ରେ ବାୟା......॥୩॥

### ମଥା ମୋର ଲୋଟିଯାଉ

ମଥା ମୋର ଲୋଟି ଯାଉ ଚରଣ ଧୂଳିରେ ( ୨ଥର) ଅହଙ୍କାର ଧୋଇ ଯାଉ ନୟନର ନୀରେ ପୁରୁ ... ଚରଣ ଧୂଳିରେ ମଥା ମୋର...... ॥୦॥

ଆଜିଯାଏ ପରିସଜା ସ୍ୱାର୍ଥପୂର୍ଣ କର୍ମ ମଜିଲି ଆପଣା ସୁଖେ ଭୁଲିଲି ଧରମ (॥) ନିଜ ସୁଖେ ମଜିଗଲି (୨ଥର) ବିଷୟାବିଷରେ ନ ଚିହ୍ନିଲି ମୋ ଅନ୍ତର ଅମୀୟ ରସରେ (୨ଥର) ମଥା ମୋର......॥୧॥

ଦୟାକର ଦରଦୀ ହେ ପ୍ରାଣର ଠାକୁର ନାମାମୟ ହେଉ ସରା ମାଗୁଣି ମୋହର (॥) ତୂମେ ଇଚ୍ଛା ପୂର୍ଣ୍ଣକର (୨ଥର) ନିଷ୍କାମକର୍ମରେ ଚିତ୍ର ମୋର ରତ ରହୁ ତୁମରି ମର୍ମରେ (୨ଥର) ମଥା ମୋର......॥ ॥ ॥

ଭିକ୍ଷା ଦିଅ ଦୀକ୍ଷାଦାତା ଭରିଦିଅ ଶାନ୍ତି ଜୀବନେ ମୁଁ ଦେଖୁଥାଏ ତୂମ ଦିବ୍ୟକାନ୍ତି (॥) ତୂମେ ପ୍ରଭୂ ପୁଷ୍ପମଧୁ (୨ଥର) ମୋ ଜୀବ କମଳେ ପୁତ କର ପ୍ରାଣ ମୋର ଲୋତକ ଅନଳେ (୨ଥର) ମଥା ମୋର.....।୩॥

### ମୋ ମନର କଥା ହୃଦୟର ବ୍ୟଥା

ମୋ ମନର କଥା ହୃଦୟର ବ୍ୟଥା କେଉଁ ଦିନୁ ପ୍ରଭୁ କହିନାହିଁ କେମିତି ଜାଣିଲ ଭାବଗ୍ରାହୀ (୨ଥର) ମୋ ମନର.....।।୦॥

ତୁମେ ତ ଅଦେଖା ତୁମେ ତ ଅକଣା ଦେଖାଇଲ ପଥ କରିଲ କରୁଣା (॥) ମୋ ମନ ନୟନେ ଆସି ନିଶିଦିନେ (୨ଥର) ଉଭା ହେଲ ମୋତେ ଋହିଁ ଋହିଁ... କେମିତି ଜାଣିଲ... ମୋ ମନର......॥९॥

ଯେଉଁ କଥା ମୋତେ କହିଲ ଗୁପତେ ସେ କଥା ଜଗତେ ନ ଯିବ ପରତେ (॥) ମୋ ମନ ବଇଁଶୀ ବଜାଇଲ ଆସି (୨ଥର) ମୋ ଅଙ୍ଗେ ପୁଲକ ଯାଏ ଛୁଇଁ... କେମିତି ଜାଣିଲ... ମୋ ମନର.....॥୨॥

ତୁମ ପାଇଁ ଆସକ୍ତି କ୍ରନ୍ଦନ ନିନ୍ଦା ଅପଯଶ ମୋ ପାଇଁ ଚନ୍ଦନ (॥) ନିତ୍ୟ ସୁଖଧାମ ହେ ପୁରୁଷୋତ୍ତମ ( ୨ ଥର) ଅନ୍ୟ ସୁଖ ଲୋଡ଼ା ନାହିଁ ନାହିଁ... କେମିତି ଜାଣିଲ... ମୋ ମନର......॥୩॥

# ମଧୁମୟ ତୁମେ ପ୍ରା**ଣ**ମୟ ତୁମେ

ମଧୁମୟ ତୂମେ ପ୍ରାଣମୟ ତୂମେ ପ୍ରେମମୟ ତୂମେ ହେ ଠାକୁର ମଧୁର ଛଦେ ମଧୁ ପରଶିଲ ମଧୁମୟ କଲ ଏ ସଂସାର ମଧୁମୟ.....।।।।।

ପ୍ରାଣର ପ୍ରାଣ ହେ ପ୍ରାଣମୟ ହରି ମଉଡ଼ ମଣି ହେ ପ୍ରାଣ ଦେଲ ଭରି ପ୍ରାଣ ଆକୁଳ ଡ଼ାକେ ଅନାଇଲ ଆଜି ଏଇ ଧରାଡଳ ମଧୁମୟ......॥୧॥

ପ୍ରେମମୟ ତୂମେ ପ୍ରେମବାରି ଧାରା କେତେ ଶୁଷ ତରୁ ମଞ୍ଜୁରିତ କଲା ବ୍ୟକ୍ତି ସମ୍ପତ୍ତି ଗୃହ ସମାଜରେ ପ୍ରୀତିର ପରଶ ଦେଲ ମଧ୍ୟମୟ......॥ ୨ ॥

ମଙ୍ଗଳମୟ କରୁଣା ନିଧାନ କୃପା କରି ଦେଲ ଜୀବନ ବିଧାନ ନୟନ ହୀନରେ ରାହା ଦେଖାଇଲ ପାପି ତାପି ଉଦ୍ଧାରିଲ ମଧୁମୟ.....।୩॥

### ଶ୍ରୀଗୁରୁ ଚରଣ ତଳେ

ଶ୍ରୀଗୁରୁ ଚରଣ ତଳେ (୨ଥର) ଭାବର ଆବେଶେ ଆଳପନା ରଚେ (୨ଥର) ଭକତି ଚନ୍ଦନ କଳେ ଶ୍ରୀଗୁରୁ......॥୦॥

ପିଆସି ୟତକ ପରାଏ ପକ୍ଷୀକ ଆତୁର ପରାଣ ତୋଳି ବିଶ୍ୱାସର ନେତ୍ର କରି ଉନ୍ନିଳିତ ଭକ୍ତିସୁଧା ପାନ କରି ସେ ଚରଣ ପ୍ରାବ୍ତେ ଦେଖ ଅବିରତେ ( ୨ଥର) ଆନନ୍ଦ ଲହରୀ ଖେଳେ ଶ୍ରୀଗୁରୁ.....॥୧॥

ଅଲୋକ୍ତ ବରଣ ପଙ୍କଳ ଚରଣ ଲୁଷ ଏ ମନ ଭ୍ରମରା ସେ ପଦ୍ମକେଶର ମଧୁ ଜରାଜର ନାଶ କରେ ଭବ ମଦିରା କୃପା ରେଣୁ ବୋଳା ପରାଣ ଉଚ୍ଛଳା (୨ଥର) କ୍ଷମାଶ୍ରୟ ଭୁମଣ୍ଡଳେ ଶ୍ରୀଗୁରୁ.....॥୨॥

ଅମୀୟ ସୀତାଂଶୁ ଅନିର୍ବାଣ ଅଂଶୁ ଅଜ୍ଞାନ ତମସା ହାରୀ ୍ ସଦା ଜୋତିର୍ମୟ ରୂପେ ରୂପମୟ ମହାପ୍ରେମ ଅବତାରୀ ରେ ପ୍ରମତ୍ତ ମନ ଗୁରୁ ପଦେ ଧ୍ୟାନ ( ୨ଥର) କର ନିତି ନିରନ୍ତର ଶ୍ରୀଗୁରୁ.....।୩॥

# ଶଙ୍ଖ ବାକିଲାରେ ପ୍ରାଣ ନାଚିଲା

ଶଙ୍ଖ ବାଜିଲାରେ ପ୍ରାଣ ନାଚିଲା ଭେରୀ ଶବଦ ମରମ ଛୁଇଁଲାରେ ଭେରୀ ଶବଦ ମରମ ଛୁଇଁଲାରେ ହୁଳହୁଳି ଧ୍ୟନି ଭକ୍ତମନ ଜିଣି ଆନନ୍ଦ ଉଲ୍ଲାସେ ମଜିଲାରେ (॥) ଶଙ୍ଖ ବାଜିଲାରେ... ॥୦॥

> ଜଗତ ପାଇଁକି ପ୍ରେମମୟ ରୂପ (ଦେଖ) ବହିଛଡି ବିଶ୍ୱପିତା (୨ଥର) ସେ ନେତ୍ର କମଳ କରୁଣା ସକଳ ଚିର ବରାଭୟ ଦାତା (॥) ସେ ରଙ୍ଗା ଚରଣେ ନିଅ ହେ ଶରଣ (୨ଥର) ଅନନ୍ତ ସେ ବିଭୁଲୀଳାରେ (୨ଥର) ଶଙ୍ଖ ବାଜିଲାରେ... ॥୧॥

ଚଉଦିଗେ ବହେ ଆନନ୍ଦ ଲହରୀ
(ଆହା) ଭୁବନ ଶୋକ ପାସୋରା (୨ଥର)
ନାମ ପ୍ରେମେ ରସି ନିତି ଦିବାନିଶି
ଭକତି ଭାବରେ ଭୋଳା (॥)
ସେ ପ୍ରେମ ପରଶେ ମୂହୁର୍ଭେ ନିମିଷେ (୨ଥର)
ବିଗଳିତ ରୁଷ ଶିଳାରେ (୨ଥର)

#### ସବୁର ଚରମ ତୁମେ

ସବୁର ଚରମ ତୂମେ କି କରିବି ତୁମ ମହିମା କୀର୍ଭନ (୨ଥର) ସବୁର ଚରମ ତୁମେ ଦେବାକୁ ଉପମା ତୂମ ସାଥେ ପ୍ରଭୁ, ନାହିଁ କିଛି ଧରାଧାମେ ସବୁର ଚରମ ତୁମେ ... ॥०॥

> ତୁମ ଗୌର କାନ୍ତି ତୁମ ରୂପ ଠାଣି କେତେ ଯେ ପରାଣ ପାରିଥିଲା କିଣି ଊହିଁ ତବ ଗାତ୍ର କର୍ଣ ନାସା ନେତ୍ର (୨ଥର) ନାଚିଥିଲେ ଭକ୍ତ ପ୍ରେମେ ସବୁର ଚରମ ତୁମେ...॥१॥

କେତେ ପାପୀ କେତେ ଖୁନୀ ଅପରାଧୀ ନେଇଛ କୋଳକୁ କହିଛ ପ୍ରବୋଧ୍ ତୁମ ବୟା କ୍ଷମା, ନାହିତ ଉପମା (୨ଥର) ଜୟଗାନ ତୁମ ନାମେ ସବୁର ଚରମ ତୁମେ ... ॥୨॥

ରଚିଥିଲ ଯେବେ ହସର କୁଆର ସେ ହସେ ହୋଇଲା ଜଗତ ବିଭୋର ମନର ପରାଶ, ହୋଇଥିଲା ନାଶ ( ୨ଥର) ଭରିଲ ଶାନ୍ତି ମରମେ ସବୁର ଚରମ ତୁମେ ... ॥୩॥

କାଦିଲ ବୂହାଇ ଚକ୍ଷୁ ଅଶୁଧାର ସେ କାଦେ ଝଡିଲା ଗଛରୁ ପତର ତୁମ ହସ କାଦ, ବିଚିତ୍ର ସେ ଫାନ୍ଦ (୨ଥର) ତୁମରି ଉପମା ତୁମେ ସବୁର ଚରମ ତୁମେ... ॥୪॥

#### ସକଳ ଲଭିଛି ପ୍ରଭୁ ତୁମକୁ ପାଇ

ସକଳ ଲଭିଛି ପୃଭୁ ତୁମକୁ ପାଇ ଭୁଲିଛି ଦୁଃଖ କଷଣ ତୁମକୁ ଚାହିଁ (॥) ସକଳ... ॥୦॥

ନୟନ ଖୋଲିଲେ ତୂମେ ନୟନ ବୁଜିଲେ ତୂମେ ଦୁଃଖ ବେଦନାରେ ତୁମେ ସୁଖ ସପନରେ ତୁମେ (॥) ତୁମ ଛଡା ଧରା ଧାମେ ପ୍ରିୟ ମୋ ନାହିଁ (୨ଥର) ସକଳ ... ॥୧॥

ନ ଦେଖି ନାବେ ନାଉରୀ ବସିଥିଲି ମନମାରି ଆସିଲ ବେଦନା ହାରି ଘାଟେ ଲଗାଇଲ ତରୀ (॥) ଦେଖି ସେ କଳା ଭଉଁରୀ ଭୟ ମୋ ନାହିଁ ( ୨ଥର) ସକଳ... ॥ १॥

ଭୁଲାଇ ଭବ କଞ୍ଜାଳ ମନ ପ୍ରାଣେ ଦେଇ ବଳ ସିଞ୍ଚିଲ ଶାନ୍ତିର ବାରି ମିଟାଇ ଦୃଃଖ ଅନଳ (॥) ତବ ଚରଣ କମଳ ସବୁ ମୋ ପାଇଁ (୨ଥର) ସକଳ... ॥୩॥

### ସ୍ପର୍ଗ ଯାହାର ସିଂହାସନ

ସ୍ୱର୍ଗ ଯାହାର ସିଂହାସନ ପୃଥିବୀ ଯାହାର ପଦ ପୀଠ ମୁଁ ସେହି ପ୍ରଭୁଙ୍କ ପଦ ତଳେ ଭକତି ଅଞ୍ଜଳି ଢ଼ାଳେ ସ୍ୱର୍ଗ ଯାହାର...॥୦॥

ଯେ ନାମରେ ଅନ୍ଧ ଦେଖିଥିଲା ଯେ ନାମରେ ଛୋଟା ଚାଲିଥିଲା (॥) ସେହିତ ମୋହର ଜୀବନ ସଂଗୀତ (୨ଥର) ଯେ ନାମେ ମୁଁ ଶାନ୍ତି ପାଏ (୨ଥର) ସ୍ୱର୍ଗ ଯାହାର ... ॥୧॥

ଯେ ନାମକୁ ମୃତ୍ୟୁ ଡରିଥିଲା ପାପ ଅମାନିସା ବହିଗଲା (॥) ପାଇଛି ସେ ନାମ ଦେଇ ମୋ ଜୀବନ (୨ଥର) ତାଙ୍କରି ଚରଣ ତଳେ (୨ଥର) ସ୍ୱର୍ଗ ଯାହାର... ॥ ୨॥

# ସାଧନାର ପଥେ ୟଲରେ ସାଧକ

ସାଧନାର ପଥେ ଷଲରେ ସାଧକ ସାଧନାର ପଥେ ଷଲ ସେତେ କଷ୍ଟ ଆସୁ ଳୀବନେ ତୋହର ( ୨ଥର) ସେସବୁ ଆତେଇ ଷଲ ( ୨ଥର)

> ଗୁରୁଙ୍କ ବାକ୍ୟକୁ ମନ୍ତର କର ଅନ୍ତକରଣରେ ତାଙ୍କୁ ସୁମର ଜୀବନ ସଂଗ୍ରାମେ ସଂଘର୍ଷ କର ତିଳକ ହୋଇବ ତୋ ବିଜୟର ସାଧନାର .....॥୧॥

ଝଡ଼ ଝଞ୍ଜା ଯଦି ଆସେ ଜୀବନେ ଆନନ୍ଦିତ ହୁଅ ତା ଦେଖି ମନେ ଲକ୍ଷ ପଥେ ସଦା ଥିବୁ ଆଗେଇ ବାଧା ବିପରିକୁ ଆଡ଼େଇ ଦେଇ ସାଧନାର ......॥ ୨॥

ଯେ ଯାଏଁ ନ ମିଳେ ପ୍ରଭୂ ମନ୍ଦିର ସାଧକ ହେ ଥକି ନ ଯା ଏଥର ଶେଷରେ ହୋଇବ ପ୍ରଭୂ ମିଳନ ସାଗରେ ସରୀତା ସେପରି ଲୀନ ସାଧନାର....।୩॥

#### ସ୍ୱାଗତମ୍ ମା ସ୍ୱାଗ<sub>ତମ୍</sub>

ସ୍ୱାଗତମ୍ ମା ସ୍ୱାଗତମ୍ (୨ଥର) ସୃଷ୍ଟିପାଳୀ ଜନନୀ ମାଗୋ ଘେନ ପ୍ରଣାମମ୍ ସ୍ୱାଗତମ୍..... ॥୦॥

ତବ କରୁଣାର ରେଣୁରେ ଆମେ ଜନମି ଏ ଧରା ବୁକୁରେ (॥) ମାଗୋ କରୁଣାମୟୀ, ତୂମ ତୁଳନା ନାହିଁ (୨ଥର) ଦିଅ ପଦେ ସ୍ଥାନ କନ୍କ ଜନମ୍ ସ୍ୱାଗତମ୍......॥୧॥

ଲୀଳାମୟ ସଙ୍ଗେ ଅବତରୀ ଲୀଳା ଦେଇଛ କଗତେ ବିତରି (॥) ଗାଇ ତୁମରି ଗାଥା, ପଦେ ରଖିଗୋ ମଥା ( ୨ଥର) ଆମେ ଲଭିବୁ ଆନନ୍ଦ ପରମ ସ୍ୱାଗତମ୍......॥ ॥ ॥

ଯୁଗେ ଯୁଗେ ତୁମେ ଆସ ମା କୀବନର ପଥେ ହୋଇ ସାହା (॥) କେତେ ଦୁଃଖୀ ଜୀବନ, କରିଛ ତୁମେ ଧନ୍ୟ (୨ଥର) ତୁମ ଚରଣରେ କୋଟି ପ୍ରଣାମ୍ ସ୍ୱାଗତମ୍.....॥୩॥

#### ହେ ମାତା

ହେ ମାତା... ବନ୍ଦନ କରେ ଚରଣେ କରୁଣାମୟୀ ଜଗଦ୍ମାତା ( ୨ଥର) ହେ ଈଶ୍ୱରୀ ତବ କୃପାଦାନେ ( ୨ଥର) ଗାଇବି ତୁମରି ପୁଣ୍ୟ ଗାଥା ହେ ମାତା... ॥୦॥

> ନୟନେ ମୋ ବିରାଜିତ ତବ ଶୁଭ କାନ୍ତି ପରାଣେ ଲଭିଛି ମାତ ଅମୀୟ ପ୍ରଶାନ୍ତି (॥) ଆଶିଷ ଦାୟିନୀ ମାଗୋ (୨ଥର) ଲିଭିଛି ଜୀବନୁ ଦୁଃଖ ବ୍ୟଥା ହେ ମାତା... ॥୧॥

ଦେବକୁଳ ପ୍ରସବିନୀ ନିଖିଳ ଆଶ୍ରୟ ପୁରୁଷୋତ୍ତମ ବଲ୍ଲଭୀ ସକଳ ସହାୟ (॥) ଭୁବନ ମୋହିନୀ ମାଗୋ (୨ଥର) ତୁମେ ମୋ ଜୀବନ ତ୍ରାତା ହେ ମାତା ... ॥୨॥

#### ହେ ଦୟାମୟ

ହେ ଦୟାମୟ, ବିନତୀ ଏଡିକି (୨ଥର) (ପ୍ରଭୁ ହେ) ଦିଅ ଡୁମ ଶୁଭାଶିଷ (୨ଥର) ଧନ ମାନ ଯଶ, ଲୋଡା ନାହିଁ ମୋର (୨ଥର) (ପ୍ରଭୁ ହେ) କର ପ୍ରଭୁ ଡୁମ ଦାସ (୨ଥର) ହେ ଦୟାମୟ... ॥୦॥

ସଂସାର ମାୟାରେ ଅଥଳ ସାଗରେ (୨ଥର) ଦିଗହରା ମୂଢ଼ ପାନ୍ତୁ (୨ଥର) କାଳର କବଳୁ ତୁମେ ସିନା ପ୍ରଭୁ (୨ଥର) ରଖିପାର କଗନ୍ନାଥ (ପ୍ରଭୁ ହେ) କର ପ୍ରଭୁ ତୁମ ଦାସ (୨ଥର) ହେ ଦୟାମୟ ... ॥୧॥

ଆକୁଳେ ଡାକୁଛି ରଖ ଚକ୍ରଧାରୀ (୨ଥର) ଭାଜିଛି ମୋ ଅହଙ୍କାର (୨ଥର) ସ୍ନୁରିବି ନିରତ ତବ ନାମ ରୂପ (୨ଥର) ଦୟାମୟ ବିଶ୍ୱୟର (ପ୍ରଭୁ ହେ) କର ପ୍ରଭୁ ତୁମ ଦାସ (୨ଥର) ହେ ଦୟାମୟ ... ॥୨॥

## ହେ ପ୍ରାଣର ପ୍ରାଶେଶ୍ୱର

ହେ ପ୍ରାଣର ପ୍ରାଣେଶ୍ୱର ମୋ ପ୍ରାଣ ବାନ୍ଧବ ତୁମ ବିନା କେହି ନାହିଁ ଜୀବନେ ମୋହର (॥) ଦରଦୀ ଦଯାଲ୍ ଭକତ ବସଳ (୨ଥର) ପ୍ରଣତି ଜଣାଏ ପ୍ରଭୁ ଚରଣେ ତୁମର (୨ଥର) ହେ ପ୍ରାଣର ପ୍ରାଣେଶ୍ୱର ... ॥୦॥

ଅନ୍ତରେ ସୁରିଲେ ଡୁମେ ଅନ୍ତର୍ଯ୍ୟାମୀ ଚିଉରେ ଚିନ୍ତିଲେ ଡୁମେ ଚିନ୍ତାମଣି ା ଭାବରେ ଭାବିଲେ ଡୁମେ ଭାବଗ୍ରାହୀ ଡୁମରି ଲୀଳାକୁ ବୁଝି ହୁଏନାହିଁ (॥) ତୁମେ ଲୀଳାମୟ ପ୍ରଭୁ ଲୀଳାର ସାଗର ଲୀଳା ଯେ ଡୁମରି ଦିଶେ ବଡ଼ ବିଚିତର ହେ ପ୍ରାଣର ପ୍ରାଣେଶ୍ୱର... ॥ ୧॥

ଏ ମାୟା ସଂସାରେ କେ ନୁହେଁ କାହାର ସବୁ ସେ ଅଟଇ ସତେ ସାତପର୍ ତୁମେ ମୋ ନିକର ଅତି ଆପଣାର କୋଟି ଜନମର ପ୍ରାଣର ଠାକୁର (॥) ଜନମ ଦେଇଛ ସେବେ ମୋତେ ପ୍ରଭୁ ତୂମରି ସେବାରେ ଥାଉ ଜୀବନ ମୋହର ହେ ପ୍ରାଣର ପ୍ରାଣେଶ୍ୱର... ॥ ୨ ॥ COTON

## ଆମି ବେଦ୍ ବିଧ୍ ଛାଡ଼ି

ଆମି ବେଦ୍ ବିଧି ଛାଡ଼ି ବେଦନା ହାରୀ ହରିନାମ୍ ସଦା ଗାଇରେ... ବେଦ୍ ବିଧି... ହୟ ହୋକ୍ ମମ ଲକ୍ଷ କନମ୍ ତାହେ କୋନୋ କ୍ଷତି ନାଇରେ ବେଦ୍ ବିଧି...... ॥୦॥

ଘନାମ୍ଭୁ ନିନ୍ଦିତ ଶାନ୍ତ ସୁନିଲ୍ ମୁର୍ତ୍ତି ଯେନୋ ଭୁଲିନାକୋ ତିଲ୍ (॥) ନିତ୍ୟ ନୃତ୍ୟ କରେ ଯେନୋ ମୋର୍ (୨ଥର) ତିତ୍ତ ଯମୁନା ପୁଲିନେ ରେ... ବେଦ୍ ବିଧ୍......॥ ॥ ॥

ସକ୍ଷ୍ୟା ଆମାର୍ ବନ୍ଧା ହୋକ୍ ତାହେ ନାହିଁ କୋନୋ ଶୋକ୍ ତର୍ପନ୍ ଜଲ୍ ଅର୍ପନ୍ ବିନା ରୋଧୁକ୍ ପିଡ୍ଡି ଲୋକ୍ (॥)

ଘୋସୁକ୍ ଜଗତେ ନିନ୍ଦା ଖ୍ୟାତି, ତୋସୁକ୍ ରୋଧୁକ୍ ସଜନ ଗ୍ୟାତି (୨ଥର) ଆମି କିନ୍ଦୁତେଇ ବିମଲଭାତି (୨ଥର) ଭୁଲିତେ ନାରିଗୋ ଭାଇରେ... ବେଦ୍ ବିଧ୍...... ॥୨॥

କ୍ଷୁକ୍ଧ ପରାନ୍ ଷହେ ଗୋବିନ୍ଦ, ନାମାମ୍ଡିତେ ସଦା ଭାସିତେ ( ୨ ଥର ) (ଆହା) ମୁଗ୍ଧ ମାନୁଷେ ଆଭ ଭୁଲିଏ ହରି ହରି ବୋଲି ନାଚିତେ ( ୨ଥର ) ହରି ବୋଲ... ହରିବୋଲ... ହରିବୋଲ... ହରିବୋଲ ଷହେନାକୋ ଆର୍ ସୋର୍ଯ୍ୟ ବୀର୍ଯ୍ୟ ଷହେନା ପରାନ୍ ବିଶାଲ ରାଜ୍ୟ ଧର୍ମ ଅର୍ଥ କାମ୍ ସକଲି ତେଜ୍ୟ ( ୨ଥର ) ମୁକ୍ତିର ମୁଖେ ଛାଇରେ... ବେଦ୍ ବିଧ୍....... ।୩॥

### ଆମାର୍ ହ୍ରିଦ<sup>ୟ</sup> ବୀନା

ଆମାର୍ ହ୍ରିଦୟ ବୀନା ତୁମି ବିନା ବାଳବେ କେମନ୍ କୋରେ (॥) (ଆମାର) ସକଲ୍ ବେଥା ଯାବେ ଦୂରେ ( ୨ଥର) ତୋମାର୍ ନାମେର୍ ସୁରେ ସୁରେ ଆମାର୍...... ॥୦॥

ଭୂଲ୍ କୋରେଛି ଅନେକ କାଜେ ପଥ୍ ଭୂଲେଛି ପଥେର୍ ମାଝେ (॥) (ଆମି) ପାଇନି କିଛୁଇ ଯୌବନେରି ( ୨ଥର) ମିଥ୍ୟେ ଅହଂକାରେ (ଆମାର୍) ସକଲ୍ ବେଥା ଯାବେ ଦୂରେ ( ୨ଥର) ତୋମାର୍ ନାମେର୍ ସୁରେ ସୁରେ ଆମାର୍...... ॥ ୧ ॥

ଗୟା, କାଶୀ, ଶ୍ରୀବିଦ୍ଧାବନ୍, ବିଥାୟ ଘୁରେଛି ରେଖେର୍ ନେଶାୟ ପୁତୁଲ୍ କିନେ, ଘର୍ ସାଚିଏଛି (॥) ମୋଚ୍ଲୋନା ମନ୍ ତୋମାର୍ ଭାବେ ମୋର୍ଛି ଘୁରେ ସେଇ ଅଭାବେ (॥) (ଆମାର୍) ଭାବେର୍ ଘରେ ଚୋର୍ ଜୁକେଛେ (୨ଥର) ଭୂଲେର୍ ଅନ୍ଧକାରେ (ଆମାର୍) ସକଲ୍ ବେଥା ଯାବେ ଦୂରେ (୨ଥର) ତୋମାର୍ ନାମେର୍ ସୁରେ ସୁରେ

# ଆଶୀର୍ବାଦେର୍ ଶାଓନୋ ଧାରା

ଆଶୀର୍ବାଦେର ଶାଓନୋ ଧାର। ଝରୁକ୍ ଧରନୀତେ (॥) ବିଶ୍ୱପିତାର୍ ଅଭୟ ମନ୍ତ (୨ଥର) ସବାରେ ଜାନାତେ...ଝରୁକ୍ ଧରନୀତେ ଆଶୀର୍ବାଦେର୍.....॥୦॥

ତୋମାରି ଦୀପ୍ତ ଇଷ୍ଟ ରାଗେ ହିଦୟ ଆମାର୍ ଉଠୁକ୍ କେଗେ (॥) (ଦୟାଲ୍) ଚିଭେ ଆମାର୍ ଲାଗୁକ୍ ଦୋଲା (୨ଥର) ଆଲୋର୍ ଦୋଲାତେ.... ଝରୁକ୍ ଧରନୀତେ ଆଶୀର୍ବାଦେର୍.....॥୧॥

ଦେଖିନାଇ ତାରେ ଖୁଳିଆ ବେଡ଼ାଇ ଉଦାସ୍ ପ୍ରାନେ ତୋମା ପାନେ ଷଇ (॥) (ଦୟାଲ୍) ତୁମି ଆହ୍ରୋ ତାଇ ଭରସା ଆମାର୍ (୨ଥର) ଏ ନୟନ୍ କୁଡ଼ାତେ...ଝରୁକ୍ ଧରନୀତେ ଆଶୀର୍ବାଦେର୍......॥୨॥

ନିତ୍ୟ ତୋମାର୍ ପ୍ରାନ ଦୀପନାୟ ଅବସ୍ ପ୍ରାନେ ଚେତନା ଜାଗାୟ (॥) (ସେ ଯେ) ପରମ ପିତାର୍ ବନ୍ଦନା ଗୀତି ( ୨ଥର) ବାଜାଓ ବୀନାତେ...ଝରୁକ୍ ଧରନୀତେ ଆଶୀର୍ବାଦେର୍.....॥୩॥

## ଆବାର୍ ଭାରତେ ଜାଗେ ଜୟ ଗାନ୍

ଆତାର ଭାରତେ ଜାଗେ ଜୟ ଗାନ୍ ଫୂର୍ଟ ଦିଗତେ ନଟଜାହାନ୍ ଜୋଟି କୋଟି କଣ୍ଲେ ଗାଇଛେ ଆଜିକେ ଟ୍ରେ ପୁରୁଷୋଇମମ୍ ( ୨ଥର) ଆହାର...... | | 0 | 1

ତାଳ ଶୂନି ସନ୍ଧ୍ୟାୟ ଘରେ ଘରେ ବିନତୀର୍ ଧିନୀ ଶାଖି ବାଳେ ଉଲୁ ଦେୟ ପ୍ରନମିୟା ଆର୍ଯ୍ୟ ରମନୀ (11) ନାହିଁ ଆର୍ ଭୟ ହବେ ଧର୍ମେର୍ ଜୟ (୨ଥର) ଓଳ୍କ ଶୋନୋ ତାରି ଆହବାନ୍ ଆବାର...... | | 1 | 1 |

ତ୍ତଶାୟ ନିଶାୟ ପୁନ୍ୟ ଭଳନେର୍ କରୋ ଆୟୋଜନ୍ ଟୀଚନେର୍ ସାର୍ ଆଜି ଅନୁରାଗେ ଇଷ୍ଟେ ଭରନ୍ (TI) ନାହିଁ ଆର୍ ଭୟ ହବେ ଧର୍ମେର୍ ଜୟ (୨ ଥର) ଜେ ଶୋନୋ ତାରି ଆହବାନ୍ ଆବାର...... 11911

ଉଦୟ ଅଚଳେ ଜାଗେ ନାବାରୁନ୍ ରକ୍ତିମ୍ ଆଭାୟ ଚିହଗ କାକଲି ଆଜି ଜୟ ଜୟ ଅନୁକୂଲ ଗାୟ(।।) ନାହିଁ ଆର୍ ଭୟ ହବେ ଧର୍ମେର୍ ଜୟ (୨ଥର) ଓଇ ଶୋନୋ ତାରି ଆହବାନ୍ ଆବାର......।।୩।।

### ଏଇ ପୃଥିବୀର୍ ପାନୁଶା<sub>ଲାୟ</sub>

ଏକ ପୃଥିବୀର୍ ପାକୁଶାଲାୟ ବାର ବାର୍ ଆସା ଯାପ୍ତା (॥) ହେଥାୟ କେହୋବା ହାରାୟ କେହୋ ଖୁକେ ପାୟ (୨ଥର) ଜୀବନେର୍ ଷଣ୍ଢା ପାସ୍ତା ଗୋ... ବାର୍ ବାର୍ ଆସା ଯାସ୍ତା... ଏକ୍କ ପୃଥିବୀର୍.....॥୦॥

প্রনিনের ଏଇ ଚଲାର୍ ପଥେ କେହୋ ଭୋରେନେୟ ଝୁଲି କେହବା ଆବାର୍ ହାରିଏ ଫେଲେ ନିଏଆସା ମନିଗୁଲି (॥) କେହବା ଆବାର୍ ଫୁଲ୍ ସମ ଫୋଟେ (୨ଥର) ପେୟେ ସେ ମଲୟ ହାସ୍ତ୍ୱା ଦେବତାର୍ ପାୟେ ନିକେରେ ବିଲାଏ ପେଲୋ ଯା ଜୀବନେର୍ ଷଣ୍ଡା ଗୋ... ବାର୍ ବାର୍ ଆସା ଯାଷ୍ଡ୍ୱା...

ଷଡ଼ିରପୁ ଜାଲେ କେହୋବା ଅକାଲେ ପଥ ହାରା ହୋୟେ କାଁବେ ବିଷୟ ବାସନା ଅଜଗର ହୋୟେ ପାକେ ପାକେ ତାରେ ବାଁଧେ (॥) ଏସବ ଦେଖିଆ ମୋରି ସେ ଭାବିଆ ( ୨ଥର) ସୁଧୁକି ତରନୀ ବାସ୍ତ୍ୱା ନାକି ଯାର୍ ତରେ ଆସା ତାକେ ଭାଲୋବାସା ତାରି ଗୁନଗାନ ଗାଓ୍ୱା ଗୋ... ବାର୍ ବାର୍ ଆସା ଯାଓ୍ୱା ଏଇ ପୃଥିବୀର୍.....॥ ୨॥

### ଓଇ କେ ଡାକେ ଆମାରେ

ଓଇ କେ ତାକେ ଆମାରରେ ବ୍ୟାକୁଲ ଉଦାସୀ ସୁରେ (॥) ଓଇ କେ ତାକେ ...... ॥୦॥

ଦୂରାଗତ ସେଇ ସେ ସୂରେ ଆଜି ପ୍ରଭାତେର ସୂର୍ଯାଲୋକେ (॥) ଝଙ୍କ୍ରିତ ମୋର ଚିତ୍ର ବେଦନାୟ ଉଠେ ଶିହରେ ଓଇ କେ ଡାକେ ...... ॥୧॥

ନୟନେ ଦେଖିନି ଯାରେ ଆଳି ପ୍ରତ୍ୟୁଷେ ସହସା କେନୋ ମୋରେ ସେ ମଗନ କରେ (॥) ତାହାରି ଗୋପନ ପରଶେ ସହସା ସୁଧା–ଆବେଶେ ନିଃସୀମ ବିରହେ ହାୟ ଦିଲ ଯେ ମଗନ କୋରେ ଓଇ କେ ଡାକେ......॥ ୨ ॥

# <sub>ଓ</sub>ରେ ଆମାର୍ ମନ୍ ଓରେ ଭୋଲା ମନ୍

ଓରେ ଆମାର୍ ମନ୍... ଓରେ ଭୋଲା ମନ୍ ( ୨ଥର) ତୁଇ ଭବ ଭୟେ ଭିତ କେନୋ ସଦାରେ ଏମୋନ୍ ଓରେ ଭୋଲା ମନ୍... ଓରେ ଆମାର୍.....।।।।।

ଦୟାଲ୍ ଆହ୍ରେନ୍ ତୋର୍ ମାଥାର୍ ଉପରେ ସାଧ୍ୟ କି କୋନୋ ପାପ୍ ପରଶିବେ ତୋରେ (॥) ଏବାର୍ (ନିଶି ଦିନ୍ ପ୍ରେମ ଭରେ) ( ୨ ଥର) ଭାବ ଶ୍ରୀ ଚରନ୍... ରେ ଓରେ ଭୋଲା ମନ୍ ଓରେ ଆମାର୍...... ॥ ୧ ॥

ଆଧା ଆଧା ନିବେ ତାର୍ ସେବକେର ପାନେ ହୟ ନାଇଁ ଏ ଭୁବନେ କୋଭୁ କୋନ ଖାନେ (॥) ଏବାର୍ (ଭକତ ବସଲ ପଦେ) (୨ଥର) ନେଓ ଗୋ ଶରନ୍...ରେ ଓରେ ଭୋଲା ମନ୍ ଓରେ ଆମାର୍...... ॥୨॥

### ଓଗୋ ସୁନ୍ଦର ଅପରୂପ

ଓଗୋ ସୁନ୍ଦର ଅପରୂପ ପ୍ରିୟତମ ନମୋ ନମୋ ନମୋ ନମୋ ନମୋ ଆଧାଁରେର୍ ପଥେ ତୁମି ଆଲୋକ ମମ ନମୋ ନମୋ ନମୋ... ନମୋ ନମୋ ଓଗୋ ସୁନ୍ଦର... ॥୦॥

ଜୀବନେର୍ ପ୍ରତିକୂଲେ ତୁମି ଅନୁକୂଲ୍ ସକଲ୍ ଭୂଲେର୍ ମାଝେ ଚିର ନିର୍ଭୂଲ୍ ଆମାର୍ ଜୀବନେ ତୁମି ଅନୁପମ ନମୋ ନମୋ ନମୋ... ନମୋ ନମୋ ଓଗୋ ସୁନ୍ଦର... ॥୧॥

ସତ୍ୟତେ ଶ୍ରୀହରି ତ୍ରେତୟାତେ ରାମ୍ ଦ୍ୱାପରେର୍ ଶ୍ରୀକୃଷ ନବଘନ ଶ୍ୟାମ୍ ଶାଶ୍ୱତ ସନାତନ ମନୋରମ ନମୋ ନମୋ ନମୋ... ନମୋ ନମୋ ଓଗୋ ସୁନ୍ଦର ... ॥ ୨ ॥

ଶ୍ରୀ ଗୌରାଙ୍ଗ ରୂପେ ତୁମି ପଡିତପାବନ୍ ଶ୍ରୀ ରାମକୃଷ ରୂପେ ତୁମି ନର ନାରାୟନ୍ ଅନୁକୂଲ୍ ରୂପେ ତୁମି ପୁରୁଷୋତ୍ତମ ନମୋ ନମୋ ନମୋ... ନମୋ ନମୋ ଓଗୋ ସୁନ୍ଦର... ॥୩॥

# ଓଠୋ କାଗୋ ଉଜ୍ଜ୍ୱଲ ନିସଂକୋଚ୍

ଓଠୋ ଜାଗୋ ଉଜ୍ବଲ ନିସଂକୋଚ୍ (୨ଥର) ଶୋନୋ ଜୟ ଝଙ୍କାୟ ଆଜି ମୁଖରିତ ଜୀବନେର ସାମଗାନ୍ ଜାଗୋ ନିର୍ଭିକ୍ ଦ୍ୟାଖୋ ଦଶଦିଗ୍ (୨ଥର) ଝଙ୍କିତ କୋରେ ବାଜେ ଓଇ ଜୟଗାନ୍ ଆଜି ମୁକ୍ତିର୍ ଡ଼ାକ୍ ଏଲୋ ପାଦେ ପାଦେ ଟାନ୍ ଓଠୋ ଜାଗୋ..... ॥୦॥

ନାଇ ନାଇ ରାତ୍ରି ରେ ଅବୋଧ ଯାତ୍ରୀ ଦୁଃସହ ଦୂରଦିନ୍ ଚିର ଅବସାନ୍ (॥) ନାମଗାନ ମନ୍ଦ୍ରିତ ନବଜୟ ଯାତ୍ରାୟ ଦ୍ୟାଖୋ ସୁଧୁ ହୋଲୋ ଆଜି ନବ ଅଭିଯାନ୍ ଓଇ ପୁରୁଷୋତ୍ତମ ଜୟ ଅଭିଯାନ୍ ( ୨ଥର) ଓଠୋ ଜାଗୋ......॥ ୧॥

ଆୟ ଛୁଟେ ଆୟ ଆୟ ମୁକ୍ତିର୍ ଅଧ୍ୟାୟ ସାରଥ୍ ଏଲେନ୍ ଫିରେ ଓଠେ କୟଗାନ୍ (॥) ଅନ୍ତିମ୍ ତନ୍ଦ୍ରାର୍ ଚିର ଅବସାନେ ଆଜି ମୁଛେ ଗେଲୋ ସବ୍ ଶୋକ୍ ଦୁଃଖ ଅପମାନ୍ ଦ୍ୟାଖୋ ସୁଧୁ ହୋଲୋ ଆଜି କୟ ଅଭିଯାନ୍ ଓଇ ପୁରୁଷୋଢମ କୟ ଅଭିଯାନ୍ ଓଠୋ ଜାଗୋ......॥୨॥

ଶଂକାର୍ ବିଭୀଷିକା ହବେ ହବେ ଲୁସ୍ତ ଅନୁରାଗେ ଫୁଲ୍ଲୋ ବ୍ୟାଥା ଦୂର୍ଭୁକ୍ତ (॥) ରାତ୍ରିର୍ ଅବସାନେ ଯାତ୍ରୀରା କ୍ଷଣାନେ ଏଇ ମହାଯାତ୍ରାୟ କର ଯୋଗଦାନ୍ ଦ୍ୟାଖୋ ସୁଧୁ ହୋଲୋ ଆଜି କ୍ଷୟ ଅଭିଯାନ୍ ଓଇ ପୁରୁଷୋତ୍ତମ କ୍ଷୟ ଅଭିଯାନ୍ ଓଠୋ କାଗୋ......॥୩॥

### ଓରେ ଓ ମାଝୀ ଭାଇ

ଓରେ ଓ ମାଝୀ ଭାଇ ଗୁରୁ ନାମେ ପାଲ୍ ଡୁଲେ ଚଲ୍ ଭବ ପାରେ ଯାଇ (॥) ମାୟାନଦୀ ପାରି ଦିତେ କାନାକୋଡ଼ି ନାଇ (୨ଥର) ଗୁରୁବିନା ଆପନ୍ ଜନା ବଲ୍ନା କୋଥାୟ ପାଇ ଓ ମାଝୀ ଭାଇ......॥।॥

> କି କୋରିତେ ଭବେ ଏଲି ଭୁତେର୍ ବୋଝା ବୋୟେ ଗେଲି... (॥) ଲାଭେ ମୁଲେ ସବ୍ ହାରାଲି (୨ଥର) ପେଲି ସୁଧୁ ଛାଇ ଓ ମାଝି ଭାଇ......॥୧॥

ଦିନେ ଦିନେ ଗେଲୋ ବେଲା ଘନାଲୋ ଆଧାଁର୍ ଯୌବନେ ଲାଗିଲେ ଭାଟି ଆସେନା କୋଆର୍ ଭାଇରେ ଆସେନା କୋଆର ... (॥) ଏଖୋନୋ ତୋର୍ ସମୟ ଆଛେ... ଯାଓନାରେ ମନ୍ ଗୁରୁର୍ କାଛେ... (॥) ପାପୀ ତାପି ତ୍ରାଇଛେ (୨ଥର) ଶ୍ରୀ ଗୁରୁ ଗୋସାଁଇ ଓ ମାଝୀ ଭାଇ.....॥ ॥ ୨॥

### କେ ବଲେ ତୁମି ନାଇ

କେ ବଲେ ତୁମି ନାଇ..... (୨ଥର) ଆ.....ଆ..ଆ ନୟନେର୍ ମାଝେ ନେଇ ତୁମି ହାୟ ହ଼ିଦୟ ନିଏଛୋ ଟାନ୍ ଅବୁଝ୍ ଏ ମନ୍ ବିଲାପ୍ କରେ ତୁମି ନାଇ, ତୁମି ନାଇ କେ ବଲେ..... । । ୦ । । ଯକନ୍, ଯାକନ୍, ଇଷ୍ଟଭ୍ରିତି ମୋଦେର୍ ଶିଖାଲେ ତୁମି (11) ଆଧାଁରେର୍ ପଥେ ଆଲୋର୍ ଦିଶା ମୋଦେର୍ ଦେଖାଲେ ତୁମି (।।) ତୋମାରି ଦେଖାନୋ ପଥେଇ ମୋରା ପଥ୍ ଚଲି ଆକ୍ ତାଇ (।।) ଅବୁଝ୍ ଏ ମନ୍.... କେ ବଲେ.....ା!୧।। ପତୀତ୍ ଜାନାୟ କରିତେ ପାବନ୍ ଧରାୟ ଏଲେ ତୁମି ଧନ୍ୟ ହୋଲୋଗୋ କତୋନା ମାନୁଷ୍ ତୋମାର୍ ଚରନ ଚୁମି (।।) ଛିଲୋନା ବିଭେଦ୍ ତୋମାର୍ କାଛେ, କେ ଆପନ୍ କେ ବା ପର୍ ( ୨ ଥର) ହାସିମାଖା ମୁଖେ ଭରାତେ ତୁମି, ସକଲେରି ଅନ୍ତର୍ ( ୨ଥର) ଆଦର୍ ମାଖାନୋ ତୋର୍ମାର୍ ବାନୀ ଏଖୋନୋ ଶୁନିତେ ପାଇ (।।) ଅବୁଝ୍ ଏ ମନ୍.... କେ ବଲେ..... ।।୨।।

# କତ ଜନମେର୍ ପୁନ୍ୟ ଫଲେ

କତ କନମେର୍ ପୂନ୍ୟ ଫଲେ ଏସେଛି ତୋମାର୍ ଚରନ୍ ତଲେ ତୁମି ଅକୁଲେର୍ କୂଲ୍ ଠାକୁର୍ ଅନୁକୂଲ୍ (୨ଥର) ପୁରୁଷୋରମ ଭଗଚାନ୍ (୨ଥର) କତ ଜନମେର୍.....॥୦॥

ଦାଓ ପ୍ରେମ୍ଭୋକ୍ତି, ଦାଓ ଭାଲୋବାସା ନିରାଶାର ବୁକେ ଦାଓ ବାଁୟରି ଆଶା ଳୀବନେର ସୁଖ୍ ଦୁଃଖ୍ ସକଲି ଭୂଲେ ( ୨ଥର) ଗାଇବୋ ମୋରା ତବଗାନ୍... ପୁରୁଷୋଭମ ଭଗବାନ୍ (୨ଥର) କତ ଜନମେର୍.....॥୧॥

ଅହଲ୍ୟା ମାନବୀ ହୋଲୋ ତୋମାର୍ ଚରନ୍ ଧୂଲାୟ ଜଗାଇ ମାଧାଇ ଉଧାରିଲୋ ଏସେ ନଦିଆୟ ଆବାର୍ ଏଲେ ଧରା ତଲେ ଡ଼ାକେ ଯାରା ଦୃହାତ୍ ତୁଲେ ତାଦେରେ କୋରିତେ ପରିତ୍ରାନ୍... ପୁରୁଷୋଉମ ଭଗବାନ୍ ( ୨ଥର) କତ ଜନମେର୍......। ୨॥

# କି ଦିଏ ପୂଜିବୋ ରାଡୁଲ୍ <sub>ଚରନ୍</sub>

କି ଦିଏ ପୂକିତୋ ରାତୁଲ ଚରନ୍ କି ଦିଏ କରିତୋ ଅର୍ଚ୍ଚନା (11) ଶିଖ୍ଏ ଦେଓ ପୁଭୁ ଶିଖ୍ୟେ ଦେଓ ଦେଓ ଶିଖ୍ୟେ ତୋମାର ଭଳନା କି ଦିଏ...... 11011

ଭକ୍ତି ବୋଲେ କିନ୍ଧୁ ନାହିଁ ପୂନ୍ୟ ଫଲ୍ ତୁମି ଛାଡ଼ା କିନ୍ଧୁ ନାଇ ଆମାର୍ ସମ୍ପଲ୍ (୮୮) ଅଧମାଧମେର୍ ତୁମି ମାତ୍ର ବଲ୍ (୨ଥର) ତୁମି ଛାଡ଼ା କିନ୍ଧୁ ଜାନିନା..... ଦେଓ ଶିଖିୟେ ତୋମାର୍ ଭକନା କି ଦିଏ...... ୮୮୧ ୮୮

## ଗୁରୁପଦେ ମନ୍ ଆ**ଛେ** ଯାର୍

ଗୁରୁପଦେ ମନ୍ ଆଛେ ଯାର୍ ପାରେ ଯାଓ୍ୱାର୍ ଭାବ୍ନାକି (॥) ସତ୍ସଙ୍ଗେ ଆଛେ ଯାରା... ( ୨ ଥର) କୁସଙ୍ଗ ତାର୍ କୋର୍ବେ କି ଗୁରୁପଦେ......॥ ।। ।।

ଶ୍ରୀ ଚରନେର୍ ଧୂଲୋ ନିବୋ ସେ ଧୂଲେଇ ଘର୍ ବାନାବୋ (॥) ରାଧାର୍ ନାମେ ବେଡ଼ା ଦେବୋ ( ୨ ଥର) କୁ ବାତାସ୍ ମୋର୍ କୋର୍ବେ କି ଗୁରୁପଦେ......॥ ୧ ॥

ଅନୁକୂଲ ଚନ୍ଦ୍ର ବୋଲେ ଝାମ୍ପ୍ ଦିଲେ ଅଗାଧି କଲେ (॥) ରାଧାସ୍ୱାମୀ ରାଖ୍ବେ ତୋରେ ( ୨ଥର) ମରନ ତୋର୍ କୋର୍ବେ କି ଗୁରୁପଦେ......॥ ୨॥

ସଦ୍ଗୁରୁର୍ ସଙ୍ଗେ ଯାବୋ ସତ୍ନାମ ବିଲାଇବୋ (॥) ସତ୍ସଙ୍ଗେ ସତ୍ ହୋବୋ (୨ଥର) ଅସତ ମୋର୍ କୋର୍ବେ କି ଗୁରୁପଦେ.....॥୩॥

# ଗୁରୁ ମନ୍ଟାକେ ମୋର୍ ଦାଓ କୋରେ ଦାଓ

ଗୁରୁ ମନ୍ଟାକେ ମୋର୍ ଦାଓ କୋରେ <sub>ଦାଓ</sub> ସୂର୍ଯ୍ୟମୁଖୀର୍ ମତ ତୋମାର୍ ଚରନ୍ ଧୂଲା ମାଥାୟ ଆମାର୍ ଥାକେ ସେନୋ ନତ ସୂର୍ଯ୍ୟମୁଖୀର୍ ମତୋ ଗୁରୁ ମନ୍ଟାକେ... ॥୦॥

ଅନେକ୍ ଦିଲେ ଦୟାଲ୍ ଠାକୁର୍ ହୃଦୟ ବିନାୟ ବାଜେ ସେ ସୁର୍ (॥) ପରାନ୍ ଆମାର୍ ସେଇ ସୁରେ କୟ (୨ଥର) କଥା ଅବିରତ ସୂର୍ଯ୍ୟମୁଖୀର୍ ମତ ଗୁରୁ ମନ୍ଟାକେ... ॥९॥

ହାସିଦିଏ ଦୁଃଖ ବ୍ୟଥା ଜେନୋ ଭୂଲତେ ପାରି କୋଥାୟ ଆଛୋ ଦୟାଲ୍ ଠାକୁର୍ ଦିନବନ୍ଧୁ ହରି (॥) ଭବେର୍ ଖେଲା ଖେଲତେ ଗିୟେ (ଦୟାଲ୍) ଜେନୋ ନାହିଁ ହାରି (୨ଥର) ଅନେକ୍ ଦିଲେ ... ଗୁରୁ ମନ୍ଟାକେ... ॥୨॥

#### ଚେତନା ବିହାରୋ ଆକାଶ

ଚେତନା ବିହାରୋ ଆକାଶ ( ୨ଥର) ମାୟା ମୋହ ଜାଲ ଛିଁତି ପ୍ରିୟପରମେରେ ସ୍ମରି ଉଦ୍ଗତି କର ଅଭିଲାଷ ଚେତନା ବିହାରୋ...... ॥୦॥

ପ୍ରାନେର ଠାକୁରେ ଧରେ ସଁପେ ଦାଓ ଆପନାରେ ଦୃଢ଼ କର ଭକତି-ବିଶ୍ୱାସ (॥) ଦୂର ହୋକ ସବ ଭୟ, ପାପ-ତାପ ହୋକ୍ କ୍ଷୟ ( ୨ଥର) ସ୍ୱସ୍ତିର ଉଦୟେ ଯାକ୍ ମରନେର ତ୍ରାସ୍ ଚେତନା ବିହାରୋ..... ॥ ୧॥

ଚଲିୟା ତାଁହାର ସନେ ଅଜପା ନାମେର ତାନେ ଦୂର କରେ ଯତ ବ୍ୟଥା, ଶୋକ, ଭୟ, ତ୍ରାସ (॥) ଜୀବନେର ଅଭିଯାନେ ମରନେର ଅବସାନେ ( ୨ଥର) ଶାନ୍ତି-ସୂରଭି ନିୟେ ବହିବେ ବାତାସ ଚେତନା ବିହାରୋ.... ॥ ୨ ॥

ପ୍ରଭୁର ଚରନ ଧରି ଯାବୋ ତାଁରେ ସେବା କରି ଆନନ୍ଦମୟ ହୋକ ଚେତନା ଉଦ୍ଭାସ (॥) ସାଥେ ଯାର ଦୟାମୟ ଯାୟ ତାର ସବ ଭୟ ( ୨ଥର) ଜରା-ବ୍ୟାଧି-ମରନେର ହୟଇ ବିନାଶ ଚେତନା ବିହାରୋ...... ॥୩॥

#### ଚଲୋ ମନ୍ ଦେଓଘରେତେ ଯାଇ

ଚଲୋ ମନ୍ ଦେଓଘରେତେ ଯାଇ...
ସୁଖ୍ ଦୁଃଖେର୍ କଥା ଗିଏ ଦୟାଲ୍ କେ ଜାନାଇ କତୋ (ପାପି ତାପି ପାର୍ ହୋଲୋ ଭାଇ)( ୨ଥର) ଓଇ ଚରନେ କୋରେ ପ୍ରନାମ୍ କପରେ ଜପରେ ମନ୍ ଅନୁକୂଲ୍ ନାମ୍ ( ୨ଥର) ଓଗୋ ଦୟାଲ୍ ତୋମାୟ ଡ଼ାକ୍ ଦିଏଛେନ୍ ଦୟାଲ ତୋମାୟ... ଓଗୋ ଦୟାଲ ତୋମାୟ ଡାକ୍ ଦିଏଛେନ୍ ଚଲୋ ଦେଓଘର୍ ଧାମ୍ କପରେ ଜପରେ ମନ୍ ଅନୁକୂଲ୍ ନାମ୍ ( ୨ଥର)...... ॥୦॥

> ଓ ତାକେ କରୋରେ ଶରନ୍ ମୁକ୍ତି ପାବେ ଧୋରିଲେ ତାର୍ ଅଭୟ ଚରନ୍ ତିନି (ଦ୍ୱାପରେତେ କୃଷ ସାକେନ୍)( ୨ ଥର) ତ୍ରେତାୟ ତିନି ସାକେନ୍ ରାମ୍ କପରେ କପରେ ମନ୍ ଅନୁକୂଲ୍ ନାମ୍ ( ୨ ଥର) ଚଲୋ ମନ...କତୋ ପାପି... ଓଗୋ ଦୟାଲ...

କପରେ କପରେ ମନ୍ ଅନୁକୂଲ୍ ନାମ୍ ( ୨ଥର)..... ॥ ୧॥

F 4

## କୀବନ୍ ଯଖନ୍ ଦିଲେଇ କେନୋ

ଜୀବନ୍ ଯଖନ୍ ଦିଲେଇ କେନୋ ମୋହ ମୁକ୍ତ କୋର୍ଲେନା ଓ ଦଯାଲ୍ ରାଧେର ଲୋଭେ, ଜନମ୍ ଗେଲୋ ସାଧନ୍ ସମୟ ପେଲାମ୍ନା ଏଇତୋ... ମମ ବେଦନା (॥) ଜୀବନ୍...... ॥୦॥

ପରାନ୍ ଯଖନ୍ ଦିଲେଇ କେନୋ ବାସନା ହିନ୍ କୋର୍ଲେନା ଓ ଦଯାଲ୍ କାମନା ତାପେ କଲୁଷ୍ଠ ହୋଲାମ୍ ନାମେର୍ କଲି ଫୁଟ୍ଲୋନା ଏଇତୋ ମମ... ଯାତନା... (॥) ଜୀବନ୍......॥୧॥

ଓ ଦୟାଲ୍ କାମନା କଲୁଷ୍ ଅନ୍ତରେତେ ସାଧନ୍ ମତ୍ତ ଜାଗିଏ ଦାଓ ( ୨ଥର) ( ॥) ମାଧନ୍ ମତ୍ତ ଜାଗିଏ ଦାଓ ( ୨ଥର) ( ॥) ମୋହ ମୋଲିନ୍ ଏ ଜୀବନେ ନାମେର୍ ପରଶ୍ ଲାଗିଏ ଦାଓ ଓ ଦୟାଲ ସେଇ ହବେ ମୋର୍ ସାତ୍ତ୍ୱନା ନାମେର୍ କଲି ଫୁଟିଏ ମନେ ଅଧ୍ଧ ତାମସ୍ ପୁଁ୍ତିଏ ଦାଓ ଓ ଦୟାଲ୍ ଏଇତୋ ଆମାର୍ ପ୍ରାର୍ଥନା ଓ ଦୟାଲ୍... ଓ ଦୟାଲ୍... ଓ ଦୟାଲ୍... ଓ ଦୟାଲ୍... ଓ ଦୟାଲ୍... ଓ ଦୟାଲ୍... ଓ ଦୟାଲ୍ ସାଧନାୟ ସୁରେ ମନେ ସୁର୍ ଆକାରେ ସୁର୍ ଜାଗାଓ ଏଇତୋ ଆମାର୍ ପ୍ରାର୍ଥନା ଜୀବନ୍...... ॥ ୨ ॥

### ଯୁଗେ ଯୁଗେ ଯେମ୍ବି ଏସେଛିଲେ ପ୍ରଭୁ

ଯୁଗେ ଯୁଗେ ଯେମ୍ନି ଏସେଛିଲେ ପ୍ରଭୂ ତେମ୍ନି ଆବାର୍ ଏସେଛୋ ତେମ୍ନି କୋରିଆ ଭାଲୋବାସା ଦିଆ (ଦୟାଲ୍) ମନୋ ପ୍ରାନ୍ କିନେ ନିୟେଛୋ (୨ଥର) ୟୁଗେ.......................

ଯଶୋମାତା ସଚ୍ଚୀ କୌଶଲ୍ୟାର କୋଲେ ଯେମ୍ନି କରିଆ ଖେଲା ଖେଲେଛିଲେ(।।) ତେମ୍ନି ଆକ୍ ମୋନ୍ମୋହିନୀର କୋଲେ (୨ଥର) (ଦୟାଲ) ଶ୍ରୀ ଅନୁକୂଲ୍ ହୟେ ଏସେଛୋ (୨ଥର) ୟୁଗେ...... ।।୧।।

ସଙ୍ଗେ ନିୟେ କତୋ ଭକ୍ତ ପାର୍ଶଦ୍ୱଗନ୍ ଗୋଡ଼େଛୋ କତୋ ପ୍ରେମେର୍ ବୃନ୍ଦାବନ୍ (।।) ନାମେର୍ ପ୍ଲାବନେ କତୋ ମରା ପ୍ରାନେ (ଦୟାଲ୍) ପ୍ରେମେର୍ ତୁଫାନ୍ ତୁଲେଛୋ ( ୨ଥର) ଯୁଗେ...... ।।୨।।

ଏବାର୍ ଖେଲେଛେ। ପ୍ରଭୁ ଅପରୂପ ଖେଲା ଏନେଛୋ ପାରେର୍ ଅଭିନବ ଭେଲା (।।) ଯକନ୍ ଯାକନ୍ ଆର୍ ଇଷ୍ପଭୃିତ୍ତି ( ୨ଥର) (ଦୟାଲ୍) ମୁକ୍ତିର୍ ଉପାୟ କୋରେଛେ। ( ୨ଥର) ଯୁଗେ...... ।।୩।।

### କୀବନେର୍ ଭାଲୋଟା କି ମନ୍ଦ ବା କି

ଜୀବନେର୍ ଭାଲୋଟାକି ମନ୍ଦ ବା କି ଜାନୋକି (॥) ପ୍ରଭୂର୍ ରାତୁଲ୍ ଚରନ୍ ବିନା (୨ଥର) ଏ ଦୁନିଆୟ ସବ୍ ପୀକି ଜୀବନେର୍......॥୦॥

ଆପନ୍ ଯାଦେର୍ ଭାବଛୋ ମନେ କେଉକି ଯାବେ ତୋମାର୍ ସନେ (॥) ସଙ୍ଗ ଦିତେ ଶେଷେର୍ ଦିନେ (୨ଥର) ସେଇ କଥାଟା ଭାବୋକି ଜୀବନେର.....॥୧॥

କମାଲେ ତୋ ଅନେକ୍ ଭବେ ସେ ସବ୍ କି ଆର୍ ସଙ୍ଗେ ରବେ (॥) କେନୋ ଆକୁଲ୍ ଖୋକ୍ଛୋ ତବେ ( ୨ ଥର) ବୋଝୋନା ଏ ସବ ମେକି ଜୀବନେର୍......॥ ୭ ॥

> ଯିନି ସବାର୍ ପରମ୍ ପିତା ଯା କିନ୍ଧୁ ପାଓ ସବେର୍ ଦାତା (॥) ତିନି ସବାର୍ ପରିତ୍ରାତା (୨ ଅର) ଏ ସାର୍ କଥା ବୋଝୋକି ଜୀବନେର୍.....॥୩॥

ସବାର୍ ଆପନ୍ ସେଇ ଆପନେର୍ ଧର ପରମ୍ ଆପନ୍ ଜ୍ଞାନେ (॥) ସକଲ୍ ଊ୍ୱାର୍ ଅବସାନେ (୨ଥର) ଉଠୁକ୍ ପରମ୍ ପ୍ରାପ୍ତି ଝଲକି ଜୀବନେର୍......॥୪॥

#### ଯଦି ମାନୁଷ୍ ହୟେ ଥାକୋ

ଯଦି ମାନୁଷ୍ ହୟେ ଥାକୋ ମାନୁଷ୍କେ ଭାଲୋ ବାସୋ ସୁଖେ ଦୁଃଖେ ମାନୁଷେର୍ ପାଶେ ଦାଡ଼ାଓ କଗତେର୍ କଲ୍ୟାନେ ଇଷ୍ଟେର୍ ଇଚ୍ଛିତ ( ୨ଥର) ସତ୍ମନ୍ତେ ଦେଓ ଦିକ୍ଷା ସତ୍ନାମେ କଗତ ମାତାଓ ( ୨ଥର) ଯଦି ମାନୁଷ୍...... ।। ।।

କାନ୍ ପେତେ ଶୋନୋ ଓଇ ଧ୍ୱଂସେର୍ ଦାମାମା ଆକାଶ୍ ବାତାସ୍ ଛେଯେ ଫେଲେଛେ ନିମେଷେଇ ଲୟ ହବେ ସବ୍ ରସାତଲେ ଯାବେ ପ୍ରଲୟେର୍ ସଂକେତ୍ ବେଳେଛେ ( । । ) ପାରୋତୋ ଏଖନି ଧର ଉଠେ ପୋଡ଼େ ଲେଗେ ପଡ଼ ସତ୍ମନ୍ତେ ଦେଓ ଦୀକ୍ଷା ସତ୍ନାମେ କଗତ୍ ମାତାଓ ( ୨ ଥର ) ଯଦି ମାନୁଷ୍ ....... । । ୧ । ।

## ଠାକୁର୍ <sub>ତୋମାର୍</sub> ନାମ୍ଟି ନିଏ

ଠାକୁର୍ ତୋମାର୍ ନାମ୍ପଟି ନିଏ ଧନ୍ୟ ହୋଲୋ ମୋର୍ ମାନବ୍ ଜୀବନ୍ ବନ୍ଦୀ ହିଲାମ୍ ମୁକ୍ତ ହୋଲାମ୍ ପେଲାମ୍ ତୋମାର୍ ରାଡୁଲ୍ ଚରନ୍ ଠାକୁର୍...... ॥୦॥

ନାମିଇ ତୋମାର୍ ମୋର୍ ଜୀବନ ସାଥୀ ନାମ୍ ହି ପ୍ରଭାତ୍ ମୋର୍ ନାମିଇ ରାତି ନେଇ ଭୟ ଆର୍ କୋନୋ ଜୀବନେ ଆମାର୍ ନାମିଇ ଆଧାଁର୍ ପଥେ କେଲେଛେ ବାତି ଆପନ ମନେ ଆମି ସଂଗପନେ ନାମ ଦିଏ ସାଜାଇ ଆମାର୍ ଭୂବନ୍ ଠାକୁର......॥ ।।

ଯତ କାମନା ଯତ ମୋହ ମାୟା ବୁଝେଛି ସୁଧୁଇ ସେ ତୋ ମରନ୍କାୟା ନେଇଭୟ ଆର୍ କୋନୋ ବିପଦେତେ ଆକ୍ ପେୟେଛି ସେ ତୋମାର୍ ଚରନ ଛାୟା ଏଇଟୁକୁ ୟଇ ସୁଧୁ ଓଗୋ ଅନୁକୂଲ୍ ତବ ଚରନେ କେନୋ ହୟଗୋ ମରନ୍ ଠାକୁର......॥ । । ।

### ଠାକୁର୍ ଆମାର୍ ଦୟାଲ୍ ଆମାର୍

ଠାକୁର୍ ଆମାର୍ ଦୟାଲ୍ ଆମାର୍ ପ୍ରଭୁ ଆମାର୍ ଜୀବନ ସ୍ୱାମୀ (॥) ତୁମି ସ୍ଟିଜନ୍ ଗତିର୍ ପରମ୍ କାରନ୍ ଜୀବନ୍ ନଦୀର୍ ଉସଭୂମି ଠାକୁର୍.....॥୦॥

ଅନ୍ତରେ ସେ ଦୋଲନ ଯାଗେ ପରସ୍କରେ ମିଲନ ରାଗେ (॥) ହେ ଅନାମି ତୋମାରି ନାମେ (୨ଥର) ପ୍ରାନନ୍ ଧାରା ଉର୍ଦ୍ଧଗାମୀ ଠାକୁର......॥ ୧॥

(ତୁମି) ହତାସ୍ ପ୍ରାନେ ଆଶାର୍ ଆଲୋ ନାଶ ମନେର୍ ଆଧାଁରୋ କାଲୋ (॥) ତାପିତ ପ୍ରାନେ ଶାନ୍ତି ଧାରା (୨ଥର) ପରାନ୍କାଡ଼ା ମୁକ୍ତିକାମୀ ଠାକୁର୍......॥୨॥

ତାମାର୍ ବିନାୟ ବାଜେ ଯେ ସୁର୍ କି ଯାନି ତାଇ ଏତୋଇ ମଧୁର୍ (॥) ତୋମାର୍ ପରଶ୍ ଢାଗାୟ ହରଶ୍ (୨ଥର) ରାଖେ ସରସ୍ ଦିବସ ଯାମୀ ଠାକୁର୍.....॥୩॥

# ଠାକୁର୍ <sup>ତୋମାର</sup> ପରଶ୍ ଓଗୋ

ଠାକୁର ଟୋମାର୍ ପରଶ୍ ଓଗୋ ଧୂଲିଟେ ଧୂଲିଟେ ଜାଗେ (॥) <sub>ଆକାଶେ</sub> ବାତାସେ ତୋମାରି କରୁନା ( ୨ ଥର ) ପ୍ରେମ ଭରା ଅନୁରାଗେ... ଧୂଲିତେ... ଠାକୁର...... ॥୦॥

ତୋମାରି ମହିମା ଲୀଲା ନିକେତନ୍ ଏଇ ପଦଧୂଲି ହୋଇ ଆବରନ୍ (॥) ତୋମାରି ଚିଉ ଧୋଆୟ ନିତ୍ୟ (୨ଥର) ଅନୁଭବେ ଭାଲୋ ଲାଗେ... ଧୂଲିତେ... ଠାକୁର୍......॥୧॥

ଅଙ୍ଗନେ ତବ ନିତି ଅଭିନବ ମୁଖରିତ ਛେନୋ ଏଇ ଉସ୍ବ (॥) ସବାକାରେ ମନ୍ ସବାର୍ ଜୀବନ୍ ( ୨ଥର) ଉଚ୍ଛଲ୍ ପୂଳା ଜାଗେ... ଧୂଲିତେ... ଠାକୁର୍......॥ ୨॥

ତୋମାରି ବାନୀ ଘୁଁୟଏ ଯାନି ମହାଜୀବନେର ନବ ସୁର୍ ଆନି (॥) ତୋମାରି ଜନ୍ୟ ମୋରା ଧନ୍ୟ (୨ଥର) ତୋମାରି ଦେଶ ଭାଗେ... ଧୂଲିତେ... ଠାକୁର......॥୩॥

### ତୁମି ଆମାୟ ଆଦର୍ କରୋ

ତୁମି ଆମାୟ ଆଦର୍ କରେ। ଆମି ଆଘାତ୍ ଦେଇ ନିଜେରେ (॥) ତୁମି ବାଁଷ୍ଟ ସଦାୟ ଆମାୟ ( ୨ ତର) ପେଛଲ୍ ପଥେ ବାରେ ବାରେ ତୁମି ଆମାୟ.....॥୦॥

ଓଗୋ ଯତଇ ବେଭୁଲ୍ ପଥେ ଚଲି ବୋଧେ ଦିୟେ କଲାଞ୍ଜଲି (॥) ପଥ୍ଚି ଦେଖାଓ ହେ କୁଶଲୀ (୨ଥର) ହଠାତ୍ କଖୋନ୍ ହାଡଟି ଧୋରେ ତୁମି ଆମାୟ....॥୧॥

ଦିନେର୍ ଶେଷେ ଆପନ୍ ଘରେ ପୌଛେ ଦିତେ ଗୋ ଆମାରେ (॥) ଦାଁଡ଼ାଓ ଏସେ ମଧୁର୍ ହେସେ ( ୨ଥର) ଦୟାଲ ତୁମି ଦରଦ୍ ଭୋରେ ତୁମି ଆମାୟ.....॥ ୨॥

#### ତୋମାରି ଚରନ କରିଆ ଶର<sub>ନ</sub>

ତୋମାରି ଚରନ କରିଆ ଶରନ ଚୋଲେଛି ତୋମାରି ପଥେ ପ୍ରଭୁ ତୋମାରି ଭାବେତେ ଭାବିବୋ ତୋମାକେ ଆଶା କରି ମନୋରଥେ (॥) ତୋମାରି......॥୦॥

ଭେଙ୍ଗେବୂରେ ଜାୟ ଯତୋକି ବାସନା ତୀବ୍ର ଗତିତେ ଚଲୁକ୍ ସାଧନା (॥) ମମ ମାନସ ନୟନ ଜେଗେ ଥାକେ ଯେନୋ ଧୁବ ତାରା ତବସାଥେ..... (॥) ତୋମାରି......॥ ୧॥

ଶତ ପଦାଘାତ ସଇଆ ବକ୍ଷେ ଆସିଆଛି ପିତା ତବ ସମଅକ୍ଷେ (॥) ପ୍ରଭୁ ହୃଦୟ ଆମାର୍ ଜୋଲେ ପୁଡ଼େ ଗେଛେ ଅବହେଲା ଉତ୍ପାତେ...... (॥) ତୋମାରି......॥ ୨ ॥

ଏସେଛେ ଅମୃତ ତୋମାରି ଦ୍ୱାରେ ଝରେ ଆଖି କଲ ଶତେକ ଧାରେ (॥) ଆମି ପାପି ତାପି ବୋଲେ ବିନୟ ପେୟେଛି ଆଶୀଷ ପାଇନି ମାଥେ..... (॥) ତୋମାରି......॥୩॥

କେନେଛି ଦୟାଲ ପ୍ରେମ ପାରାବାର ପାପୀର ବେଥାୟ ଆଖି ଝରାଝର (॥) ତୁମି ଦୁହାତ ପ୍ରସାରୀ ହେ ଅମ୍ପିତ ପ୍ରେମୀ ଲହୋ କୋଲେ ରାଖୋ ସାଥେ.... (॥) ତୋମାରି.....॥४॥

#### ତ୍ରୁମି ଦେଖାଲେ ମୋଦେର୍ ଯେ ପଥ୍

ତୁମି ଦେଖାଲେ ମୋଦେର୍ ସେ ପଥ୍ ସେଇ ପଥେ ଚୋଲ୍ବୋ ସବାଇ ଓଗୋ ଅନୁକୂଲ୍ ଚରନେ ତୋମାର୍ କୋଟି କୋଟି ପ୍ରନାମ୍ କାନାଇ ତୁମି....।।।।

ହିଂସାର୍ ଆଗୁନେତେ ଜୋଲ୍ଛେ ଯେ ଆଜ୍ ଆମାଦେର୍ ସୋନାର୍ ଦେଶ୍ ମାନୁଷେର୍ ମନେ ଦେଖି ହୋୟେ ଗେଛେ ଆଜ୍ ପ୍ରେମ୍ ପ୍ରୀତି ଭାଲୋବାସା ଶେଷ (॥) ଇଷ୍ଟମୁଖୀ ଚଲନ୍ ଛାଡ଼ା (୨ଥର) ବାଚଁବାର୍ କୋନୋ ପଥ୍ ନାଇ ତୁମି..... ॥୧॥

ତୋମାର୍ କଥା ଶରନ୍ କୋରେ କୋର୍ଛି ମୋରା ଏଇ ପନ୍ ସତ୍ସଙ୍ଗେର୍ ଧ୍ୱକା ଉର୍ଦ୍ଧେ ତୁଲେ ରାଖିବୋ ମୋରା ଆକୀବନ୍ (॥) ସାରା ଜଗତେ ଜାଲ୍ବୋ ମୋରା (୨ଥର) ସତ୍ସଙ୍ଗେର୍ ରସନାୟ... ତୁମି... ॥୨॥

#### ତୋମାକେ ଯଖନ୍ ମନେ ପଢ଼େ

ତୋମାକେ ଯଖନ୍ ମନେ ପଡ଼େ ଧରା ମୋନେ ହୟ ଜନ ହୀନ୍... (॥) (ପ୍ରଭୂ) ତୁମି ଆଛୋ ଆର୍ ଆମି ଆଛି (୨ଥର) ବାକି ସବ୍ ତୋମାତେ ବିଲୀନ୍... ଧରା ମୋନେ...

କି ଯାଦୁ ଯେ କୋରେଛେ। ଆମାୟ ତୋମାକେଇ ଭେବେ ଭେବେ ହାୟ କୋଥା ହୋତେ ବେଲା ବୋୟେ କାୟ (॥) ତୁମି ଆଛୋ ତୁମି ଯେ ଗୋ ଆଛୋ ( ୨ ଥର) ତାଇ ମୋନେ ବାଜେ ଚିରଦିନ୍... ଧରା ମନେ...

ତୋମାକେ.....ା । ୧ ॥

ବୃଝିନା ଏ କେମୋନ୍ ଖେଲା... ସୁନ୍ଦର୍ ନିଏ ଆମାକେ ଖେଲିଛୋ ସାରାଟି ବେଲା (॥) ଆଜ୍ ଆକାଶ୍ ବାତାସ୍ ଛାୟା ଆଲୋ... ସବ କିଛୁ ଲାଗେଗୋ ଭାଲୋ (॥) ପ୍ରଭୂ ତୋମାର୍ ହାସିର୍ ଦୋଲାତେ ( ୨ ଥର) ଅଜ୍ ତ୍ରିଭୁବନ୍ ହୋଲୋ ଅମଲୀନ୍... ଧରା ମନେ...

ତୋମାକେ..... ॥ ୨ ॥

#### ତବ ରାତୁଲ ଚରନ ପରଶେ

ତବ ରାତୁଲ ଚରନ ପରଶେ ଧରା ଆଜି ହୋଲୋ ମଧୁମୟ ସୁନ୍ଦର ପ୍ରିୟତମ ହେରି ସ୍ୱସ୍ତିର୍ ସୁରୁଜୋ ଉଦୟ (॥) ତବ ରାତୁଲ.....॥୦॥

ଅହଂମର ପାପଗ୍ରାସ୍ ତୋମାର୍ କୃପାୟ ହୋଲେ। ନାଶ୍ ( ୨ଥର) ଆନନ୍ଦ କାଗେ ଅବିନାଶ ବହେ ଶାନ୍ତି ସ୍ନିଗ୍ଧ ମଲୟ ସୁନ୍ଦର ପ୍ରିୟତମ... ତବ ରାତୁଲ.....॥୧॥

> ଆଜି ଅଭିମାନ୍ ହୋଲୋ ନିଃଶେସ୍ ଦୂର୍ ହୋଲୋ ବାସନା ଆର୍ କ୍ଲେଶ୍ (॥) କାଟିଲୋ ହିଂସା ଦ୍ୱେଷ ବିଦୂରିତ ହୋଲୋ ସଂଶୟ ସୁନ୍ଦର ପ୍ରିୟତମ... ତବ ରାତୁଲ......॥ ॥ ॥

ତୋମାରି ପାନେ ଅଭିସାରେ ଲୋଭି ଯେ ଜୀବନେ ତୋମାରେ ( ୨ଥର) ସୃତିବାହି ଚିର ଚେତନାରେ କୋରିବୋ ହେ ଦୟାଲ୍ ଉଦୟ ସୁନ୍ଦର ପ୍ରିୟତମ...

ତବ ରାତୁଲ..... ।।୩॥

#### ତୋମାର୍ କଥାଇ ବଲେ ଯାର।

ତୋମାର୍ କଥାଇ ବଲେ ଯାରା ତୋମାୟ ମାନେନୀ... ତୋମାୟ ପାଖିର୍ ଆନନ୍ଦର୍କି, ତାଇତୋ କାନେନା (ବୟାଲ୍) ତୋମାର୍...... ॥୦॥

ଚିନିର୍ ବୋଝା ବହନ୍ କରେ ବୂଝ୍ବେ ସୋଆଦ୍ କ୍ୟାମନ୍ କରେ.... (॥) ଓରା (ଏକଟୁ ଯଦି ମୁଖେ ଦିତୋ) (୨ଥର) ରସ୍ଟି ହୋତୋ ଜାନା ତୋମାୟ ପାଷ୍ୱାର୍... ଦ୍ୟାଲ୍ ତୋମାର୍...... ॥୧॥

ତୋମାର୍ ଧ୍ୟାନେ ନୀରବତା... କ୍ୟାମନ୍ ସୁଖେର୍ ଜାନେନା ତା (॥) ପ୍ରେମେର୍ କି ଯେ ମାଧୁର୍ଯ୍ୟତା ( ୨ ଥର) କିନ୍ଦୁ ବୋଝେନା ତୋମାୟ ପାଓ୍ୱାର୍... ଦୟାଲ୍ ତୋମାର୍...... ॥ ୨ ॥

ଭକ୍ତି ପ୍ରାନେ ନା ରୟ ଯଦି, ସୁଧୁ କଥାୟ କିବା ହବେ ସେଇ କଥାଟାଇ ସହଜ କୋରେ କେଉ ବୋଝେନା ଭବେ ରେ ମନ୍ କେଉ ବୋଝେନା ଭବେ (॥) ତୋମାୟ ଭାଲୋ ବାସ୍ଲେ ପ୍ରାନେ ବାଁଧୋଲ୍ ଛେଡ଼ା ଶାବି ଆନେ (॥) ନିତ୍ୟ ତୋମାୟ ସେବା ବିନା ( ୨ ଥର) ତ୍ୱିଷା କମେନା ତୋମାୟ ପାଓ୍ୱାର୍

#### ତୋମାର୍ ମନେର୍ ମତ କୋରେ

ତୋମାର୍ ମନେର୍ ମତ କୋରେ ପ୍ରଭୁ ଆମାୟ ତୁମି ଗଢ଼େ ନେଓ (॥) ଓଗୋ ପ୍ରେମେର୍ ଠାକୁର୍ ତୁମି ଆମାର୍ ହ୍ୱିଦୟ ଭୋରେ ଦେଓ ତୋମାର୍ ମନେର୍.....॥୦॥

ସଂଶୟ ଭର। ଏ ମନ କରିତେ ପାରିନି ନିବେଦନ (॥) ପ୍ରଭୁ ତୋମାର୍ ପ୍ରେମେର୍ ପରଶେ ଏ ମହାଧାର୍ ମୁହ୍ନେ ଦେଓ ଓଗୋ ପ୍ରେମେର୍ ଠାକୁର୍ ତୁମି ଆମାର୍ ହୃଦୟ ଭୋରେ ଦେଓ ତୋମାର୍ ମନେର୍.....॥୧॥

ବାଉଁବାଡାର୍ ପଥେ ଚଲ୍ତେ ଗିୟେ ଜଟିଲ୍ ଜୀବନ୍ ଜାଲେ ଗେଛି ଜୋଡ଼ିଏ ତୋମାର୍ କଥା ପ୍ରଭୁ ପଡ଼େନି ମନେ ନିଜେର୍ ଖେଆଲେ ଆମି ଗେଛି ହାରିଏ (॥) ଯାନି ତୁମି ଓଗୋ ଦୟାମୟ କରୁନା କୋରେଛୋ ସେ ଆମାୟ (॥) ତୁମି ସେମନ୍ଟି ଚେୟେଛୋ ଆମାୟ ତେମ୍ନି ଚଲନେ ଷଲାଓ ଓଗୋ ପ୍ରେମେର୍ ଠାକୁର୍ ତୁମି ଆମାର୍ ହୃଦୟ ଭୋରେ ଦେଓ ତୋମର୍ ମନେର୍.....॥୨॥

### ତୋରା ଆୟ ଆୟ ଆୟ....

ତୋରା ଆୟ ଆୟ ଆୟ ( ଲଗନ୍ ବୋୟେ କାୟ ( ମନମୋହିନୀ ନନ୍ଦନ ଶ୍ୟାମ ବାଶୁରୀ ବାକାୟ) ( ୨ ଥର ) ପଦ୍ଦାନଦୀର୍ ଧାରେ ବକୁଲ୍ ଗାହ୍ଦେର୍ ପରେ ବାଶୁରୀଆର୍ ବାଶୀର୍ ସୁରେ ମନ୍ କେଡ଼େ ନେୟ ତୋରା ଆୟ ଆୟ...... ତୋରା...... | | 0 | 1

ପାଠ୍ଶାଲାରି ଘରେ ପଣିତେ ସୁଧାୟ )
ଏକେ ଏକେ ଯୋଗ୍ ଦିଲେ ବଲୋ କତ ହୟ (11)) (୬)
ଶାସନେନା ଟଲେ ହାସି ମୁଖେବଲେ (୨ ଥର)
ଏକେ ଏକେ ଏକିଇ ହୟ ଦୁଇ କଭୁ ନୟ
ତୋରା ଆୟ ଆୟ......
ତୋରା........ 11911

ଲିଲାଖେଲାର୍ ହଲେ ଅନୁକୂଲ ନାମ୍ ୍ରିଟ୍ନ ନିଲେନ୍ ନାରାୟନ୍ ହିମାୟତ୍ପୁର୍ଧାମ୍ ( I I ) ୍ରିଟ୍ର ହୟେ ଗ୍ରିହ ସନ୍ୟାସ୍ କରେନ୍ ଘର୍ ସଂସାରୀ ( ୨ ଥର ) କକ୍ଷ୍ମାଦେବୀ ନାରାୟନୀ ସଂସାର ସାଳାୟ ତୋରା ଆୟ ଆୟ......

#### ତୁମି ଧନୁକ୍ଧାରୀ ରାମ୍

ତୁମି ଧନୁକ୍ଧାରୀ ରାମ୍ ତୁମି ବଂଶୀଧାରୀ ଶ୍ୟାମ୍ (॥) କତୋ ଭକ୍ତୋଜନେ ବଲେ ତୋମାୟ ପ୍ରାନେର୍ ପ୍ରାନାରାମ୍ (॥) ତୁମି ଧନୁକ୍ଧାରୀ.....॥୦॥

ନୋଦେ ଏଲେ ପ୍ରାନେର୍ ଠାକୁର୍ ତୁମି ଶ୍ରୀଚୈତନ୍ୟ ହରେକୃଷ ନାମେ ଜଗତ୍ ହୋଲୋ ଯେ ତାଇ ଧନ୍ୟ (॥) (ଓ ତାଇ) ଆନନ୍ଦେତେ ଭକ୍ତ ଗନେ (୨ଥର) ଗାଏ ସେ ମଧୁର୍ ନାମ୍ (॥) ତୁମି ଧନୁକ୍ଧାରୀ.....॥९॥

ଦକ୍ଷିନେଶ୍ୱର୍ ପାଗଲା ଠାକୂର୍ ତୁମି ଶ୍ରୀରାମକୃଷ ପୂଳାର୍ ମାଠେ ଯାଏ ଗୋ ସେଥାୟ, ଭକ୍ତ ଯେ ଅଗନ୍ୟ(॥) (ଓ ତାଇ) ଦୟାଲ୍ ଠାକୁର୍ ବଲେ ତୋମାୟ (୨ଥର) ଡ଼ାକେ ଅବିରାମ୍ (॥) ତୁମି ଧନୁକ୍ଧାରୀ.....॥୨॥

କଲିର୍ ଶେଷେ ଏଲେ ତୁମି ହୟେ ଅନୁକୂଲ୍ ନିଏ ଯଚ୍ଚନ୍ ଯାଜନ୍ ଇଷ୍ଟଭ୍ଡିତି ଜୀବନ୍ ବୃଦ୍ଧିର୍ ମୂଲ୍(॥) (ଓ ତାଇ) ଭକ୍ତ ଗନେ ଗାଇଛେ ମିଲେ ( ୨ଥର) ରାଧାସ୍ୱାମୀ ନାମ୍ (॥) ତୁମି ଧନୁକ୍ଧାରୀ.....॥୩॥

### ତୁମି ସତ୍ୟ ତୁମି ନିତ୍ୟ

ତୁମି ସତ୍ୟ ତୁମି ନିତ୍ୟ ଭରେ ଆଛୋ ସବାରି ଚିଉ ଲୋଷୋ ପ୍ରାନେର୍ ତୁମି ମୁକ୍ତି ବାତା ( ୨ଥର) ତୁମି ଯେ ପରିତ୍ରାତା... ତୁମି ସତ୍ୟ..... ॥୦॥

ମନ୍ ପ୍ରାନ୍ ଦିଏ ଯାରା ଡ଼ାକେ ବାର୍ ବାର୍ ଶତୋ ବିପଦେଓ ତାରା ହୟ ଉଦ୍ଧାର (॥) ମରନେର୍ ପାର୍ ଥେକେ ଫେରାଓ ତାଦେର୍ (୨ଥର) ତୁମି ଯେ ଜୀବନ୍ ଦାତା... ତୁମି ସତ୍ୟ......॥୧॥

> ଅନ୍ଧ ଜନେର୍ ଷେଖେ ଦୃଷି ତୁମି ତୋମରି ମହିମାର୍ ସୃଷି ତୁମି (॥) ଲଲାଟେ ଦାଓ ସେ ଲିଖେ ଭାଗ୍ୟଲିପି (॥) ତୁମି ସେ ଭାଗ୍ୟ ବିଧାତା... ତୁମି ସତ୍ୟ...... ॥ ୨ ॥

### ଦୂର୍ କରୋ ମନେ ଯତ ଦୁର୍ବଲତା

ଦୂର୍କରୋ ମନେ ଯତ ଦୁର୍ବଲତା ଓଇ ଶୋନ୍ ଶୋନା ଯାଏ ତାର୍ ବାରତା ଅବସାଦ୍ ଆନେ ଯେନୋ ଓଇ କଥାଟା ରକ୍ତ ଶୋଷନ୍କାରୀ ବାଦୁଡ଼ିଟା ଦୂର୍...... । । ୦ । ।

ସ୍କରନ୍ କରୋ ତୁମି ସାହସି ଶକ୍ତିର୍ ତନୟ ତୁମି ବୀରେର୍ ହୃଦୟ (।।) ମନ୍ ମୁଖି ଏକଇ ଧର୍ମଶାସନେ ଚଲୋ ( ୨ଥର) ସହାୟ ତୋମାର୍ ହବେ ପରମ୍ପିତା ଦୂର୍....... ।।୧।।

> ଦୂର୍ବଲତାୟ ନାଇ ପ୍ରେମ୍ ଭକ୍ତି ଭକ୍ତି ବିହୀନେ ଯାନି ନାଇ ଶକ୍ତି (11) ତା'ର୍ ହୃଦୟ ଥେକେ ଓଇ କଥାଟା ଜୀବନ୍ ଯୁଦ୍ଧେ ଆନେ ସଫଲତା ଦୂର୍....... 11911

ତେୟେ ଦେଖେ। ଓଇ ଆଲୋର୍ କ୍ୟୋତି ଅନ୍ଧକାରେ ତୂମି ଆର୍ ଥେକୋନା (।।) ଦ୍ୱିଧାହୀନ୍ ହୋୟେ ତୁମି ସାମୁଖେର୍ ପାନେ ଚଲୋ (୨ଥର) ଧୁୟେଯାକ୍ ମୁଛେ ଯାକ୍ ମଲିନତା ଦୂର୍....... ।।୩।।

# ଦ୍ୟାଖ ନକଲ ପାଗଲ ସବ୍ ଦେଶେତେ

ଧ୍ୟାଖ୍ ନଳଲ୍ ପାଗଲ୍ ସବ୍ ଦେଶେତେ
ଦ୍ୟାଖ୍ ନକଲ୍ ପାଗଲ୍ କୟକନା
ଅସଲ୍ ପାଗଲ୍ ହୋଲାମ୍ବା
ପାଗଲ୍ ପେୟେ ପାଗଲ୍ ହୋଲାମ୍ବା
ଏତୋ ଅଜବ୍ ପାଗଲ୍ କାର୍ଖାନା
ପାଗଲ୍ ପେୟେ ପାଗଲ୍ ହୋଲାମ୍ବା..... ॥୦॥

କେଉବା ପାଗଲ୍ ପିରତୀ ଆସେ କେଉବା ପାଗଲ୍ ବିଷୟ ଲାଲସେ ସେ ଯେ ଧନେର୍ ଜନ୍ୟ, ମାନେର୍ ଜନ୍ୟ ( ୨ ଥର) ପାଗଲ୍ ହୋଲୋ ସେଇ ଜନା ପାଗଲ୍ ପୋଗଲ୍ ହୋଲାମ୍ନା..... ॥ ୧ ॥

ବୃହ୍ନା ପାଗଲ, ବିଷ୍ଣୁ ପାଗଲ, ପାଗଲ୍ ମହେଶ୍ୱର୍ (ବ୍ୟାଖ) ବୃଷ୍ଣ ନାମେ ରାଧା ପାଗଲ୍ ( ୨ ଥର) ପାଗଲ୍ ବ୍ରଳେଶ୍ୱର (॥) ଏଇତୋ ହୋଲୋ ଅସଲ୍ ପାଗଲ୍ ( ୨ ଥର) ଏମ୍ନି ପାଗଲ୍ କୟକନା ପାଗଲ୍ ପେୟେ ପାଗଲ୍ ହୋଲାମ୍ନା.....॥ ୨ ॥

କଲିତେ ଏକ୍ ପାଗଲ୍ ଏସେଛେ ସେ ଯେ ରାଧାନାମେ ପାଗଲ୍ ହୋୟେ (॥) ଜଗତ୍କେ ପାଗଲ୍ କୋରେଛେ (କତ) ଅକୂଲେତେ କୂଲ୍ ଦିୟେଛେ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ଠାକୁର୍ ସେଇଜନା ପାଗଲ୍ ପେୟେ ପାଗଲ୍ ହୋଲାମ୍ନା... ଦ୍ୟାଖ୍ ନକଲ୍......॥୩॥

### ଧିତାଂ ଧିତାଂ ବୋଲ୍ ବାଜେ

ଧିତାଂ ଧିତାଂ ବୋଲ୍ ବାଜେ ଧିତାଂ ଧିତାଂ ବୋଲ୍ (॥) ଖୁସିର୍ ଜୋଆର୍ ଲାଗ୍ଲୋ ଧରାୟ ଉଠ୍ଲୋରେ ପଲ୍ଲଲ୍ (॥) ଧିତାଂ.....॥୦॥

ଆକ୍ ଜୀବନ୍ ନାଥେର୍ ଆବିର୍ଭାବେ ମରନ୍ ଜୟେର୍ ମହତସବେ (॥) ଦୁଃଖନାଶି ଇଷ୍ଟିତପେର୍ ଫୁଟ୍ଲୋ ପଗଲଲ୍ (୨ଥର) ଧୃତାଂ.....॥୧॥

ଯାରା ଶ୍ରୀନ୍ତ ନିରାଶ କ୍ଲିଷ୍ଟେ କାଁଦୋ ବ୍ୟାଥାୟ ଭରା ମନ୍ ଦ୍ୟାଖୋ ଦୟାଲ୍ ଏଲେନ୍ ବହେ ସୁଖେର୍ ପ୍ରସ୍ତବନ୍ (୨ଥର) (॥) ମାଧଇ ବଲେ ତାର୍ ଚରନେ ଏବାର୍ ଆପନାରେ ଅବାଧ୍ ଚଲାର୍ ଆନନ୍ଦେତେ ଦାଓନା ଉଚ୍ଚାଡ୍ କୋରେ ମୋଦେର୍ ପ୍ରେମେର୍ ତପସ୍ୟାତେ ସେବାୟ ସାଧନାୟ ନତୁନ୍ କୋରେ ଜାଗୁକ୍ ପ୍ରାନେ ସ୍ୱସ୍ତି ମୁଖର୍ ଦୋଲ୍ (୨ଥର) ଧ୍ତାଂ......॥୨॥

# ଧରାର୍ ଧୂଲିତେ ଏଲୋ ଯେ ଆବାର୍

ଧରାର୍ ଧୂଲିତେ ଏଲୋ ଯେ ଆବାର୍ ପୁରୁଷୋରମ ଭଗବାନ୍ ବାଳାଞ ଶଂଖ ଜାଲାଞ ପ୍ରଦୀପ ( ୨ ଥର ) ଦିକେ ଦିକେ ତୋଲୋ ଜୟଗାନ୍ ଧରାର୍..... ॥୦॥

ମାନବ୍ ଜୀବନ୍ ଭରା ଯେ ଗ୍ଲାନୀ ଭୁାଡି ଆନେ ବେଦନା ପ୍ରାନେ (॥) ତାଇତୋ ଦିଲେନ୍ ଚଲାର୍ ବାନୀ (୨ଥର) ବିଶ୍ୱ ମାନବେ କରିତେ ତ୍ରାନ୍... ଧରାର୍......॥୧॥

ଯୁଗ୍ ହୋତେ ଯୁଗ୍ ପରିବେଶେ ଘଟେ ଗୋ ରୂପାନ୍ତର୍ ଯୁଗେ ଯୁଗେ ତାଇ ଯୁଗେର୍ ଦେବତା ଧରେ ନବ କଲେବର୍ (॥) ଠାକୁର୍ ଅନୁକୂଲ୍ ରୁପେ ଏବାର୍ ଦିଲୋ ସମାଧାନ୍ ଯା କିଛୁ ସବାର୍ (॥) କ୍ୟାନୋଗୋ ରବେ ଦୂରେ ପୋଡ଼େ ଆକ୍ ( ୨ ଥର) ନାମାମ୍ବିତ ଏସେ କରୋ ପାନ୍ ଧରାର୍.......॥ ୨ ॥

# ନିତ୍ୟାନନ୍ଦ ମୁକ୍ତିଦାତା କରୁନା ସିନ୍ଧୁ ହେ

ନିତ୍ୟାନନ୍ଦ ମୁକ୍ତିଦାତା କରୁନା ସିନ୍ଧୁ ହେ... ସାଧକ ଜନ ସାଧନ ଧନ, ଦୀନବନ୍ଧୁ ହେ... (॥) ହେ ନିତ୍ୟାନନ୍ଦ.....॥୦॥

ଆଦି କାରନ ନାରାୟନ, ନିଖିଲ ଧାତା ହେ... (୨ଥର) ଭକତ ଜନ ରକ୍ଷକ ପ୍ରଭୁ (୨ଥର) ସର୍ବତ୍ରାତାହେ... ହେ ନିତ୍ୟାନନ୍ଦ......॥୧॥

ହେ ଦନଭୟ ଭଞ୍ଜକୁନାଥ ବିଶ୍ୱପିତା ହେ... ସର୍ବ ପାପ ନାଶତ ପ୍ରଭୂ (୨ଥର) ପୂଣ୍ୟଦାତା ହେ... ଶାନ୍ତି ସ୍ୱସ୍ତି କଲ୍ୟାନମୟ, ଦୀନନାଥ ହେ... (୨ଥର) ସୁନ୍ଦର ପ୍ରଭୁ ଜ୍ୟୋତିର୍ମୟ (୨ଥର) ପ୍ରାନନାଥ ହେ... ହେ ନିତ୍ୟାନନ୍ଦ......॥୨॥

ଆଦି ପୁରୁଷ ପାବକ ବିଭୁ, ଅମ୍ବିତ ମୟ ହେ... ପରମ ପ୍ରେମମୟ ପ୍ରଭୁ (୨ଥର) ଲୋକତ୍ରାତା ହେ... ହେ ଚିର ଦରଦୀ ପରମ୍ ଦୟାଲ୍ ପରମ ପିତା ହେ... (୨ଥର) ଅବୃତକୋଟି ପ୍ରନତି ଓଗୋ ଅବୃତକୋଟି ପ୍ରନତି ରାତୁଲ ଚରନ କମଲେ ହେ... ହେ ନିତ୍ୟାନନ୍ଦ......।।୩॥

#### ନିତାଇ ବଲ୍ରେ

ନିତାଇ ବଲ୍ରେ ଆର୍ କତ ଦୂର୍ ମଧୁର୍ ବ୍ରିନ୍ଦାବନ୍ (୨ଥର) ଚଲିତେ ଚଲତେ ଆମାର୍ ନା ଚଲେ ଚରନ୍ (୨ଥର) ନିତାଇ ବଲ୍ରେ ...... ॥୦॥

> ବିରହ ବ୍ୟଥାୟେ ଆମାର୍ ବ୍ୟାକୁଲ୍ ପରାନ୍ ନିତାଇ ବଲ୍ରେ..... ରାଧା କୁଣ୍ଡ, ଖ୍ୟାମ୍ କୁଣ୍ଡ, ଗିରି ଗୋବର୍ଦ୍ଦିନ୍ ନିତାଇ ବଲ୍ରେ..... ମଧୁର୍ ମଧୁର୍ ବନ୍ଶୀ ବାଜେ, ଏଇତ ବ୍ରିନ୍ଦାବନ ନିତାଇ ବଲ୍ରେ..... କଦୟେର୍ ମୂଲେ ଏଡ ଯମୁନା ପୁଲିନ୍ ନିତାଇ ବଲ୍ରେ..... ରୁନୁଝୁନୁ ଶୁନି ଏଇ ନୁପୁରେର୍ ତାନ୍ ନିତାଇ ବଲ୍ରେ..... କୁଞ୍ଜବନେ ଗୁଞ୍ଜରନ୍ ପିକ କୁହୁତାନ୍ ନିତାଇ ବଲରେ..... ନବ ବ୍ରିନ୍ଦାବନ ଶୋଦ୍ଧା ଅତି ବିମୋହନ୍ ନିତାଇ ବଲରେ.....

### ନିଷା ଦାଓ ଭକ୍ତି ଦାଓ

ନିଷ୍ପା ଦାଓ ଭକ୍ତି ଦାଓ ଶକ୍ତି ଦାଓ ତୁମି ମୋରେ ତୋମାରି ନାମ ତୋମାରି ଧ୍ୟାନ୍, କୋର୍ବୋ ଆମି ଜୀବନ୍ ଭରେ (॥) ନିଷ୍ପା ଦାଓ... ॥୦॥

ତୋମାରି ଦୟାୟ ସେନୋ ଗାଇତେ ପାରି ତୋମାର୍ କୃପାୟ ସେନୋ ବୋଲ୍ଡେ ପାରି (॥) ତୋମାର୍ ଆଦେଶ ମାଥାଏ ନିଏ (୨ଥର) ସାରାଟା ଜୀବନ୍ ସେନୋ ଷେଲତେ ପାରି ନିଷ୍ଠା ଦାଓ... ॥୧॥

ତୁମି ଛାଡ଼ା ମୋର୍ ଆର୍ କେହୋ ନାଇ ତୋମାର୍ ଚରନେ ପ୍ରଭୁ ଦିଓ ମୋରେ ଠାଇ (॥) ଏଇ ମିନତୀ ରେଖୋ ହେ ପ୍ରଭୁ ( ୨ଥର) ଥୋକୋ ତୁମି ଚିରଦିନ ହୃଦୟେ ଆମାର୍ ନିଷ୍ପା ଦାଓ... ॥ ୨॥

# ନା ନା ନା ମୋରା ତୋମାୟ ପାଓୟାର୍

ନା ନା ନା..... ମୋରା ତୋମାୟ ପାଞ୍ୟାର୍ ସାଧନାତେ କ୍ଲାନ୍ତ ହବୋ ନା (୨ଥର) ଜୀବନ୍-ପଥେ ଚଲାୟ କଭୁ କ୍ଷାନ୍ତି ଦେବୋ ନା ମୋରା ତୋମାୟ..... ॥ । ।।

ପ୍ରବ୍ରିଭି - ଜାଲ୍ ଛିନ୍ନ କୋରେ, ଚୋଲ୍ବୋ ଦୟାଲ୍ ତୋମାୟ ଧୋରେ (୩) ରିପୁର୍ ବାଁଧନ୍ ଛିଁତେ ତୋମାର୍ ( ୨ଥର) କୋର୍ବୋ ଆରାଧନା ମୋରା ତୋମାୟ..... ॥ ୧ ॥

ତୋମାୟ ଭାଲୋବେସେ ସବାୟ କର୍ବୋ ଆପନ୍ ଭବେ, ବ୍ୟଥାୟ କାତର୍ ହୋୟେ ଧରାୟ, କେଉ ନାହି ଆର୍ ରବେ (॥) ବୋମାର୍ ଆଶୀର୍ବାଦେ ମୋରା ଭାଙ୍ଗବୋ ଏବାର୍ ଭୟେର୍ କାରା ( ୨ଥର୍) ଆନ୍ବୋ ମୁକ୍ତି ବାଧନ୍ତ୍ର ସାଧନା ସେଇ ତୋ ସାଧନା

ଚଲବୋ ଅବାଧି ଆନନ୍ଦେତେ ଦ୍ୱନ୍ଦ୍-ଦ୍ୱିଧା ନାଇ ଡୋମାର୍ ଦୟାର୍ ଅଭୟ-ପରଶ ସଦାଇ ଯେ ଗୋ ପାଇ (॥) ମରନ୍ ଶାସନ୍ ଘୁଚିୟେ ଦେବ, ତୋମର୍, ସେବାୟ ବ୍ରତୀ ରବ ( ୨ଥର) ଡୋମାର୍ କଥାଇ ବଲ୍ବୋ ମୋରା ( ୨ଥର) ଏଇ ତୋ ପ୍ରାର୍ଥନା ମୋରା ତୋମାୟ ...... ॥୩॥

#### ପରମେଶ୍ କେ ବା ଯାନେ

ପରମେଶ୍ କେ ବା ଯାନେ ମହିମା ତୋମାର୍ (॥) ଓଇ ଯେ କୁସୁମ ଗନ୍ ଦୁଲିତେଛେ ଅନୁକ୍ଷନ୍ ଓଇ ଯେ ବିହଙ୍ଗ' କୁଲ୍ ରୂପେ ଯାର୍ ନାହିଁ ତୁଲ୍ (॥) ନେଚେ ନେଚେ ଗାହିତେଛେ କରୁନା ତୋମାର୍ (॥) ପରମେଶ......॥୦॥

ଓଇ ହେରୋ ପଲ୍ଲଲୀନୀ, କୁଲ୍ କୁଲ୍ ପ୍ରବାହୀନୀ ( ୨ଥର) ହୁଲୁ ଶବ୍ଦେ ପ୍ରଖ୍ମଲିଛେ ଚରନ ତୋମାର୍ ( ୨ଥର) ଜଗତେର୍ ଯତ ପ୍ରାନୀ, ତୋମାରେ ଈଶ୍ୱର ମାନି ନୋମିତେଛେ ସଦା ତାରା ଚରନେ ତୋମାର୍ (॥) ପରମେଶ......॥ ।। ।।

> ଆମି ସେ ଅଧମ ପ୍ରାନୀ ଭକ୍ତି ସ୍ତୁତି ନାହିଁ ଯାନି (॥) ଅନୁକୂଲେ କୃପା କୋରେ ଦାଓ ହେ ଚରନେ ତାର୍ (॥) ପରମେଶ......॥ ९॥

#### ପରମ୍ ଦୟାଲ୍ ପ୍ରାନେର୍ ଠାକୁର୍

ପରମ୍ ଦୟାଲ୍ ପ୍ରାନେର୍ ଠାକୁର୍ ଓଗୋ ପ୍ରେମମୟ ଅନୁକୂଲ୍ (॥) ତବ ଚରନେ ଲୋଭିତେ ଠାଇଁ (୨ଥର) ହୃଦୟ ଆମାର୍ ହୟ ବ୍ୟାକୁଲ୍... ପରମ୍......॥୦॥

> ଚାଇ ନିରକନେ ଆପନୋ ମନେ ନିବେଦନ୍ କରି ଓ ଚରନେ ସାଜିଏ ରାଖା କତୋନା ସତନେ ଭକ୍ତି ପ୍ରେମେର୍ ପୂଜାର୍ ଫୁଲ୍... ପରମ୍.....॥୧॥

ତୁମି ବିନେ ଆର ଏଇ ଜୀବନେ ସବି ଲାଗେ ମୋର୍ ଶୂନ୍ୟ ତୋମାର୍ ଅପାର୍ କରୁନା ଧାରାୟ ଶୂନ୍ୟତା ହୟ ପୂର୍ତ୍ତ ମିନତୀ କରି ସଂଗପନେ, ଆଶ୍ରୟ ଦିଓ ଦିନକନେ ଥେକୋଗୋ ସଦା ଆମାର୍ ଶନେ ଆସୁକ୍ ବାଧା ପ୍ରତିକୂଲ୍... ପରମ୍.......। ୨ ॥

ଏଇ ଅଭାଗାର୍ ନାଇ କିଛୁ ଆର୍
ତୁମି ଛାଡ଼ା ଏଇ ଭୂବନେ
ସକଲ୍ କ୍ଷନେ ପାଇଗୋ ପରଶ୍ ଦେଖି ତୋମାରେଇ ସପନେ ୟୟ ସୁଧୁ ଆକ୍ ଏ ମନ୍ ଆମାର୍, ଦୟାଲ୍ ତୋମାର୍ ଦରଶନ୍ ସାଜିଏ ରାଖିଗୋ ପୂଜାର୍ ଥାଲାୟ ମାଧବୀ ଟଗର୍ କୁଇ ବୋକୁଲ୍ ପରମ୍.....।୩॥

#### ପୂଳାର୍ ଫୁଲ୍ ଆମି ସାଜିଏ ରାଖି

ପୂଳାର୍ ଫୁଲ୍ ଆମି ସାଜିଏ ରାଖ୍ ଜଲେ ଭୋରେ ଯାଏ ମୋର୍ ତ୍ରିଷିତ ଆଖ୍ ଦେଖାଦାଓ ଦାଓ ଦେଖାଦାଓ ଦାଓ ଗୋ.....( ୨ ଥର) କୋଥାଏ ଲୁକାଲେ କୋନ୍ସେ ଆଡ଼ାଲେ ( ୨ ଥର) ଏକ୍ବାର୍ ସୁଧୁ ବୋଲେ ଯାଓ ଗୋ..... ( ୨ ଥର) ପୂଜାର୍...... ॥୦॥

କଣ୍ଠ ଆମାର୍ ତୁମି ଭରାଲେ ସୁରେ ତାଇ ଆକ୍ ଆମି ଗାନ୍ ଗାଇ ମୋର୍ ଗାନେର୍ ମାଲା କଣ୍ଡେ ତୋମାର୍ ପରାତେ ସୁଧୁ ଆମି ଊଇ ଓଗୋ..... କାଛେ ଏସେ ଆମାର୍ ସୁଧୁ ଏକ୍ବାର୍ ଆମାର୍ ଏ ଗାନ୍ ଶୁନେ ଯାଓ କୋଥାଏ......

> କତୋ ଗାନ୍ ବେଧେଁଛିନୁ ଆମି ନିରାଲାୟ ତୋମାକେ ଶୋନାବୋ ବୋଲେ ମୋର୍ ଗାନେର୍ ବାନୀ ସୁର୍ହୀନ୍ ହୟେ ଭେସେ ଯାୟ ଚୋଖେର୍ କଲେ ହାୟ... ଅନ୍ତରେ ଆମାର୍ ସୁଧୁ ଏକ୍ବାର୍ ସୁରେର୍ ଜୋଆର୍ ଏନେଦାଓ

> > କୋଥାଏ..... ପୂଳାର୍..... ॥ ୨ ॥

# (ପ୍ରେମୀ) ତୋମାରେ ପ୍ରନାମ୍ କାନାଇ

(ପ୍ରେମୀ) ଚୋମାରେ ପ୍ରନାମ୍ ଜାନାଇ (୨ଥର) ଏସେଛୋ ତୁମି ପ୍ରଭୁ ତ୍ରିତାପ୍ ହୋରିତେ (୨ଥର) (ଓଗୋ) ନାଇ ନାଇ ଆର୍ ଭୟ ନାଇ (୨ଥର) ତୋମାରେ ପ୍ରନାମ୍ ଜାନାଇ ପ୍ରେମୀ.....। । ।

କାତର ଜୀବନେ ଦୃଃଖ ବେଦନେ ଭରା ଛିଲୋ ହିଆ ଯେ ବ୍ୟାଥା ଆର୍ ରୋଦନେ (॥) ଆସିଲେ ତୁମି ହେ ମୋର୍ ସ୍ୱାମୀ (୨ଥର) (ଓଗୋ) ନାଇ ଆର୍ ଶୋକ୍ ତାପ୍ ନାଇ (୨ଥର) ତୋମାରେ ପ୍ରନାମ୍ ଜାନାଇ ପ୍ରେମୀ......॥ ୧॥

> ତୋମାରେ ଲଭିଆ ତୋମାରେ ସରିଆ କୃତି ତପେ ଧାଇ ତବ ପଥ ବାହିଆ (॥) ତବ ହାଲ୍ଖାନି ଆଛେଗୋ ଜାନି (୨ଥର) (ଓଗୋ) ଧରିଆ ରାଖିତେ ସଦାଇ (୨ଥର) ତୋମାରେ ପ୍ରନାମ୍ ଜାନାଇ ପ୍ରେମୀ.....॥୨॥

### ପରମ ଦୟାଲ୍ ପୁରୁଷୋଉମ

ପରମ ଦୟାଲ୍ ପୁରୁଷୋତ୍ତମ ପ୍ରିୟ ପରମ ହେ (୨ଥର) ଆର୍ତ୍ତମାନବ୍ ତୋମାର୍ ଦୟାୟ ନବ ପ୍ରାନ୍ ପେୟେ ଜାଗେ ପ୍ରିୟ ପରମ ହେ ପରମ..... ॥୦॥ ଦିକ୍ ହୋତେ ଦିକେ ତୋମାର୍ ବାରତା ଦୂର୍ର କୋରେ ଦିଲୋ ପରାନେରୋ ବ୍ୟାଥା (॥) ନାମ ଅମ୍ବିତ ପରଶନେ ପ୍ରଭୂ ( ୨ଥର) ବାଜାଲେ ସବାକେ ପ୍ରିୟ ପରମ ହେ ପରମ..... ॥୧॥ ଅଜତ କଣ୍ଠେ ତବ ଜୟ ଧ୍ୱନି ନିଖିଲ ବ୍ୟାପିଆ ଉଠିଲ ନରନୀ ସଞ୍ଚିତ ସତ ପାପ୍ ସନ୍ତାପ୍ ବିଦ୍ରିତ ତବ ପ୍ରବାହେ ପ୍ରିୟ ପରମ ହେ... ପରମ..... ॥ ୨ ॥ ସବ୍ ଅପୂର୍ଷେ କୋରିଲେ ପୂରନ୍ କୋରିଲେ ଶାନ୍ତି ସୁଧା ବିତରନ୍ (॥) ନଦିତ ଦାସ୍ ଚରନ ପ୍ରାନ୍ତେ (୨ ଥର) ବନ୍ଦନା କରିହେ ପ୍ରିୟ ପରମ ହେ ପରମ..... ।।୩।।

# ପ୍ରଭୁ ତୋମାର କଥା ଶୁନ୍ବୋ ଏବାର୍

ପ୍ରଭୁ ତୋମାର କଥା ଶୁନ୍ଦୋ ଏବାର ( ୨ଥର) ଆମି ଭୂଲ ପଥେ ୟେଲ୍ବୋନା ଆର୍ ଭୂଲ୍ ପଥେ... ପ୍ରଭୁ..... ॥୦॥

ତୋମାର୍ ଦେଷ୍ଟା ସେଇ ନାମ୍ ଧ୍ୟାନେ (।) (२) ଗୋଡ଼ବୋ ଜୀବନ୍ ଆମି ମନେ ପ୍ରାନେ (।) (२) ତୋମାର୍ ଦେଷ୍ଟା ସେଇ ଅମ୍ବିତ ବାନୀ (୨ଥର) ତୋମାର୍ ଦେଷ୍ଟା ସେଇ ଅମି ମନେ ପ୍ରାନେ କ୍ରାର୍ବୋ ପାଲନ୍ ଆମି ମନେ ପ୍ରାନେ ପ୍ରଭୂ ମନେ ପ୍ରାନେ ଜୀବନ୍ ଭରେ ସେଇ ସାଧନା ଆମାର୍ ଆମି ଭୂଲ୍... ।। ୧ ॥

ତୋମାୟ ପେୟେ,ଧନ୍ୟ ଆମି ଆଧାର ଜୀବନେ ବୀପ୍,ଜେଲେଛୋ ତୁମି (॥) ତୋମାର୍ ନାମେ,ଆଜ ତୋମାରି ଗାନେ (୨ଥର) ଜ୍ଞାନେର୍ ଆଲୋକ୍ ମୋର୍ କୋଲ୍ବେ ପ୍ରାନେ ପ୍ରଭୁ ଜୋଲ୍ବେ ପ୍ରାନେ ହୋକ୍ନା ଜୀବନେ ଜାନି ଅରୁନ ଆଧାଁର ଆମି ଭୂଲ୍...

#### ପୁରୁଷୋଉମ ଶ୍ରୀ ଅନୁକୂଲ

ପୁରୁଷୋରମ ଶ୍ରୀ ଅନୁକୂଲ ନରରୁପୀ ଭଗବାନ ଲହ ପ୍ରନାମ, ଲହ ପ୍ରନାମ, ଲହୋଗୋ ପ୍ରନାମ ଅଗତିର ଗତି ନିଖିଲେର ପତି ( ୨ ଥର) ସ୍ଟିଷ୍ଟିର ତୁମି ପ୍ରାନ୍ ଲହ ପ୍ରନାମ, ଲହ ପ୍ରନାମ, ଲହୋଗୋ ପ୍ରନାମ୍ ପୁରୁଷୋରମ...... ।। ୦ ।।

ପିତା ତୁମି ମାତା ତୁମି
ତୁମି ପ୍ରଭୁ ଜୀବନ ସ୍ୱାମୀ (।।)
(ଦୟାଲ) ଫୁଲେ ଫଲେ ଅନ୍ନକଲେ (୨ଥର) ଛଡ଼ାନୋ ତୋମାର୍ ଦୟାର ଦାନ୍ ଲହ ପ୍ରନାମ୍, ଲହ ପ୍ରନାମ୍, ଲହୋଗୋ ପ୍ରନାମ୍ ପୁରୁଷୋରମ..................................

ତୁମି ମୋଦେର ହୃଦୟ ରାଜା ନିତ୍ୟ ତୋମାୟ କରିହେ ପୂଜା (11) (ଦୟାଲ) ତୁମି ରାମ କୃଷ ତୁମି (୨ ଥର) ନିତ୍ୟ, ସତ୍ୟ, ବର୍ତ୍ତମାନ ଲହ ପ୍ରନାମ୍, ଲହ ପ୍ରନାମ୍, ଲହୋଗୋ ପ୍ରନାମ୍ ପୁରୁଷୋଉମ....... 11911

# ପାବ୍ନା ଜେଲା<sup>ୟ</sup> ହିମାଇତ୍ ପୁରେ

<sub>ପାବ୍ନା</sub> ଜେଲାୟ ହିମାଇତ୍ ପୁରେ ତିରିଶ୍ ଭାଦ୍ରତେ <sub>ପାବ୍ନା</sub> ଜେଲାୟ ହିମାଇତ୍ ପୁରେ ତିରିଶ୍ ଭାଦ୍ରତେ ଜନ୍ନ ନିଲେନ୍ ଶ୍ରୀ ଅନୁକୂଲ୍ ଶୂକ୍ରବାର ତାଲ୍ ନବମୀତେ (॥) <sub>ଅନ୍ନ</sub> ନିଲେନ୍ ଶ୍ରୀ ଅନୁକୂଲ୍ ଶୂକ୍ରବାର ।।୦॥ ପାବନା.....

ସାତ୍ଟା ପାଁଟେ ସକାଲ୍ ବେଲା ଠାକୁର୍ ଅନୁକୂଲ୍ ସାତ୍ଟା ପାଁଟେ ସକାଲ୍ ବେଲା ଠାକୁର୍ ଅନୁକୂଲ୍ କିଲ୍ନି, ଏଇ ଧରାଟେ ଭାଙ୍ଗ୍ ମେଦେର୍ ଭୂଲ୍ (॥) ବୋଇ) ଜନ୍ନ ନିଲେନ୍ ଠାକୁର୍ ଆମାର୍ (୨ଥର) (ଚାଇ) ଜନ୍ନ ନିଲେନ୍ ଠାକୁର୍ ଆମାର୍ (୨ଥର) ମନମୋହିନୀର୍ କୋଲେତେ... ମନମୋହିନୀର୍ ଜିଲେନ୍ ଶ୍ରୀ ଅନୁକୂଲ୍... ସାବନା.....॥୧॥

ପଦା ତୀରେ ଜେଲେରା ସବ୍ ଦେଖତେ ଯେନୋ ପାୟ ଠାକୁର୍ ବାଡ଼ି ଆଗୁନ୍ ଲାଗେ ଆୟରେ ଛୁଟେ ଆୟ (॥) ଠାକୁର୍ ବାଡ଼ି ଆଗୁନ୍ ଲାଗେ ଆୟରେ ଛୁଟେ ଆୟ (॥) (ତାଇ) ଅବାକ୍ ହୋୟେ ଦେଖିଛେ ସବାଇ ( ୨ ଥର ) ଦେଖିତେ ସବ୍ ଛୁଟେଛେ... ଜନ୍ମ ନିଲେନ୍... ଜନ୍ମ ନିଲେନ୍ ଶ୍ରୀ ଅନୁକୂଲ୍... ପାବନା......॥ ୨ ॥

ଦଶମାସ ଦଶଦିନେ ସବେଇ କନ୍ନ ହୟ ବାରମାସେ ଜନ୍ନ ନିଲେନ୍ ଠାକୁର୍ ଦୟାମୟ (॥) (ତାଇ) ଜନ୍ନ ନିଲେନ୍ ଠାକୁର୍ ଆମାର୍ ( ୨ ଥର) ଧରାର୍ ଧୂଲିତେ... ଜନ୍ନ ନିଲେନ୍...ଜନ୍ନ ନିଲେନ୍ ଶ୍ରୀ ଅନୁକୂଲ୍... ପାବନା.....॥୩॥ ପିତା ତାର୍ ଶିବଚନ୍ଦ୍ର ଚକ୍ରବର୍ତ୍ତୀ ନାମ୍ ତିନି ମହାନ୍ ଭାଗ୍ୟ ପୁରୁଷ୍, ତିନି ପୁନ୍ୟବାନ୍ (॥) ତାର୍ ମତୋକେ ପୁନ୍ୟେ ଭରା( ୨ଥର) ପିତା ଆହ୍ରେନ୍ କଗତେ... ଜନ୍ମ ନିଲେନ୍...ଜନ୍ମ ନିଲେନ୍ ଶ୍ରୀ ଅନୁକୂଲ୍... ପାବନା.....॥୪॥

ଘରେ ଘରେ ଏସୋ ସବାଇ ପ୍ରନାମ ଜାନାଇ ଏସେଛେନ୍ରେ ସବାଇ ମିଲେ ତାର୍ ଗୁନଗାନ୍ ଗାଇ (॥) ତିନି ସୁଗେ ଆବିର୍ଭୂତ ହନ୍ (୨ଥର) ଏଇ ସେ ଧରାତେ... ଜନ୍ନ ନିଲେନ୍...ଜନ୍ନ ନିଲେନ୍ ଶ୍ରୀ ଅନୁକୂଲ୍... ପାବନା.....॥୫॥

### ପ୍ରନାମ୍ ତୋମାୟ ପ୍ରୋନମେ ପ୍ରଭୁ

ପ୍ରନାମ୍ ତୋମାୟ ପ୍ରୋନମେ ପ୍ରଭୁ ତୂମି ସେ ପାରେର କାଷାରୀ (॥) ଯୁଗ ଅବତାର୍ ଦୃଃଖ ପାରାବାର୍ (୨ଥର) ଅନ୍ତରତମ ବ୍ୟାଥାହାରୀ... ତୁମି ସେ... ପ୍ରନାମ୍......॥୦॥

ଯୁଗେ ଯୁଗେ ତୂମି ଓଗୋ ଆସି ବାର ବାର୍ ଲୟେଛୋ ଆପନ ବୁକେ ସବ ଦୁଃଖ ଭାର୍ (॥) ତୋମାର୍ ଚରନ ଧରି ଚୋଲିଛେ ସଦାୟ ପ୍ରଭୁ (୨ଥର) ଶତ ଶତ ଯୁଗ ନରନାରୀ... ତୁମି ସେ... ପ୍ରନାମ୍......॥ ॥ ॥

ଶ୍ରୀ ଅନୁକୂଲ ରୂପେ ପ୍ରଭୁ ତୁମି ଆସିଲେ ସୁଧାର ଅମୃତ ବାନୀ ଦିୟେ ଯେ ଗେଲେ (॥) ତୁମି ମମ ଜୀବନେର ଅକୂଲ ସାଗରେ ( ୨ ଥର) ଅସୀମ ପଥେର ଦିଶାରୀ... ତୁମି ଯେ... ପ୍ରନାମ......॥ ॥ १॥

#### ପ୍ରାନେର୍ ଠାକୁର୍ ତୁମି ଅନୁକୂଲ୍

ପ୍ରାନେର୍ ଠାକୁର୍ ତୁମି ଅନୁକୂଲ୍ ପ୍ରନାମ୍ କରିଗୋ ତୋମାରେ (॥) ତୋମାରି ମାଝେତେ ଲୋଭେଛି ଜୀବନ ( ୨ଥର) ସେନେଛି ଆପନ ସବାରେ ପ୍ରନାମ୍ କରିଗୋ... ପ୍ରାନେର୍ ଠାକୁର୍.....॥ ।। ।।

> ଅନ୍ତରେ ତୁମି ଜାଗାଲେ ଆଶା ଲୋକ ମୁଖେ ଦିଲେ ନବୀନ ଭାଷା (॥) ଜୀବେର୍ ଲାଗିଆ କତୋ ଭାଲୋବାସା ରେଖେଛ ହ୍ୱିଦୟ ମାଝାରେ ପ୍ରନାମ୍ କରିଗୋ... ପ୍ରାନେର ଠାକୁର......॥ ୧॥

କେହୋ ନୟ ପର୍ ସକଲି ଆପନ୍ ତୋମାର୍ କାଛେ ଦୟାମୟ ଯାର୍ କେହୋ ନାଇ ତୁମି ଆଛୋ ତାର୍ ଦରଦୀ ପରମ ପ୍ରେମମୟ (॥) ମାନୁଷେର୍ ତୁମି କରିତେ ଦେବତା ଆପନି ବିଧାନ୍ ଦିଲେଗୋ ବିଧାତା ଶାନ୍ତି ସ୍ୱୱି ମୋକ୍ଷ ଦାତା ତୁମି ସେ ଆଲୋକ ଆଧାଁରେ ପ୍ରନାମ୍ କରିଗୋ... ପାନେର ଠାକୁର...... ॥ ୨ ॥

#### ପୋଡ଼େ ଥାକ୍ ଧନ୍ ସମ୍ପଦ୍

ପୋଡ଼େ ଥାକ୍ ଧନ୍ ସମ୍ପଦ୍ ସମ୍ଭାର୍ ସେଇ ଲୋଭେ ପଥ୍ ଭୁଲିଓନା ଆର୍ ଏସୋ କଲ୍ୟାନ୍ ହୟେ ଅନ୍ତରେ ଭୋରେ ଯାକ୍ ପ୍ରାନ୍ ମନ୍ ଆମାର୍ ପୋଡ଼େ ଥାକ୍..... ॥୦॥

ଧନି ବଲେ ସଞ୍ଚୟ ସାର୍ ଗୁନି କରେ ଗୁନେର୍ ପ୍ରୟର୍ (॥) ଆମି ନିର୍ଧନ୍ ଆର୍ ନିର୍ଗୁନ୍ ତାଇ ତୁମି ଛାଡ଼ା କେ ଆଛେ ଆମାର୍ ତୁମିଇ ଆମାର୍ ଧନ୍ ଭାଷାର୍ ସକଲ୍ ସୁଖେର୍ ସାର୍ ଆଶାର୍ ତୋମାକେ ପେଲେ ମନେ ମନେ ଦୂର୍ ହବେ ଅଭାବ୍ ଆମାର୍ ପୋଡ଼େ ଥାକ୍...... ॥ ୧ ॥

ଏତୋ କାଜେ କାଇ୍ କି ଆମାର୍ ମୂନ୍ଧେ ଦାଓ ଜ୍ଞାନେର୍ ଆଧାଁର୍ (॥) ସୁଧୁ ବିଶ୍ୱାସ ଯେନୋ ଥାକେ ଅନ୍ତରେ ଏଯତ କିନ୍ଧୁ ସବିଇ ତୋ ତୋମାର୍ ଏକ୍ ବାର୍ ତୋମାକେ ପେଲେ ସବ୍ କଥା ସବ୍ କାଇ୍ ଭୁଲେ ତୋମାର୍ ହାତ୍ ଧୋରେ ପାର୍ ହୟେ ଯାବୋ ୟେରା ବାଲି ଗଡ଼ା ଏ ସଂସାର୍ ପୋଡ଼େ ଥାକ୍...... ॥ ୨ ॥

### ପ୍ଟିଥିବୀତେ ତୁମି ସୁଧୁ ତୋମାର୍

ପୃଥିବୀତେ ତୁମି ସୁଧୁ ତୋମାର୍ ଉପମା ତୋମାର୍ ଉପମା (॥) ମାଗୋ ମା... ଆମାର୍ ମା... ( ୨ଥର) ପୃଥିବୀତେ.....॥।॥

ତୋମାର୍ ହାତେର୍ ଛୋଆ ପେଲେ ଦୂହାତେ ଯେ ସର୍ଗମେଲେ (॥) ମୁକ୍ତୋହୀରେ ପାନ୍ନାଚୁନି ( ୨ଥର) କିଛୁଇତୋ ଋଇନା ( ୨ଥର) ପ୍ରିଥ୍ବୀତେ.....॥ ୧॥

ହାଳାର୍ ହାଳାର୍ ମୂର୍ତ୍ତି ଗୋଡ଼େ ହୟ ସେ ପୂଜୋ ଘରେ ଘରେ (॥) ମ୍ପିନ୍ନୁୟୀ ଆର୍ ଚିନ୍ନୁୟୀତେ ( ୨ଥର) ତଫାତ୍ ବୃଝିନା ( ୨ଥର) ପ୍ଡିଥ୍ବୀତେ......॥ ॥ ୨ ॥

#### ବିଶ୍ୱପିତାକେ ସାମ୍ନନେ ରେଖେ

ବିଶ୍ୱପିତାକେ ସାମ୍ନନେ ରେଖେ ଆମ୍ବରା ସକଲେ ଦୀକ୍ଷା ନିଲାମ୍ ଯଳନ୍ ଯାଳନ୍ ଆର୍ ଇଷ୍ଟଭ୍ୱିତି (୨ଥର) ଏଇ ବ୍ରତ ପାଲନେର୍ ଶପଥ୍ ନିଲାମ୍ ବିଶ୍ୱ...... । । । ।

ସଂସାର୍ ମାନୁଷେର୍ ଯେଥା ମିଲ୍ ନାଇ ସେଇଖାନେ ଆମାଦେର୍ ବିପ୍ଲୁବ୍ ଷଇ (।।) ଏସୋ ସକଲେ ମିଲେ ସେଇଗାନ୍ ଗାଇ (୨ଥର) ଯେଇ ମିଲନେର୍ ଗାନ୍ ଆଗେ ଗାଇତାମ୍ ବିଶ୍ୱ...... ।। ୧।।

ଈଶ୍ୱର୍ ଆଲ୍ଲା ଦୁଇ କଭୁ ନୟ ହିନ୍ଦୁ ମୁସଲମାନ୍ ଭେଦାଭେଦ୍ ନାଇ ( । । ) ଏକିଇ ମାୟେର୍ ମୋରା ସନ୍ତାନ୍ ( ୨ଥର ) ହିଂସା ଦ୍ୱେଷ୍ ମୋରା ତ୍ୟାଗ କରିଲାମ୍ ବିଶ୍ୱ...... । । । । ।

#### ଭକ୍ତ ସାଧକେର ରହ ଭରି ପ୍ରାନ୍

ଭକ୍ତ ସାଧକେର ରହ ଭରି ପ୍ରାନ୍ ବିଶ୍ୱକନେ ପ୍ରଭୁ ଡୁମି କର ତ୍ରାନ୍ ଡୁମିତୋ ଦୟାଲ୍ ପ୍ରଭୂ ସାଧନାର୍ ଧନ୍ ଆମାର୍ ହିଆତେ ଭୋରେ ରାଖୋ ଶ୍ରୀ ଚରନ୍ ଭକ୍ତ......॥୦॥

ଶୟନେ ସପନେ ସେନୋ ତୋମାରେଇ ପାଇ ଜାଗ୍ରତ ହୋୟେ କରି ତବ ସାଧନାୟ (॥) ବାଞ୍ଚିତ ବିଭୁ ତୁମି ସଦା ଅନୁକ୍ଷନ୍ ( ୨ଥର) ନିୟତ ଭରିଆ ଥାକୋ ଆମାର ନୟନ ଭକ୍ତ......॥ ॥ ୧॥

ମୋର୍ ଆଶା ଭାଲୋବାସା ଭକତି ପ୍ରେମ୍ ତୋମାରେ ଘେରିଆ ହୋ ନିକଶିତ ହେ (॥) ତୋମାର୍ ସେବାତେ ହୟ ସଫଲ ସାଧନ୍ ( ୨ ଥର) ସାର୍ଥକ ହୋକ୍ ମୋର୍ ସବ ତନୁମନ୍ ଭକ୍ତ......॥ ୨ ॥

ଓଗୋ ଲୀଲାମୟ ପ୍ରଭୁ ଚୀର ଦୟାମୟ ତୋମାର୍ ପ୍ରସାଦେ ହଇ ମୋରା ନିର୍ଭୟ (॥) ସେ ତୋମାରେ ଚିନ୍ତାହାରୀ ହରିବେ ମରନ୍ ( ୨ ଥର) ତୋମାର୍ ଆଶୀଷେ ହୟ ସଫଲ ଜୀବନ୍ ( ୨ ଥର) ଭକ୍ତ......॥୩॥

### ମଧୁର କୋରେ ନେଓ ହେ ଆମାୟ

ମଧୁର୍ କୋରେ ନେଓ ହେ ଆମାୟ ମଧୁର୍ କୋରେ ନେଓ ମଧୁର୍ ଋେଖେ ଆମାର୍ ଦିକେ ( ୨ ଥର) ବାରେକ୍ ଫିରେ ଋଓ ମଧୁର୍ କୋରେ ... ॥୦॥

ଧ୍ୟାନେର୍ କେଥାୟ ଚରମ୍ ଗତି ଜ୍ଞାନେର୍ ସେଥାୟ ଶେଷ୍ ପ୍ରେମେର୍ ସେଥାୟ ପରମ୍ ପୁଲକ ଅପରୂପେର୍ ଦେଶ୍ (॥) ସେଥାୟ ବହେ ତୋମାର୍ ପ୍ରେମେର୍ ( ୨ ଥର) ମଧୁର୍ ମଲୟ ବାଓ ମଧୁର୍ କୋରେ ... ॥ ୧ ॥

ସେନୋ ସଇତେ ପାରି ଦୁଃଖେର୍ ଆଘାତ୍ ବଇତେ ପାରି କର୍ମ ଭାର୍ ସେନୋ ତୋମାର୍ ସେବାୟ ବିଲିୟେ ଦି ଗୋପନ୍ ଅହଂକାର୍ (॥) ତୋମାର୍ ସୁରେ ସୁର୍ ମିଲିୟେ ତୋମାର୍ ବନେ ଫୁଲ୍ ଫୁଟିଏ ସେନୋ ଉଜାନ୍ ପଥେ ବାଇତେ ପାରି ତୋମାର୍ ପ୍ରେମେର୍ ନାଓ ମଧ୍ରର କୋରେ ... ॥ ୨ ॥

#### ମାନୁଷ୍ ହଓ୍ୱାଇ ବଡ଼ଇ କଠିନ୍

ମାନୁଷ୍ ହଓ୍ୱାଇ ବଡ଼ିଇ କଠିନ୍ (୨ଥର) ଜାନିସ୍ ନାରେ ଦୁନିଆୟ ମାନୁଷ୍ଠ କୂଲେ ଜନମ୍ ନିଲେ ମାନୁଷ୍ଠ ବୋଲେ କୟନା ଡାଇ (॥) ମାନୁଷ୍ଠ.....॥୦॥

ଯଦି ନାଥାକେରେ ମାନ୍, ନା ଥାକେରେ ହୋଷ୍ ତବେ ହୟନା ମାନୁଷ୍ଠ, ମାନୁଷ୍ଠ ମନ୍ତେ ଦୀକ୍ଷା ନିଲେ ମାନୁଷ୍ଠେ ମାନୁଷ୍ଠ ମିଲାୟ ମାନୁଷ୍ଠ କୂଲେ ଜନମ୍ ନିଲେ ମାନୁଷ୍ଠ ବୋଲେ କୟନା ତାଇ ମାନୁଷ୍ଠ - ।। ୧ ॥

ମାନୁଷେର୍ ଆୟର୍ ଭିନ୍ନ, ସ୍ୱଭାବେ ତା'ର ଆଛେ ଚିହ୍ନ ସବାଇ ତାର୍ କରେ ମାନ୍ୟ, ଧନ୍ୟ ସେ ଦୁନିଆ ମାନୁଷ୍ଠ କୂଲେ ଜନମ ନିଲେ ମାନୁଷ୍ଠ ବୋଲେ କୟନା ତାଇ ମାନୁଷ୍ଠ......॥୨॥

ସଦାୟରେ ବ୍ୟବହାରେ, ମାନୁଷ୍ କେ ଯେ ମାନୁଷ୍ କରେ ମାନୁଷ୍ ମତ୍ତେ ଦିକ୍ଷା ନିଲେ, ମାନୁଷ୍ଷ ମାନୁଷ୍ ମିଲାୟ ମାନୁଷ୍ କୂଲେ ଜନମ ନିଲେ ମାନୁଷ୍ ବୋଲେ କୟନା ତାଇ ମାନୁଷ୍ ...... ॥୩॥

### ମାନୁଷ୍ <sup>ହୋୟେ</sup> ଦୟାଲ ମାନ୍ତି

ମାନୁଷ୍ଠ ହୋୟେ ଦୟାଲ୍ ମାଝି ସାଧନାୟ କୋରଲାମ୍ କି (୨ଥର) ଆମାର୍ (ବାହିର୍ ଭିତର୍ ଏକ ହୋଲୋନା) ଦୟାଲ୍ (୨ଥର) ବାହିରେ... ସରେ ଥାକୁନି... ମାନୁଷ୍ଠ ହୋୟେ...... ॥୦॥

ଶତ ଶତ ଭକ୍ତ ଦେଖିଲାମ୍..., ଏଇ ଦୁନିଆୟ... ତୋମାର (ବୟା ପେୟେ ଜୀବନ୍ ଧନ୍ୟ) (୨ଥର) ହୋୟେ ଯାୟ... ଜୀବନ୍ ଧନ୍ୟ ହୋୟେ ଯାୟ ଓଜି (ରାଧା ବୋଲେ ଦୁଇ ବାହୁ ତୂଲେ) (୨ଥର) ପାର୍ ହୋୟେବେ ବିଧ୍...

ସତସଙ୍ଗେର୍ ମାନୂଷ୍ ବୋଲି ଆମି, ରଙ୍ଗ ମାଖା ମାନୁଷ୍ ହୋଇ ଆମାର୍ (ହୃଦୟେର୍ ବିଦରେ ଆମି) ( ୨ଥର) ସତସଙ୍ଗେର୍ ଗୁନ ଗାଇ... ସତସଙ୍ଗେର୍ ଗୁନ ଗାଇ ଆମି (ଶେଷ୍ ବେଲାତେ ପାଲ୍ ତୁଲିଲାମ୍) ( ୨ଥର) ଏଖନ ପୁରୁଷୋଢମ ବୋଲେ ଡ଼ାକି ମାନୁଷ୍ ହୋୟେ...... ॥ ୨॥

ପାରେର୍ ସଙ୍ଗ ନିୟେ ଏଲୋ... ଦୟାଲ୍ କିତ୍ ତୋଡିଡେ... ଓରେ (ଜଗାଇ ମାଧାଇ ଉଧ୍ୟାରିତେ) ( ୨ଥର) ଏ ଭବେର୍ ହାଟେ ଛିଲୋ (ଅନନ୍ତ କିଶୋରୀ ଆର୍ ପଞ୍ଚାନନ୍) ( ୨ଥର) ତାରା ଯୁଗେ ଯୁଗେ ତୋମାର୍ ସଙ୍ଗୀ ମାନୁଷ୍ଠ ହୋୟେ.....।୩॥

#### ମୋରେ ରାଖୋ ରାଙ୍ଗା ଦୁଟି ପାୟ

ମୋରେ ରାଖୋ ରାଙ୍ଗା ଦୁଟି ପାୟ ( ୨ଥର) ଏଇଟୁକୁ ଦୟା ସୁଧୁ କର ତୁମି ଆମାୟ ( ୨ଥର) ଏ ମିନତୀ କରିଗୋ ତୋମାୟ ମୋରେ...... ।। ।।

ୟଇନା କିଛୁ ଆର୍ ଓଗୋ ରାଧାସ୍ୱାମୀ ଦିବାନିଶି ଦେଖେ ଯାବୋ ତୋମାକେଇ ଆମି (।।) ଏ ଭାବେଇ କେଟେଯାୟ ଯେନୋ ଏ ଜୀବନ (୨ଥର) ଆର୍ ମନ କିଛୁ ନାହିଁ ଷୟ..... ମୋରେ...... ।।୧।।

ଦୁଃଖ ବ୍ୟାଥା ଯତୋ ଦେବେ ତୁମି ଦେଓ ଯାନି ଶେଷେ ଭାଲୋବେସେ କୋଲେ ତୁଲେ ନେଓ ( I I ) ଦୁଃଖେର୍ ଫୁଲ ଦିଏ ଗେଥେ ଦେବୋମାଲା ବ୍ୟାଥାତେ ସାଜିଏ ଦେବୋ ପୁଜାର୍ ଡ଼ାଲା ( I I ) ପାଇ ସେନୋ ଠାଇ ତାଇ ଚରନେ ତୋମାର୍ ( ୨ଥର) ଫିରିଏ ଦିଓନା ସେନୋ ତାଇ.....

#### ରୁନୁଝୁନୁ ରୁନୁଝୁନୁ ଆବାର୍ ନୂପୁର୍

ରୁନୁଝୁନୁ ରୁନୁଝୁନୁ ଆବାର ନୂପୁର ବାକେ ବିଶ୍ୱରାଜେର ପଦକ୍ଷେପେ ଏଇ ଧରନୀର ମାଝେ (୨ଥର) ରୁନୁଝୁନୁ...... ।।୦।।

ଯୁଗେ ଯୁଗେ ଏମ୍ନି କୋରେ ବାଳେ ନୁପୁର୍ ମଧୁର୍ ସୁରେ (।।) ଶ୍ରୀ ଭଗବାନ୍ ଆସେନ୍ ଯବେ (୨ ଥର) ଏଇ ମାନୁଷକେ ଗାକେ ରୁନୁଝୁନୁ......।।୧।।

ଇଷ୍ଟ ପଥେର୍ ପଥିକ୍ ଯାରା ସେଇ ସେ ଧ୍ୱନି ଶୋନେ ତାରା (।।) ତୃପ୍ତି ପରମ୍ ସକଲ୍ କ୍ଷନେ (୨ଥର) ବକ୍ଷେ ତାଦେର୍ ରାଜେ ରୁନୁଝୁନୁ.............

ସେଇ ସେ ଧ୍ୱନି ନିରବଧି ଶୋନ୍ତେ ତୋରା ଷସ୍ରେ ସଦି (।।) ଥାକ୍ରେ ମେତେ ଦିବସ ରାତେ ( ୨ଥର) ପ୍ରେଷସ୍ୱାର୍ଥେର୍ କାଜେ ରୁନୁଝୁନୁ......।।୩।।

#### ଶ୍ରୀ ଗୁରୁ ଚରନ କର ସାର୍

ଶ୍ରୀ ଗୁରୁ ଚରନ କର ସାର୍ ରେ ମନ୍ ଆମାର୍ ଦୟାଲ୍ ଗୁରୁ ନାମ୍ କର ସାର୍ (॥) ଓଇ ନାମ୍ ଶରନେ ଜୀବନେ ମରନେ ଭବ ସିନ୍ଧୁ ହବି ପାର୍ ରେ ମନ୍ ଆମାର୍ ଦୟାଲ୍ ଗୁରୁ ନାମ୍ କର ସାର୍ ଶ୍ରୀ ଗୁରୁ .....॥୦॥

ମୟାରି ସଂସାରେ ଥେକୋନା ଆର୍ ଭୂଲେ ବେଲା ଫୁରିଏ ଗେଲେ ପୋଡ଼େରୋବି ଅକୂଲେ ଡାକ୍ଛେନ୍ ଦୟାଲ ଓଇ ବୋସେ ଗୋକୁଲେ (୨ଥର) ସଦଗୁରୁ ବିନା ଗତି ନାଇ, ରେ ମନ୍ ଆମାର୍ ଦୟାଲ ଗୁରୁ ନାମ୍ କର ସାର୍ ଶ୍ରୀ ଗୁରୁ .....। ୧॥

ରାଧା ନାମ ବିନେ ଆର୍ ଗଡି ନାଇ ଅନ୍ୟ ନାମ୍ ସୁଧା ପାନ୍ କୋରେ ହଓରେ ଧନ୍ୟ କଲି ଜୀବେର୍, ଉଦ୍ଧାରେର୍ ଜନ୍ୟ ଶ୍ରୀ ଅନୁକୂଲ୍ ରୂପେ ଅବତାର୍, ରେ ମନ୍ ଆମାର୍ ଦୟାଲ୍ ଗୁରୁ ନାମ୍ କର ସାର୍ ଶ୍ରୀ ଗୁରୁ ......॥୨॥

#### ଶ୍ରୀପଦ ପଙ୍କଜ ଆଲୋକ୍ତ ରଞ୍ଜିତ ମା... ମା... ମା...

ଶ୍ରୀପଦ ପଙ୍କଳ ଆଲୋକ୍ତ ରଞ୍ଜିତ ରକ୍ତ କମଲ ସେନୋ ଶୋଭିଛେ ଶ୍ରୀପଦ ପଲ୍ଲଭ ଜଗତ ଦୁର୍ଲ୍ଲଭ ଭକତ ଜନ କୃପା ଲୋଭିଛେ ଶ୍ରୀପଦ.....।୦॥

ମାଧିରି ମଣିତ ମମତା ସିଞ୍ଚତ ଦୁନୟନେ କରୁନା ଝୋରିଛେ ତାପସ ବନ୍ଦିତ ଚରନ ଯୁଗଲ ହୃଦ୍ୟ ପଦ୍ ଆଲୋ କୋରିଛେ ଶ୍ରୀପଦ .....। ୧॥

ପ୍ଲାବନ୍ୟ ପ୍ରଭାୟେ ବିଭୂତି ବିଭାୟ ପ୍ରତିଟି ଅପରୂପ ସାକିଛେ ଦେବ ପ୍ରଶବିନୀ ଜଗତ ଜନନୀ ଜଗତେ ବରାଭୟ ଦହିଛେ ଶ୍ରୀପଦ......।୩॥

ବିନା ନିହିତ ଭୂବନ ବାଞ୍ଚତ କଣ୍ଠେ ମଧୁର ଧ୍ୱନି ବାକିଛେ ଅଧମ ସନ୍ତାନେ ବୟାକରୋ ମାଗୋ ମାଆ ... ( ୨ଥର) ଚରନ ରେନୁ ତବ ଜାପିଛେ ଶ୍ରୀପଦ......॥୪॥

### ଶୋନୋ ମାନୁଷ୍ ଶୋନୋ

ଶୋନୋ ମାନୁଷ୍ ଶୋନୋ (ଓରେ) କାନ୍ ପେତେ ଶୋନୋ (୨ଥର) ବୋଲ୍ଛି ଯା ତା ସତ୍ୟ କଥା ମିଥ୍ୟା କିଛୁଇ ନୟ ଯୁଗେ ଯୁଗେ ମାନୁଷ୍ ରୂପେ ଆସେନ୍ ଦୟାମୟ ତୋମ୍ରା ଗାଓ ସେଇ ମାନୁଷେର୍ କୟ (୨ଥର) (॥) ଶୋନୋ.....॥୦॥

ଧର୍ମ ଯଖନି ବିପାକି ବାହନେ ବ୍ୟର୍ଥ ଅର୍ଥେ ଧାୟ ପ୍ରେରିତ ତଖନି ଆବିର୍ଭୂତ ହନ୍ ପାପୀ ପରିତ୍ରାନ୍ ପାୟ (॥) ସେଇ ମାନୁଷେ ଧରେ ଯାରା (୨ଥର) ନାଇକୋ ତାଦେର୍ ଭୟ ତୋମରା ଗାଓ ସେଇ ମାନୁଷେର କୟ (୨ଥର) ଶୋନୋ.....॥॥॥

ରାମକୃଷ ବୁଦ୍ଧ ଯୀଶୁ ମହନ୍ତ୍ୟ ରସୁଲ୍ ଶ୍ରୀ ଚୈତନ୍ୟ ଶ୍ରୀରାମ୍ବୃଷ୍ଣ ଠାକୁର୍ ଅନୁକୂଲ୍ (॥) ଯିନି ଜୀବେର୍ ମାଝେ ମାନୁଷ୍ଠ ରୂପେ ଭାଙ୍ଗେନ୍ ସବାର୍ ଭୂଲ୍ ତିନି ମୋଦେର୍ ଦୟାଲ୍ ଠାକୁର୍ ପ୍ରାନେର୍ ଅନୁକୂଲ୍ (॥) ଓ ସେଇ (ଅନୁକୂଲେର୍ ଅନୁକୂଲେ) (୨ଥର) ବାଓ ତୋମାର୍ ନାଓ ତୋମରା ଗାଓ ସେଇ ମାନୁଷେର୍ ଜୟ (୨ଥର) ଶୋନୋ......॥ ॥ ॥

### ଶୁନୋରେ ଜଗତ୍ ବାସୀ

ଶୁନୋରେ...ଶୁନୋରେ... ଶୁନୋରେ ଜଗତ୍ ବାସି, ଦେଖ ସବ୍ ଦେଖ ଆସି ଆଜ୍ ଏସେଛେନ୍ ମୋଦେର୍ ଘରେ ସ୍ୱୟଂ ନାରାୟନ୍ ଘରେ ଘରେ କରରେ ତାର୍ ପୂଜାର୍ ଆୟୋଜନ୍ ( ୨ଥର) ଶୁନୋରେ.....ା୦॥

ପୂଜା ମାନେ ପୂରନ ପାଲନ୍ ଚରନ୍ ପୂଜା ତାରି ଚଲନ୍ (ଓ ଭାଇ) ଇଷ୍ଟଭ୍ୱିତି ଇଷ୍ଟ କରେ (୨ଥର) ଇଷ୍ଟଭିତି ଇଷ୍ଟକରେ, କରୋ ତା'ର ଯକ୍ତନ ଯାକ୍ତନ ଘରେ ଘରେ...

ଶନୋରେ.....ା। ୧ ॥

ତିନି ଆସେନ୍ ଅନେକ୍ ଦିନେର୍ ପରେ ଧରାର ଧୂଲେ। ଅଙ୍ଗେ ମେଖେ ମାନୁଷ୍ ରୂପ୍ ଧରେ (॥) ତା'ର ଶୋନାର୍ ଅଙ୍ଗ ହୟନା କାଲୋ (୨ଥର) ମୋଦେର୍ ପ୍ରାନେର୍ ମାଝେ ସେ କାଲାତେ ଆଲୋ ନଇଲେ ତା'ର ଆସା ଯାଖା ( ୨ଥର) କିବା ପ୍ରୟୋଜନ୍ ଘରେ ଘରେ...

ଶନୋରେ..... ॥ ୨ ॥

ତିନି ଆସେନ୍ ରାଖତେ କାରୋ ପନ୍ ବାର୍ ବାର୍ କର୍ତେ ହୟ ଆତ୍ମ ନିବେଦନ୍ (॥) (ଭାଇ) କଥା ଦିଲେନ୍ କୁରୁକ୍ଷେତ୍ର ମାଝେ ( ୨ଥର) (ଭାଇ) କଥା ଦିଲେନ୍ ପ୍ରାନେର୍ ସଖା ଧନଞ୍ଜୟ ଆଗେ ୟଦା ୟଦାହି ଧର୍ମସ୍ୟ ଗ୍ଲାନିର୍ଭବତି ଭାରତ, ଅଭ୍ୟୁଥ୍ୟାନମଧର୍ମସ୍ୟ ତଦାତ୍ୱାନମ୍ ସୃଜାମ୍ୟହମ୍ ପରିତ୍ରାଣାୟ ସାଧୁନାଂ ବିନାଶାୟତ ଦୃଷ୍ଟିତାମ୍, ଧର୍ମ ସଂସ୍ଥାପନାର୍ଥାୟ ସନ୍ତବାମି ୟୁଗେ ୟୁଗେ କଥା ଦିଲେନ୍ କୁରୁକ୍ଷେତ୍ର ମାଝେ କଥା ଦିଲେନ୍ ପ୍ରାନେର୍ ସଖା ଧନଞ୍ଜୟ ଆଗେ ସଦା ତିନି ଆସବେନ୍ ଯଖନ୍ (୨ଥର) ହୋୟେ ଯୁଗେର୍ ପ୍ରୟୋଜନ୍... ଘରେ ଘରେ...

ଶୁନୋରେ....ା୩॥

ଆକ୍ ଆମାଦେର୍ ଭେବେଇ ଦେଖୋ ଠାକୁର୍ ଅନୁକୂଲ୍ ଆସଛେନ୍ ତିନି ଭାଙ୍ଗତେ ସବାର୍ ଯତ କିଛୁ ଭୁଲ(॥) ପ୍ରାନ୍ ଭୋରେ ଦେଖି ଏସେଛେନ୍ ତିନି (ଭାଇ) ଯୁଗେ ଯୁଗେ ଏସେଛିଲେନ୍ ଯିନି( ୨ଥର) ତବେ ଆର୍ କି ଭାବନା ( ୨ଥର) ଲୟ ତା'ର ଆଶ୍ରୟ ଚରନ୍ ଘରେ ଘରେ... ଶୁନୋରେ....ା୪॥

### ସ୍କନ୍ ବନ୍ଧୁରେ... ଓ ବନ୍ଧୁ

ସ୍ଟଳନ୍ ବନ୍ଧୁରେ... ଓ ବନ୍ଧୁ ଆମାର୍ ତୁମି ବିନା ମନେର୍ ମାନୁଷ ନାଇ ଦିବାନିଶି ତାଇତୋ ଆମି ...ତୋମାରି ଗାନ୍ ଗାଇ ଆମାର୍ ତୁମି ବିନା ମନେର୍ ମାନୁଷ୍ ନାଇଁ ଅମାର୍ ତୁମି ବିନା ମନେର୍ ମାନୁଷ ନାଇଁ......।।୦॥

(ଏବାର୍) ସାରା ଜୀବନ୍ ପଥେ ପଥେ ଚୋଲ୍ବୋ ସୁଖେ ତୋମାର୍ ସାଥେ (॥) ଘର ଛେଡେ ଆକ୍ ପଥ୍ ଧରିଲାମ୍ ସେଇ ଆଶାତେ ତାଇ ଓଗୋ ବୟାଲ୍ ... ଘର୍ ଛାଡିଲାମ୍ ତାଇ ଅମାର୍ ତୁମି ବିନା ମନେର୍ ମାନୁଷ ନାଇଁ......॥ ୧॥

ତୁମି ଯଖନ୍ ହାସାଓ ମୋରେ ଭୁବନ୍ କାଁପେ ସୁଖେର୍ ଘୋରେ ତୁମି ଯଖନ୍ କାଁଦାଓ ଆମାୟ ତାକତେ ଫୁଲେ ଯାଇ ଓଗୋ ଦୟାଲ୍... ତୋମାର୍ ପାନେ ଚେୟେ ଚେୟେ ତାକ୍ତେ ଫୁଲେ ଯାଇ ଅମାର୍ ତୁମି ବିନା ମନେର୍ ମାନୁଷ ନାଇଁ..... ॥ ୨ ॥

> (ଆମାର) ତୋମାର୍ ମତୋ ସୁଖେ ସୁଖୀ ତୋମାର୍ ମତୋ ଦୁଃଖେ ଦୁଃଖୀ (॥) ତୋମାର୍ ମତୋ ଦରଦୀ କେଉ ନାଇ... ଓଗୋ ଦୟାଲ୍... ଦୟାଲ୍ ଆମାର୍ ତୋମାର୍ ମତୋ ଦରଦୀ କେଉ ନାଇ ଆମାର୍ ତୁମି... ଦିବାନିଶି ତାଇତୋ... ସୁକନ୍ ବନ୍ଧୁରେ.....।॥୩॥

### ସାଥେତୋ ଯାବେନା କିନ୍ଦୁ

ସାଥେତୋ ଯାବେନା କିଛୁ... ଓରେ ମୋନ୍ ( ୨ଥର) ତବେ ବୋଝାଟି ବାଡ଼ିଏ କେନୋ ମୋରିଛୋ ଏମନ୍...ଓରେ ମୋନ୍ ସାଥେତୋ..... ॥୦॥

ସଞ୍ଚୟ କୋରିଛୋ ଯାହା ପିଛେ ପୋଡ଼େ ରବେ ତାହା ( ୨ ଥର ) କେନୋ ତବେ ବୃଥା କର୍ମେ କାଟାଓ ଜୀବନ୍ ତାର୍ଚେୟେ ଯଦି ତାରେ ବାଧ୍ଁତେ ପ୍ରେମେରୋ ଡ଼ୋରେ... ( ୨ ଥର ) ସବାରେ ରାଖ୍ତେ ଜେଗୋ ଯାଗେ ଅନୁକ୍ଷନ୍... ( ୨ ଥର )

ଓରେ ମୋନ୍

ସାଥେତୋ..... ॥ ୧ ॥

ତାର୍ ପାୟେ ଆପୋନାରେ ସୋପେ ଦିଏ ଏକେବାରେ ( ୨ ଥର) ଆଶ୍ରୟ କୋରେନିତେ ରାତୁଲ ଚରନ୍ ଥାକିତୋନା ଭବୋଭୟ ସବ ଦୁଃଖ କରିକ୍ୟ... ( ୨ ଥର) ମହାଜୀବନେର୍ ମାଝେ ହୋତୋ ଉଉରୋନ୍ ( ୪ ଥର)

## ସଦ୍ଗୁରୁ ଧର୍ ଦେଖ୍ବି ଯଦି ତାରେ

ସଦ୍ଗୁରୁ ଧର୍ ଦେଖ୍ବି ଯଦି ତାରେ ସେଇ ଅଖଣ୍ଡ ପରମ ବ୍ରହ୍ନ ବ୍ୟାପ୍ତ ଯିନି ଚରାଚରେ ସଦ୍ଗୁରୁ ଧର୍ ... ॥୦॥

ତାର୍ କି ନାମ୍ କି ଠିକାନା ଅଚିନ୍ ପଥେର୍ ନିଷାନା ଗୁରୁ ଜାନେନ୍ ତାରି ଖବର୍ ଆର୍ କେଉ ଜାନେନା ଆରେ ସେଇତୋ ଯାନେ ଯାରେ ଗୁରୁ ( ୨ ଥର) ଦେଖାନ୍ ଦୟା କୋରେ ସଦଗର ଧର୍... ॥ ୧ ॥

ଓ ମନ୍ କପ ଗୁରୁର୍ ନାମ୍ ସଦି ଯାବେ ପରମ୍ ଧାମ୍ ଆଜବ୍ ଦେଶେ ଆଜବ୍ ଲୀଲା ବଡ଼ଇ ପ୍ରାନାରାମ୍ ଯେଥା ଅହର୍ ନିଶି ମଧୁର୍ ସୁରେ ( ୨ଥର) ରାଧା ରାଧା ଝଙ୍କାରେ ସଦ୍ଗୁରୁ ଧର୍ ... ॥ ୨ ॥

### ସବାର୍ ଚେୟେ ତୋମାୟ ଭାଲୋ

ସବାର୍ ଚେୟେ ତୋମାୟ ଭାଲୋ ବାସବୋ କେମନ୍ କୋରେ ଦେଓ ବୋଲେ ଦେଓ ପ୍ରାନେର୍ ଠାକୁର୍ ଦେଓ ବୋଲେ ଦେଓ ମୋରେ(।।) ସବାର୍......।। ।। ସାଧ୍ୟେ ତୋମାୟ ଭାଲୋବାସି

ପତ୍ନୀ, ପୁତ୍ର, ବିଭବିଭବ, ପ୍ରବୃତ୍ତିର୍ ଇସାରାୟ ବହିର୍ମୁଖି ମନ୍ ସେନୋ ମୋର୍ ଛୁଟେ ନାହିଁ ଯାୟ ( I I ) କବେ ତୁମି ହବେ ଆପନ୍ କୋର୍ବୋ ତୋମାୟ ସବ୍ ନିବେଦନ୍ ( I I ) ଓଗୋ ଆମାର୍ ଆରାଧ୍ୟ ଧନ୍ ( ୨ ଥର ) ଥାକୋ ହୃଦୟ କୁଡ଼େ ଦେଓ ବୋଲେ ଦେଓ ପ୍ରାନେର୍ ଠାକୁର୍ ଦେଓ ବୋଲେ ଦେଓ ମୋରେ( I I ) ସବାର....... 1 I ୨ I I

### ହେ ଠାକୁର୍ ଜୀବନ ପଥେ ଚୋଲ୍ତେ

ହେ ଠାକୁର୍ ଜୀବନ୍ ପଥେ ଷେଲ୍ତେ ଗିୟେ କରି ଯତ ଭୂଲ୍ ସେ ଭୂଲ୍ ଆମାର୍ ହୟ ଯେନୋ ଗୋ ତୋମାର୍ ପୂଳାର୍ ଫୁଲ୍ (11) ହେ ଠାକୁର୍ ...... । । ୦ । ।

ସଂସାରେତେ ଦୁଃଖ କାଲା ମାଥାୟ ନିଏ ସତ ଚୋଲ୍ଛି ଭେସେ ସ୍ରୋତେର୍ ମୁଖେ ଭାଙ୍ଗା ତରୀର ମତୋ (11)

ତୋମାର୍ କିପାୟ ପାଇ ସେନୋ ଗୋ (୨ଥର) ଅକୂଲେତେ କୁଲ୍

ସେ ଭୂଲ୍.....ା!୧ା।

କି ଷଇ ଆର୍ କି ଯେ ନା ଷଇ କିଛୁଇ ନାହିଁ ଯାନି ହୃଦୟେ ମୋର୍ ଆଛୋ ପ୍ରଭୁ ହେ ମୋର୍ ଜୀବନ୍ ସ୍ୱାମୀ ( I I ) ବୁଝିଏ ମୋରେ ଦେଓ ହେ ପ୍ରଭୁ ( ୨ଥର) ତୁମି ଯେ ମୋର୍ ସକଲ୍ ସୁଖେର୍ ମୂଲ୍ ସେ ଭୂଲ୍... @G^

#### ଓ ମନ୍ୱା ରେ... ସାଧ୍ଲେତୁ ଅମର୍ ଜୀବନ୍

ଓ ମନ୍ତ୍ୱା ରେ... ସାଧିଲେତୁ ଅମର୍ ଜୀବନ୍ ବାଧଁଲେତୁ ଅମ୍ବିତ୍କି ଧାରା... (॥) ତନ୍ତନ୍ତୁରେ ଶାସୋ କା ୟେ ତାର୍, ଟୁଟେଗା, କବ୍ କନ୍ ଜାନେ (॥) ତୋଡ୍କେ ବନ୍ଧନ୍ ସାରେ ଡୋର୍ ଗୁରୁକି ଥାମୋ ହା ହା ଡୋର୍ ଗୁରୁକି ଥାମୋ (॥) ତୋଡ୍କେ ବନ୍ଧନ ସାରେ.....॥୦॥

ଓ ମନ୍ୱାରେ... କୀବନ୍ ନୈୟା ଖେଥ୍ୱନ୍ ୟଲା କୌନ୍ ଭଲା ସାହିଲ ହେ ତେରା (॥) ଓପନ୍କାତି ନଦିଆ ୟେ ନାଓ, ଡୁବେଗା, କବ୍ କନ୍ କାନେ ତୋଡ଼୍କେ ବନ୍ଧନ ସାରେ.....॥ ୧॥

ଓ ମନ୍ୱାରେ... ଝୁଟେ ସବ୍ ରିଷ୍ଟେନାତେ ତେରେମେରେ ଛୋଡ଼୍ଦେ ୟେ ସାରା (॥) କବ୍ କିସିକେ ପ୍ରୀତ୍କା ୟେ ଶାସ୍, ଛୁଟେଗା, ୟେ କନ୍ ଜାନେ ତୋଡ଼୍କେ ବନ୍ଧନ୍ ସାରେ.....।। ।। ।।

ଓ ମନ୍ଧ୍ୱାରେ... ଜୀବନଗୁରୁ ପରମଦୟାଲ ପ୍ରଭୁ ନାଥ୍ ସବ୍କା ସାହାରା (॥) ସଁପ୍ଦେତୁ ଅପନା ୟେ ଜୀବନ୍, ବଢ଼େଗା, ୟେ ତୁ ଭି ଯାନେ ତୋଡ଼୍କେ ବନ୍ଧନ୍ ସାରେ.... ॥୩॥

### <sub>ଜୀବନ</sub> ସେ ଭରା ପ୍ରଭୁ

ଜୀବନ ସେ ଭରା ପ୍ରଭୁ ନୟନ ୟୁଗଲ ପ୍ରେମ କରୁଣା କି ଧାରା ବାହାତା ହେ (॥) ଶ୍ରୀମୁଖ ନିଶ୍ରିତ ଅମ୍ବିତ ବଚନ ଚିର ମଙ୍ଗଳ ପଥ ଦରସାତା ହେ ଜୀବନ ସେ ଭରା... ॥୦॥

ପରମ ପବନ ତନୁ ମହିମା ମଷିତ ଲଲିତ ମଧୁର ଛବି ପ୍ରଭୁ କୁଲ କାଞ୍ଚିତ ଆର୍ତ୍ତ ଜନୋକା ପରମ ସାହାରା (୨ଥର) ଅମୀୟ ସୁଧା ବରସାତା ହେ ଜୀବନ ସେ ଭରା ... ॥୧॥

ଉଦିତ ଗଗନ ମେ ନବୀନ ତପନ ସମ ଦିବ୍ୟ କ୍ୟୋତି ସେ ଦୂରିତ ସକଲ ତମ ନବୀନ ଆଲୋ ଉଜ୍ଜ୍ୱଲ କରତା ( ୨ ଥର) ମୁକ୍ତିକା ରାହା ଦିଖାତା ହେ ଶ୍ରୀମୁଖ ନିଶ୍ରିତ ଅମ୍ପିତ ବଚନ ଚିର ମଙ୍ଗଲ ପଥ ଦରସାତା ହେ କୀବନ ସେ ଭରା ... ॥ ୨ ॥

ହ୍ରିଦୟନାଥ ମେରେ ହେ ମହିୟାନ ଜରା ମରଣ ସେ ଦେତା ତ୍ରାଣ ଶାନ୍ତ ସୋମ୍ୟ ପ୍ରଭୁ ହେ କଲ୍ୟାଣ ଶରଣ ତେରା ହରସାତା ହେ ଜୀବନ ସେ ଭରା ... ॥୩॥

### ଯୋ ମେରେ ପ୍ରୀତମ୍ବସ ପ୍ରୀତ୍ କରେ

ଯୋ ମେରେ ପ୍ରୀତମ୍ସେ ପ୍ରୀତ୍ କରେ ମୋହି ପ୍ୟାରା ଲାଗେରୀ ( ୨ଥର) ଯୋ ମେରେ ପ୍ରିତମ୍ କୀ ସେଓୟା ଧାରେ ଏହି ଦିନ ଦିନ ଜାଗେରୀ ଯୋ ମେରେ... ଯୋ ମେରେ ପ୍ରୀତମ୍ କୀ ମହିମା ଗାଓ୍ୱେ ମୋହି ଅଧିକ ସହାଓୟେରୀ ଯୋ ମେରେ... ଯୋ ମେରେ ପ୍ରୀତମ୍ କୀ ଚରନନ୍ ଲାଗେ ଓଡ଼ି କଗ୍ସେ ଭାଗେରୀ ଯୋ ମେରେ... ସୋ ମେରେ ପ୍ରୀତତ୍ମକା ରୂପ ନୀହାରେ ଓଡ଼ି ଛବି ତାକେରୀ ସୋ ମେରେ... ସୋ ମେରେ ପ୍ରୀତମ୍ କା ଶବ୍ଦ ସମ୍ଭାରେ ଗୁରୁ ଦର ଝାଁକେରୀ ଯୋ ମେରେ... ଯୋ ମେରେ ପ୍ରୀତମ୍ କି ଶରନ ସୟାରେ ଓଡ଼ି ଘର ଯାଓାରୀ ଯୋ ମେରେ... ଯୋ ମେରେ ପ୍ରୀତମ କା ନାମ ପୁକାରେ ସୋଇ ନିଜ ଧାମ୍ସୀ ଧାରେରୀ ଭବ ଜଲ ସେ ଯୋ ତରନା ୟହେ ରାଧାସ୍ୱାମୀ ରାଧାସ୍ୱାମୀ ଗାଓ୍ୱେରୀ

### ଠାକୁର୍ଜୀ ମେରେ ପରମ ଦୟାଲ୍

ଠାକୁର୍କୀ ମେରେ ପରମ ଦୟାଲ୍ (୨ଥର) ପରମ କରୁନା ଘନ ସତ୍ୟ ନିରଞ୍ଜନ (୨ଥର) ପୁରୁ ଅବତାର୍...(୩ଥର) ଠାକୁର୍କୀ.....॥୦॥

ସକଲ ଦୁଃଖଭାର୍ ବେଦନା ହାରୀ ପରମାନନ୍ଦ ପ୍ରିୟ ଭବଭୟ ହାରୀ (॥) ବିଶ୍ୱନାଥ ସ୍ୱାମୀ ସ୍ୱରଟ ବିରାଟ (୨ଥର) ଚେତନ ବର୍ଦ୍ଧନ ପ୍ରଭୂ ଜୀବନ ଆଧାର୍ ପ୍ରଭୂ ଅବତାର୍...(୨ଥର) ଠାକୁର୍କା......॥୧॥

ଶୁଭଦ ପାଲକ, ଅଭୟ ନାୟକ କୃତି ବିନାୟକ ଶ୍ରେୟ ବିଧାୟକ (॥) ଆଲୋକ ଉଜଲ ପାଞ୍ୱକ ପୁରୁଷ (୨ଥର) ପୁରୁଷୋଉମ ପ୍ରଭୂ ପ୍ରେମୀ ଦାତାର ପ୍ରଭୂ ଅବତାର୍...(୨ଥର) ଠାକୁର୍କା...... ॥୨॥

ବୈଶିଷ୍ୟପାଲି ଆପୁରୟମାଣ୍ ଜୀବନ ପ୍ରାଣକେନ୍ଦ୍ର ପରମ ଆଧାର୍ (॥) ଭୂବନ ବିଭୂଷିତ କରୁଣା ଅପାର୍ (୨ଥର) ସନାତନ ଇଷ୍ଟନାମ୍ ଅମ୍ବିତ ଆଧାର୍ ପ୍ରଭୂ ଅବତାର୍...(୨ଥର) ଠାକୁର୍ଜୀ......॥୩॥

## ତୁମ୍ ବିନ୍ କୌନ୍ ପ୍ରଭୁ ପାର ଲଗାଏ

ତୁମ ବିନ୍ କୌନ୍ ପ୍ରଭୁ ପାର ଲଗାଏ (୨ଥର) ବିଚ୍ ଭଓଁ୍ରମେ ଡୋଲେ ନୈୟା (୨ଥର) ପନଘଟ୍କା କୌନ ରାହ୍ ଦିଖାଏ ତୁମ ବିନ୍.....॥୦॥

ପାନି ଗେହେରା ଦୂର୍ଗମ୍ ସାଗର ( ୨ଥର) ମାଝୀ ମୂରଖ୍ ସ୍ୱାମୀ ଦୟାକର୍ ( ୨ଥର) ତାରନ ହାରୀ ତେରେ ବିନ୍ ଅବ୍ ଭବ ସିନ୍ଧୁମେ କୌନ ସାହାଏ ( ୨ଥର) ବିଚ୍ ଭ୍ୱଁର ମେ... ପନଘଟ୍କା କୌନ୍... ତୂମ ବିନ୍......। ୧॥

ଶକ୍ତି ନା ଭାଏ ଜ୍ଞାନ୍ ନା ଆଏ ରୋମ୍ ରୋମ୍ ପ୍ରଭୁ ତୁଝ୍କୋ ବୁଲାଏ (॥) ଜୀବନ ସ୍ୱାମୀ ତେରେ ବିନ୍ ଅବ କାଲ ମରନ୍ସେ କନ୍ ବୟଏ ତୁମ ବିନ୍......॥ ॥ ॥

ଦିନ୍ ଦୟାଲୁ ମଙ୍ଗଲକାରୀ ( ୨ଥର) ତୁଝ୍ବିନା କୋଇନା ରକ୍ଷାକାରୀ ( ୨ଥର) ପ୍ରାଣ୍ ତେରେ ଚରନୋମେ ଅବ ତୁହି ଜୀବନ୍ ପଥ୍ ଦରଶାଏ ( ୨ଥର) ବିଚ୍ ଭଓ୍ଜମେ... ପନଘଟ୍କା କୌନ୍... ତୁମ ବିନ୍ ......॥୩॥

## ଦଯାଲ୍ ତୃହି ମେରା ଜୀବନ୍ ଧରେ

ଦୟାଲ୍ ତୁହି ମେରା ଜୀବନ୍ ଧରେ ତେରୀ ଅମ୍ଡିତବାନୀ ସବ୍କା ବର୍ଧନ୍ କରେ ( ୨ଥର) ଦୟାଲ୍ .... ॥୦॥

ଦର୍ଦର୍ ଭଟକା ଚୈନ୍ନା ପାୟା ମାୟା ବନ୍ଧନ୍ ମେ ସର୍ ଚକରାୟା ଦରଦ୍ ନ ଜାନେ କୋଇ, ନାହି ପହୟନେ କୋଇ (ଅବ) ତେରେ ଚରନନ୍ ମେ ଆନନ୍ ପତେ ଦୟାଲ୍.... ॥୧॥

ସବ୍ସେ ପ୍ୟାରା ତୁମ୍ ସାହାର ତୁମ୍ବିନା ତୋ କଗ୍ ଆଁଧିଆରା ଭେଦ୍ ନ ଜାନେ କୋଇ, ସୁରତ୍ ନ ଜାନେ କୋଇ (ଅବ) ତେରେ ଶରନ୍ମେ ଜୀବନ୍ ତରେ ଦୟାଲ୍... ॥ ୨ ॥

ଜଗତ କେ ସ୍ୱାମୀ ଅନ୍ତର୍ଯାମୀ ଦରଶ ଦିଖାଓ ପ୍ରଭୁ ପରମ ନାମୀ ଥାମା ଡୋର୍ ସୋଇ, ରହନା ଭରମ କୋଇ (ଅବ) ତୁମ ଜଗତକେ ଦୁଃଖନ୍ ହରେ ଦୟାଲ... ॥୩॥

#### ପରମ କରୁନା ଘନ ସାଧନ ଧନ

ପରମ କରୁନା ଘନ ସାଧନ ଧନ (୨ଥର) ମାଲିକ୍ ଦୀନ୍ ଦୟାଲ୍ ଦାତା ଜଗଦୀଶ୍ୱର ପତିତପାବନ (୨ଥର) ଠାକୁର୍ ପରମ୍ପିତା ମାଲିକ୍ ଦୀନ୍.....।।।।

ଦୁଃଖ ବେଦନ ତ୍ରିତାପ ତପନ ରୋଗ୍ ଶୋକ୍ ପ୍ରଭୂ ଦୂରିକରନ (॥) ନର ଦେହଧାରୀ ବିଶ୍ୱ ମୋହନ ( ୨ ଥର ) ସଦ୍ଗୁରୁ ଆଦିକାରନ୍ ତ୍ରାତା ଜଗଦୀଶ୍ୱର ପତିତପାବନ ଠାକୁର୍ ପରମ୍ପିତା ମାଲିକ୍ ଦୀନ୍......॥ ॥ ॥

ନାଥନାରାୟନ୍ କୀବନ ସାର ବୈଶିଷ୍ୟ ପାଲି ତାର ଆଧାର (॥) ଶିବ ସୁନ୍ଦର ପ୍ରେମନ ପାବନ (୨ଥର) ଧାୟକ ପରମ ଇଷ୍ଟ ତ୍ରାତା କଗଦୀଶ୍ୱର ପତିତପାବନ ଠାକୁର୍ ପରମପିତା ମାଲିକ୍ ଦୀନ୍......॥୨॥

ବିଶ୍ୱଭୂବନ ଆଶ୍ରୟ ଚରନ ଭରନ ପାଲନ ପୋଷନ ପୂରନ (॥) ପରମେଶ୍ୱର ନିଖିଲ ପ୍ରାନ (୨ଥର) ପୁରୁଷୋଭମ ପରମ ଦୟାଲ ଧାତା କଗଦୀଶ୍ୱର ପତିତ ପାବନ ଠାକୁର୍ ପରମପିତା ମାଲିକ୍ ଦୀନ୍.....॥୩॥

#### ପ୍ରଭୂ ଅନ୍ତରୟାମୀ

ପୁରୁ ଅନ୍ତରୟାମୀ (୨ଥର) ଜନମ ଜନମ ସେ ଜୀବନ ରଣମେ (୨ଥର) ତୁମ୍ ହିଁ ହୋ ମେରେ ସ୍ୱାମୀ (୨ଥର) ପୁରୁ......॥୦॥

ଚିତ୍ତନ କର୍ମମେ ଆୟର କଥନମେ ସ୍ନରଣମେ ତୁମ ପ୍ରଭୂ ବାକ୍ୟ ଶ୍ରବଣମେ (॥) ସକଲ ଚିରମେ ଧ୍ୟାନ ମନନ୍ମେ (୨ଥର) ତୁମ ହି ହୋ ମେରେ ସ୍ୱାମୀ ଅନ୍ତରୟାମୀ...(୩ଥର) ପ୍ରଭୂ......॥୧॥

ପୂଚ୍ଚନ ତୁମ୍ ମେରା ତୁମ ହୋ ସାଧନ। ବିଦ୍ୟା ଜ୍ଞାନ ପ୍ରଭୂ ତେରି ଭାବନା (॥) ଦିବା ଜାଗରଣମେ ନିଶି ନିଦ୍ରାମେ (୨ଥର) ତୁମ ହି ହୋ ମେରେ ସ୍ୱାମୀ ଅନ୍ତରୟାମୀ...(୩ଥର) ପ୍ରଭୂ......॥୨॥

ପୁଲକ ସ୍ମୂର୍ଶକା ପ୍ରେମ ତୁହ୍ଲାର। ହିଦୟ ସ୍ମୃଦିତ ହର୍ଶିତ ମେରା (॥) ଦୁଃଖ ବେଦନମେ ସୁଖ ଆନନ୍ଦମେ ( ୨ ଥର) ତୁମ ହି ହୋ ମେରେ ସ୍ୱାମୀ ଅନ୍ତରୟାମୀ...(୩ଥର) ପ୍ରଭୂ.....।॥୩॥

## ବନ୍ଦୁ ମେୟ ତୋଲା ବାର୍ ବାର୍

ବନ୍ଦୁ ମେୟ ତୋଲା ବାର୍ ବାର୍ ଠାକୁର୍ କର୍ ଜୋଡ଼କେ(॥)

ସତ୍ କେ ହରି ବ୍ରହ୍ନ ପରତ୍ପର୍ ତ୍ରେତା ମେ ରାମ ଅବତାର୍ (॥) ଦ୍ୱାପର୍ ମେ ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ କହ୍ନୈୟା (୨ଥର) ହୋକେ ହରି ଧନି ଭାଗ୍, ଠାକୁର୍ କର୍ ଜୋଡ଼କେ ବନ୍ଦୁ ମେୟ.....॥୧॥

ବୃଦ୍ଧ, ଇସା, ମହନ୍ନଦ ପୈଗୟର୍ ଆଓ ଚୈତନ୍ୟ ଅବତାର(॥) କାଲୀ ପୂଜାରୀ ହୋକେ ଆୟେ (୨ଥର) ରାମକୃଷ୍ଣ ଅବତାର୍, ଠାକୁର୍ କର୍ ଜୋଡ଼କେ ବନ୍ଦୁ ମେୟ......॥ ॥ ॥

ୟେ କଲି ଯୁଗମେ ନାନା ରୂପଲେ ଆୟେ ହୱସ ହରବାର (॥) କଭୁନି ଚିନେନ୍ ତୋଲା ବିଧାତା (୨ଥର) ଆୟେନ୍ ଅବଡ଼ ହମ୍ମାର, ଠାକୁର୍ କର୍ ଜୋଡ଼କେ ବନ୍ଦୁ ମେୟ......॥୩॥

ୟୁଗ ପରିପୂରକ୍ ଦୟାଲ୍ ଠାକୁର୍ ଅନୁକୂଲ ଅବତାର୍ (॥) ସବ୍ ୟୁଗ୍କେ ପୂରଣ କାରନ୍ ( ୨ଥର) ଅନୁକୂଲ ରୂପ୍ ତୁହ୍କାର୍, ଠାକୁର୍ କର୍ ଜୋଡ଼କେ ବନ୍ଦୁ ମେୟ.....॥୪॥

## ଭଜୋ ମନ୍ ଠାକୁର୍ ଚରନ୍ ହେ ଧାମ୍

ଭତ୍ତୋ ମନ୍ ଠାକୁର ଚରନ୍ ହେ ଧାମ୍ (୨ଥର) ଜପ୍ଲେ ନିଶ୍ବଦିନ୍ ଅମ୍ବିତ ପ୍ରଭୁନାମ (୨ଥର) ଭଜୋ ମନ୍... ଜୀବନ୍ ରକ୍ଷକ ସଦଗୁରୁ ସମରଥ ପରମ୍ ଦୟାଲ୍ ହରିନାମ୍...(୨ଥର) ଭଜୋ ମନ୍...... ॥୦॥

ଖୋକ୍ କ୍ୱାଲା, ଶଙ୍କା କାରନ ଦୂର୍ କରୋ ସବ ଦୃଃଖ ବେଦନ (॥) ପ୍ୟାସେ ମନ୍ମେ, ଉଷ୍କ ତପନ୍ ମେଁ (୨ଥର) ଶୀତଲ୍ ବାରିନାମ୍ ...ପରମ୍ ଦଯାଲ୍ ହରିନାମ୍... ଉଜୋ ମନ୍......॥୧॥

ପାପ୍ ମିଟେଗା, ଲୋଭ ହିଂସା ହୋଗି ଅଭୟ ଶାନ୍ତିକି ବରଷା (॥) ଶୀତ ଲହର୍ମେ ହିମଲ୍ ତନ୍ମେଁ ( ୨ଥର) ଜ୍ୟୋତି ପକଡ଼୍ ହେ ନାମ୍...ପରମ୍ ଦୟାଲ୍ ହରିନାମ୍... ଭଜ୍ଜା ମନ୍......॥ ୨॥

ପରମ୍ ପୁରୁଷ ପ୍ରଭୁ, ଅନ୍ତରୟାମୀ ଅମର୍ ନାମ୍କି, ଧାତା ନାମୀ (॥) କନମ ମରଣ ମେଁ, ଜୀବନ୍ ରଣ ମେଁ (୨ଥର) ଉଦ୍ଧାତା ହେ ନାମ୍...ପରମ୍ ଦୟାଲ୍ ହରିନାମ୍... ଭଜା ମନ୍.....।୩॥

## ମେରେ ହିୟେ ମେ ବଜତ ବଧାଇ

ମେରେ ହିୟେ ମେ ବଳତ ବଧାଇ ସନ୍ତ ସଙ୍ଗ ପାୟାରେ ॥ । ॥

ତୁଷ୍ଟ ଫିରି କଗ୍ମେ ବହୁ ତେରା ଭେଦ କହିଁ ନେହିଁ ପାୟାରେ ॥୧॥

ସନ୍ତ ମତା ଅତି ଉଚ୍ଚା ଗହିରା ବେଦ୍ କତେବ୍ ନ ଜାନାରେ ॥୨॥

ବଡ଼େ ଭାଗୀ କୋଇ ବିର୍ଲେ ପ୍ରେମୀ ତିନ୍କୋ ମରମ ଜନାୟାରେ ॥୩॥

ରାଧାସ୍ୱାମୀ ମେହେର୍ ସେ ଜୀବ୍ ଉବାରେ ଭନ୍ ମହିମା ଅଗମ ଆପାରାରେ ॥४॥

#### ୟେ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ର ହେ

ୟେ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ର ହେ... ୟେ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ର ହେ ୟେ ସଂସାର ୟେ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ର ହେ ୟାହାଁ କର୍ମ ହି ପୂଜା ଜାନ... ଇଷ୍ଟ୍ ନିର୍ଦ୍ଦେଶ୍ୱକା ପାଲନ କର୍ଭ ଜୀବନ୍ମେ ବନୋ ମହାନ୍ ୟେ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ର ହେ...ୟେ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ର ହେ... ॥୦॥

ବୈଠା କ୍ୟା ତୁ ଶୋଚ୍ତା ବନ୍ଦେ ବ୍ୟର୍ଥ ହି ସମୟ ଗଣ୍ଠାତା ବହୁମୂଲ୍ୟ ଇସ୍ ଜୀବନ୍ କୋ ତୁ କୁଁ ବର୍ବାଦ୍ ହେ କରତା (॥) ଉଠୋ ଯାଗୋ... ଉଠୋ ଯାଗୋ ଉଠୋ ଯାଗୋ ତୁମ୍, ଜୀବନ ବ୍ରତେ, ଉଠୋ ଯାଗୋ ୟାହାଁ କମି ମହା ଅଭିଯାନ ( ୨ ଥର) ୟେ ଧର୍ମକ୍ଷେତ୍ର ହେ... ॥ ୧ ॥

ସୁଚିନ୍ତନ୍ ସେ କ୍ୟା ହୋଗାରେ, କର୍ମମେ କିସ୍କୋ କିଆ ନେହିଁ କର୍ମ ହୀନ୍ ଯୋ ଭାଓ ଭକ୍ତି, ଦୁଃଖି ମେ ହୋତା ନଷ୍ଟ ଓ୍ୱହି (॥) ନିକଲ୍ ଚଲୋ..., ନିକଲ୍ ଚଲୋ ନିକଲ୍ ଚଲୋ ଇଷ୍ଟାର୍ଥ ୟଞ୍ଜମେ, ନିକଲ୍ ଚଲୋ ଯାହାଁ କର୍ମ ହି ବେଦ ପୁରାନ୍ ( ୨ ଥର) ୟେ ଧର୍ମକ୍ଷେତ୍ର ହେ...ୟେ ଧର୍ମକ୍ଷେତ୍ର ହେ... ॥ ୨ ॥

ପରମ ଦୟାଲକେ ଦିବ୍ୟ କଥନ୍କା ମନନ ଚିନ୍ତନ୍ କରମ ଜୀବନ, ବୃଦ୍ଧି, ଫଲ୍ଡା ଫୁଲ୍ଡା ସତ୍ୟ ଓ୍ୱହି ତୋ ଧରମ (॥) ବରନ କରୋ... ବରନ କରୋ ବରନ କରୋ ଉସ୍ ଅଭୟ ଚରନ୍କୋ ବରନ କରୋ ଓ୍ୱହାଁ ସାର୍ଥକ ଜୀବନ୍ ପ୍ରାଣ୍ (୨ଥର) ୟେ ଧର୍ମ କ୍ଷେତ୍ରହେ... ୟେ ଧର୍ମକ୍ଷେତ୍ର ହେ... ॥୩॥

#### ସବସେ ସୁନ୍ଦର ନାମ୍ ଠାକୁର୍କୀ

ସବସେ ସୁନ୍ଦର ନାମ୍ ଠାକୁର୍କୀ...ଠାକୁର୍କୀ...ହୋ ( ୨ଥର) ସବସେ ସୁନ୍ଦର ନାମ୍ ଠାକୁରଜୀ ( ୨ଥର) ମହିମା ମଞ୍ଚିତ କ୍ୟୋତି ବିଭାଷିତ...( ୨ଥର) ମଙ୍ଗଲ ଆଦି ନାମ୍ (୨ଥର) ଠାକୁର୍କୀ...ଠାକୁର୍କୀ... ସବସେ ସୁନ୍ଦର୍..... ॥୦॥ ପ୍ରେମ ସ୍ରୂପ, ତ୍ରିଭୂବନ ଭୂବ ଅମର ଉଜ୍ଜ୍ଲ, ଚିର ଅପରୂପ (॥) ଜୀବନ କାରଣ ମନଚିତ୍ର ଭାବନ (୨ଥର) ଜ୍ଞାନ ଗରଭିତ୍ ନାମ୍...( ୨ଥର) ଠାକୁର୍କୀ...ଠାକୁର୍କୀ... ସବସେ ସୁନ୍ଦର..... ॥୧॥ ତନୁପୁତ ମଣ୍ଡିତ, ଆନନ୍ଦ ଶୋଭିତ (୨ଥର) କମଲ ନୟନ ନୀତ, କରୁଣା ଅଙ୍କିତ ମାନସ ମୋହନ ସର୍ବଭୟ ଭଞ୍ଜନ (୨ଥର) ଚୀରସମା ପ୍ରୀତ୍ନାମ୍...( ୨ଥର) ଠାକୁର୍କୀ...ଠାକୁର୍କୀ... ସବସେ ସୁନ୍ଦର..... ॥ १ ॥ ଆନନ୍ଦ ଅନୁପମ, ଆଶ୍ରୟ ପରମ ଅସୀମ ଅନନ୍ତ, ଗୁରୁ ପୁରୁଷୋଭମ (॥) ଅଲଖ ନିରଞ୍ଜନ ସାଧନ କାରନ (୨ଥର) ନିତ ସୁମିରନ ନାମ୍...( ୨ଥର) ଠାକୁର୍ଜୀ...ଠାକୁର୍ଜୀ... ସବସେ ସୁନ୍ଦର..... ॥୩॥

## ସର୍ବ ମଙ୍ଗଲ ଦାତା ହେ

ସର୍ବ ମଙ୍ଗଲ ଦାତା ହେ, ଜୀବ ଉଧ୍ୟାର ବିଧାତା ହେ (୨ଥର) ଇଷ୍ଟ୍ ଦେବତା ପୁରୁଷୋରମ ପ୍ରଭୁ ଠାକୁର୍ ଚରନ୍ ମେ କରୁ ପ୍ରନାମ୍ ସର୍ବ ମଙ୍ଗଲ..... ॥୦॥

> ଦୀପ୍ତଶୀଖ ପ୍ରଭୁ ଦୟା କରୋ ହେ ମୋହ ରାଗ୍ ଦ୍ୱେଷ କରୋ ନାଶ (॥) ବ୍ରହୁଜ୍ଞାନ ହେ ଗୁରୁ ବରାବୟ (୨ଥର) ନଷ୍ଟ କରୋ ତୁମ୍ ସକଲ ତ୍ରାଶ୍ (୨ଥର) ସର୍ବ ମଙ୍ଗଲ.....॥୧॥

ନିୟତ ତେରେ ଚରନ ପ୍ରାନ୍ତମେ ଦାସ ବନ୍ କର୍ କରେ ୟତନ୍ (॥) କାତର ଚ୍ଚୀବନ ଶୋକ ବେଦନା (୨ଥର) ଦୂର୍ ହୁଏ ବଶ୍ ପ୍ରେମ୍ ମଗନ୍ (୨ଥର) ସର୍ବ ମଙ୍ଗଲ.....॥୨॥

ଜୀବନ ଉତ୍ସ ନାଥ୍ ନାରାୟନ୍ ଉଚ୍ଛଲ ପ୍ରାନ୍ ଆଧାର (॥) ଭକ୍ତ ବଲ୍ଲଭ ମନ ଭାବନ (୨ଥର) କରୁନା ନିଧ୍ ପ୍ରଭୁ ଅବତାର (୨ଥର) ସର୍ବ ମଙ୍ଗଲ.....॥୩॥

## ସଦ୍ଗୁରୁ କେ ଶରନ୍ ମେ ଆଓ

ସଦ୍ଗୁରୁ କେ ଶରନ୍ ମେ ଆଓ ଆଓ ଆଓ ୟୁଗ୍ପୁରୁଷ୍ଠ ବୁଲା ରହାହେ (॥) ବଦେ...ପୁରୁଷୋଉମ୍...(୪ଥର) ସଦ୍ଗୁରୁ କେ.....॥୦॥

ଯଜନ୍ ଯାଜନ୍ ଇଷ୍ପଭୃତି ମନ୍ତ ମହା ପାୟ। ସ୍ୱୟନୀ ସଦାୟର୍ସେ ଜୀବନ୍ ମେହେକାୟ। (॥) ଇଷ୍ଟ ପ୍ରତିଷ୍ଠାକେ ଲିଏ ଅବ୍ ବ୍ୟକୁଲ୍ତା ହେ ଜୀବନ୍ ୟେ ସାର୍ଥକ୍ ହୁଇ ଗୁରୁକି କୃପା ହେ ବନ୍ଦେ...ପୁରୁଷ୍ଠୋଉମ୍...(୪ ଥର) ସଦ୍ଗୁରୁକେ.....॥ ।। ।।

ବିତେ ଦୁଃଖି, ବିତା କଷ୍ଟ, ବିତ୍ ରାହା ହେ ୟେ ଜୀବନ୍ କଲିୟୋଁକି ପୁକାର ସେ ଝୁମ୍ ଉଠା ହେ ୟେ ମନ୍ ରୋମ୍ ରୋମ୍ ପୁଲକିତ ହେ ତନ୍ ଭି ଗା ରାହା ହେ ମନ ଉମଙ୍ଗ୍ ସେ ଭି ଗୁନ୍ ଗୁନା ରାହା ହେ ବଦେ...ପୁରୁଷୋଉମ୍...(୪ଥର) ସଦ୍ଗୁରୁକେ......॥୨॥

ସତସଙ୍ଗ୍ କେ ହର୍ କଣ ମେ, ମୈତ୍ରୀ ହେ ସମାୟା ଦୀକ୍ଷା ମିଲା ତୋ ହମ୍ ୟେ ଜାନ୍ପାୟା ହିନ୍ଦୁ ହେ, ମୁସଲିମ୍ ହେ, ଶିଖ୍ ଔର ଇସାଇ ଏକତା କି ସୁତ୍ର ମେ ସବ୍ ହେ ଭାଇ ଭାଇ ବନ୍ଦେ...ପୁରୁଷୋଉମ୍...(୪ଥର) ସଦ୍ଗୁରୁକେ......।୩॥

## ହେ ଠାକୁର୍ ତୁମ୍ ଶାନ୍ତି ଦାତା

ହେ ଠାକୁର୍ ତୁମ୍ ଶାନ୍ତି ଦାତା ( ୨ଥର) ପରମପିତା ତୁମ୍ ମୁକ୍ତିଦାତା ଜୀବନ ରଣମେ ଦୟାଲ ପ୍ରଭୂ ତୁମ୍ ମରଣ ତ୍ରାତା ହେ ଠାକୁର୍..... ॥୦॥

ପଞ୍ଚଳନ୍ୟକି ଅମର ଧ୍ୱନିମେ ସାରଥି ନବ କୁରୁକ୍ଷେତ୍ରମେ (॥) ବିଧି ପୁରୁଷ୍ଠ ପ୍ରଭୂ ପ୍ରାନଧାତା (୨ଥର) ଜୀବନ ରଣମେ ଦୟାଲ... ହେ ଠାକୁର୍......॥ ୧॥

ପ୍ରଳୟ ୟୁଦ୍ଧ ଘନ ଘୋର୍ ଛାୟା ତାଣ୍ଡବ ନରତନ ମରଣ ଲାୟା (॥) ନିର୍ଭୟ କରୋ ପ୍ରଭୂ ପ୍ରାନଦାତା (୨ଥର) ଜୀବନ ରଣମେ ଦୟାଲ... ହେ ଠାକୁର୍......॥ १॥

ପରମ ବ୍ରହ୍ଲରୂପ ଅନନ୍ତ ଘନ ଇଷ୍ଟ ଜ୍ୟୋତିର୍ମୟ ପ୍ରଭୂ ସଚ୍ଚିଦାନନ୍ଦ ପ୍ରେଷ୍ଟ (॥) ପୁରୁଷୋତ୍ତମ ଗୁରୁ ସ୍ୱସ୍ତି ଦାତା (୨ଥର) ଜୀବନ ରଣମେ ଦୟାଲ... ହେ ଠାକୁର......॥୩॥

### ହୋଗା ଭାଇ ଧନ୍ୟ ଜୀବନ୍

ହୋଗା ଭାଇ ଧନ୍ୟ ଜୀବନ୍, ସାଧୁ ଠାକୁର୍ ଚରନ୍ ଉନ୍କୋ ବରନ୍ କରଲୋ... (॥) ସଦ୍ଗୁରୁ ଶରନ୍ ଯାଓ, ଶିଷ୍ଟ ସୁଦ୍ଧି ବୁଦ୍ଧି ପାଓ ଉନ୍କୋ ବରନ୍ କରଲୋ... ହୋଗା ଭାଇ.....॥୦॥

ଦେବ୍ ମାନୁଷ ସବ୍କେ ଧାତା ଦୟାଲ ଗୁରୁ ଜଗବିଧାତା (॥) ଇଷ୍ଟ ପଥ୍ ପର୍ ମନ୍ ଲଗନା, ଚଲ୍ନା ସବ୍କୋ ଚଲାନା ହୋଗା ଭାଇ......॥୧॥

ବିନ୍ ଗୁରୁକେ ଜୀବନ୍ ପ୍ୟାସା ପ୍ରେମ୍ ଭକ୍ତି ଗୁରୁ ନିବାସା (॥) ସୁଧା ବଚନ୍ ମୁର୍ତ୍ତ କରାନା, ବଚ୍ନା ସବ୍କୋ ବଚାନା ହୋଗା ଭାଇ......॥୨॥

ପୁରୁଷୋତ୍ତମ ଗୁରୁଧାର। ଜଲ୍ ଥଲ୍ ନବ୍ ମୁଖରସାର। ପ୍ରେମକି ଗଙ୍ଗା ବାହାନା, ବଢ଼୍ନା ସବ୍କୋ ବଢ଼ାନା ହୋଗା ଭାଇ.....।୩॥

## ଜର୍ଗଟ

### ଅମ୍ବିତେରି ପୁତ୍ର ତୋରା

ଅମୃତେରି ପୁତ୍ର ତୋରୀ, କୋର୍ତେ ପାରିସ୍ ବିଶ୍ୱଳୟ ( ୨ଥର) ପାର୍ବୋନା ପାର୍ବୋନା ବୋଲେ ମାନ୍ଦି କେନୋ ପରାଜୟ (॥) ଅମୃତେରି.....॥୦॥

ସୁସ୍ତ ତୋଦେର ହିଆର୍ ମାଝେ, ଗୁସ୍ତ ଆଗୁନ୍ ଅନିର୍ବାର୍ ଧକ୍ ଧକ୍ ଇକ୍ ଲକ୍ ଲକ୍ ଜୋଲ୍ଛେ ତେଜେ ଦାହିକାର୍ (॥) ଜାଗିଏ ତୋଲ୍ ମାତିଏ ତୋଲ୍ ଖେପିଏ ତୋଲ ଇଛା ପାରାର୍ (॥) ନାଚିଏ ତୋଲ୍ ତାଣ୍ଡବେତେ, କିସେର୍ ଭୟ କାହାର୍ ଭୟ ( ୨ଥର) ଅମ୍ବିତେରି......। । ୧॥

ବିଶ୍ୱପିତାର ମୂର୍ତ୍ତ ପ୍ରତୀକ୍, ତୋରା ନୋହିସ୍ ନିଶାଚୟ ତୋଦେର୍ ମାଝେ ଦେବ୍ ଦେବ୍ତା, ସତ୍ୟଶିବ୍ ଘୁମିଏ ରୟ (॥) ମାନୁଷ୍ଠ ତୋରା ମନୁଷଦ୍ ଜାଗା ଦେଖି ସ୍ୱାଧୀନ ସତ୍ୟ (॥) ଏଇ ମାନୁଷେର୍ ହିଆର୍ ମାଝେ, ରୁଦ୍ର କ୍ଷେପେ କେଗେ ରୟ ( ୨ଥର) ଅମିତେରି......॥ ୨॥

ସର୍ବପ୍ରଥମ୍ ତୂର୍ବଲତାର୍, ବିରୁଦ୍ଧେତେ ଯୁଦ୍ଧ କର୍ ଧ୍ୟଂସକର୍ ସର୍ବନାଶା, ରକ୍ତ ବିଜେର୍ ବଂଶଧର୍ (॥) ରକ୍ତ ଷେସା ବାଦୁଡ଼୍ଟାକେ ନାମ୍ ଆଗୁନେ ପୁଡ଼ିଏ ମାର୍ (॥) ମନ୍ ମୁଖ୍ ଏକ୍ ହୋୟେ ବଲ୍, ହବେ ହବେ ହବେ ଜୟ (୨ଥର) ଅମ୍ପିତେରି......॥୩॥

## ଆକିଏ ଜୀବନ ହେଲା ପ୍ରଭୂ ଧନ୍ୟ

ଆଜି ଏ ଜୀବନ, ହେଲା ପ୍ରଭୂ ଧନ୍ୟ ତୁମରି ପରଶ ପାଇ... (॥)

ଦେଇଛ ଶରଣ ନରନାରାୟଣ, ଆଉ କିଛି ଲୋଡ଼ା ନାହିଁ (୨ଥର) ହେ ଯୁଗ ପୁରୁଷୋତ୍ତମ (୨ଥର) ଦେଲ ଆସି ସତ୍ନାମ (॥)...॥୦॥

ଏ ନାମରେ ଯୋଗ ଏ ନାମରେ ଭୋଗ ଏ ନାମ ଜୀବନ ତରୀ (॥) ଏ ନାମ ମନନେ ଏ ନାମ ସ୍ମରଣେ ଦୁଃଖ ଯାଏ ଅପସରି (॥) କି ମଧୁର ନାମ ରସ (୨ଥର) ନାଶେ ମନର ପରାଶ (॥)...॥९॥

ତୂଟିଛି ତିମିର, ଉଇଁଛି ଭାୟର ଆଲୋକିତ ଏ ସଂସାର ଥିଲା ଯାହା ସୁପ୍ତ କରିଲ ଜାଗ୍ରତ କଲ ଜୀବନ ସଂସ୍ୱାର (॥) ଯୁଗେ ଯୁଗେ ଅବତରୀ ( ୨ଥର) ପ୍ରଭୂ ହେ କରିଛ ପାରି (॥)...॥ ୨॥

ARREST SECTION

## ଆକି ଧନ୍ୟ ହୋଲୋ ଧରାର୍ ଧୂଲି

ଆଜି ଧନ୍ୟ ହୋଲୋ ଧରାର୍ ଧୂଲି ଦୟାଲ୍ ଠାକୁର୍ ପେୟେ (॥) ଆୟ ଛୁଟେ ଆୟ ଆୟରେ ତୋରା ଆନନ୍ଦ ଗାନ୍ ଗେୟେ (॥) ଧନ୍ୟ ହୋଲୋ ... ॥୦॥

ଆଶାୟ ଭରା ନାମ୍ ଲୋ ଆଲୋ ଘୁଁଚ୍ଲୋ ଆଁଧାର୍ ମରନ୍ କାଲୋ ( ॥) ଆନନ୍ଦେରଇ ବଇଲୋ ସେ ବାନ୍ ମାଟିର୍ ସ୍ୱରଗ୍ ବେୟେ (॥) ଧନ୍ୟ ହୋଲୋ.... ॥ ୧॥

ଆର୍ ଆମାଦେର୍ ଭାବନା କି ରେ ଦୁଃଖ କିସେର୍ ବଲ୍ ମରୁର୍ ବୂକେ ଫୁଟ୍ଲୋ ସେ ରେ ସୋନାର୍ ଶତ ଦଲ୍ (॥) ଜୀବନ୍ ହୋଲୋ ପ୍ରାନ୍ ଝଲମଲ୍ ବିଶ୍ୱ ଭୂବନ୍ ହେୟେ (॥) ଧନ୍ୟ ହୋଲୋ ... ॥ ୨ ॥

ଝଡ଼୍ ତୁଫାନେ ରାତ୍ କେଟେଛେ ଭେଙ୍ଗେଛେରେ ଭୂଲ୍ ନତୁନ୍ ପ୍ରଭାତ୍ ଆନ୍ଲୋ ଧରାୟ ଠାକୁର୍ ଅନୁକୂଲ (॥) ଦୂଃଖ ଦହନ୍ ଗେଲୋ ଦୂରେ (ତାର୍) ଆଶିଷ୍ ଧାରାୟ ନେୟେ (॥) ଧନ୍ୟ ହୋଲୋ ... ॥୩॥

### ଉପମା ଅତୀତ ତୁମେ କି ଉପମା ଦେବି

ଉପମା ଅତୀତ ତୁମେ କି ଉପମା ଦେବି ଗୁଣାତୀତ ତୁମ କେଉଁ ଗୁଣ ବଖାଣିବି (॥) ଅସୀମ ସସୀମ ହୋଇ ଆସ ଧରାପରେ ଆପଣି ଆଚରି ଧର୍ମ ଶିଖାଅ ଜୀବରେ (॥) ସେହି ନବକଳେବର ପୁରୁଷୋଉମ ଦରଶନେ ହରେ ଦୁଃଖ ଜନମ ଜନମ ବିକୃତ ବିକାରୁ ନର ହେଲାରୁ ଆକୂଳ ଅକୂଳରେ କୂଳ ଦେଲ ହୋଇ ଅନୁକୂଳ ଦେଖାଇ ଦେଲହେ,ବଞ୍ଚିବା ବଡ଼ିବା ପଥ ଦେଖାଇ ଦେଲ ହେ ଶିଖାଇ ଦେଲ ହେ,ମରଣ ତାରଣ ମନ୍ଧ ଶିଖାଇ ଦେଲ ହେ... ॥९॥

ତୁମ କୃତି ଆଚରଣ କିଏ ବୁଝାଇବ ତୁମ କରୁଣା ସ୍ୱରୂପ କିଏ ବା ବୁଝିବ (॥) ଧରମ ପାଇଛି ରୂପ ତୁମ ଚଳନୀରେ ସଚଳ ହୋଇଛି ବିଧି ତୁମରି ବାଣୀରେ (॥) ଦୀକ୍ଷା, ଇଷ୍ଟଭୃତ୍ତି ଆଉ ଯଜନ ଯାଜନ ରଚିଛି ଏ ଭବେ ଅମୃତର ଅଭିଯାନ ନାହିଁ, ଦୁଃଖ, ନାହିଁ ଶୋକ ନାହିଁ ଆଉ ଭୟ ଲଭିଛି ମାନବ ଆଜି ଶାଡି ବରାଭୟ ସଜାଇ ଦେଲ ହେ, କେତେ ଅସଜଡ଼ା ମନ ସଜାଇ ଦେଲ ହେ ମଜାଇ ଦେଲ ହେ, ପ୍ରେମରସେ ବିଶ୍ୱଜନ ମଜାଇ ଦେଲ ହେ ...॥ ୨ ॥

## ଏଇ ଧରା ଧୂଳି ଅଙ୍ଗେ ବୋଳି

ଏଇ ଧରା ଧୂଳି ଅଙ୍ଗେ ବୋଳି କରିଛ ଲୀଳା...(॥) ତବ ରଙ୍ଗା ପଦେ ଦେଇଛି ଡ଼ାଳି ମୋର ଭଙ୍ଗା ମନର କ୍ୱାଳା ଏଇ ଧରା.....॥୦॥

ତୁମେ ହିଁ ଧର୍ମ ତୁମେ ଦର୍ଶନ ତୁମେ ହିଁ ଶାସ ଜ୍ଞାନ ବିଜ୍ଞାନ (ପ୍ରଭୂ) ତୁମେ ହିଁ ତୀର୍ଥ ବୃନ୍ଦାବନ (୨ଥର) ତୁମେ ସାହିତ୍ୟ କଳା ଏଇ ଧରା......॥୧॥

ସାକାରେ ତବ ପୂର୍ଣ ପ୍ରକାଶ ଅହଙ୍କାରେ କି ହୁଏ ବିଶ୍ୱାସ (ଏଇ) ବିଷକୁ ତୁମେ କଲ ପୀୟୁଷ (୨ଥର) କଥା ତ ମଧୁ ବୋଳା ଏଇ ଧରା......॥୨॥

ଆସିଲି ଖୋଳି ସଂସାର ସାରା ଏବେତ ନିଳେ ଦେଇଛ ଧରା (ତୁମ) ଋହାଣୀ ସେ କି ମଧୁଭରା (୨ଥର) ତୁମେ ଚିର ଅଭୂଲା ଏଇ ଧରା.....ା୩॥ ଏକି ଆନନ୍ଦ ପରମାନନ୍ଦ

ଏକି ଆନନ୍ଦ ପରମାନନ୍ଦ ପୁରୁଷୋଭମ ଲୀଳା ଅଭିନବ (॥) ପତିତପାବନ ନରନାରାୟଣ (୨ଥର) ପ୍ରେମମୟ ରୂପେ ଦିବ୍ୟ ଆବିର୍ଭାବ (୨ଥର) ଏକି ଆନନ୍ଦ.....॥୦॥

ବେନି ନୟନରେ ବହି ଯାଉଛିରେ ମିଳନ ଆକୁଳ ଆନନ୍ଦ ଅଶ୍ରୁରେ (॥) ଭକ୍ତ ଭଗବାନ ଅପୂର୍ବ ମିଳନ ବୃନ୍ଦାବନେ ବଂଶୀ ରାଧାରେ ଡ଼ାକିବ (୨ଥର) ଏକି ଆନନ୍ଦ......॥१॥

ଝରୁଛି ଅମୃତ ନାମ ପ୍ରେମ ବାରି ବିଶ୍ୱ ଭୂବନ ବିମୋହନ କରି (॥) ତନୁ ମନ ପ୍ରାଣ ନବ ଶିହରଣ ପ୍ରେମ ତରଙ୍ଗ ସାଗର ଲଘିଂବ (୨ଥର) ଏକି ଆନନ୍ଦ.....॥ ॥ ॥

ଗାଅରେ ଦୟାଲ ଦୟା ହୃଦ ଖୋଲି ଦୁଃଖ ବେଦନା ଦୂରେ ଯାଉ ଊଲି (॥) ପରମପିତାରେ ଡାକ ପ୍ରାଣ ଭରେ ନିର୍ଭରେ ଧର ନିର୍ଭୟ ହେବ (୨ଥର) ଏକି ଆନନ୍ଦ.....॥୩॥

### କି ଦିଏ ପୂଜିବୋ ଦୟାଲ୍

କି ଦିଏ ପୂର୍ଚ୍ଚିବୋ ଦୟାଲ୍, କି ଆଛେ ଆମାର ପ୍ରେମ ଫୁଲେ ପୂର୍କ୍ଲେ ନା କି, ପୂଜା ହୟନା ତୋମାର୍ (॥)...॥୦॥

ସୁବାଷିତ ଯତ ଫୂଲ୍, ମାଲତିବେ ନବକୂଲ୍ (୨ଥର) ନନ୍ଦନ କାନନେ ଆଛେ, ପାରିଜାତ ଫୁଲ୍ (୨ଥର) ତୁଲସୀ ଆର୍ ଗଙ୍ଗାଜଲେ, ପୂଳଲେ ନାହିଁ ତୋମାୟ ମିଲେ ନା ଧୋଇଲେ ନୟନ୍ ନୀରେ, ଚରନ ତୋମାର୍ (୨ଥର) ଆର୍କି ପୂଳା ହବେରେ (୨ଥର) ନା ଧୋଇଲେ ନୟନ୍ ନୀରେ ...॥୧॥

ମହାପୂଳାର୍ ଉପୟର୍, ଆମି କୋଥାୟ ପାବୋଆର୍ (୨ଥର) ନିରୁପାୟ ହୋୟେ ତୋମାର୍, ନାମ୍ କେ କୋରେଛି ସାର୍ (୨ଥର) ପୂରାନେ ଶୁନେଛି ଆମି, ନାମେର୍ ସାଥେ ଥାକୋ ତୁମି ତାଇ ବୋଲି ହେ ରାଧାସ୍ୱାମୀ, ଭରସା ତୋମାର୍ (୨ଥର) ଆର୍କି ପୂଳା ହବେରେ (୨ଥର) ନା ଧୋଇଲେ ନୟନ୍ ନୀରେ ...॥୨॥

ରାଧାନାମ ନିତେ ନିତେ, ସେ ଫୁଲ୍ ଯଦି ଫୁଟେ ଚିଭେ (୨ଥର) ଛୁଟିଲେ ଛୁଟିତେ ପାରେ, ନୟନେରୀ ଧାର (୨ଥର) ମୁଖେ ବୋଲ୍ବୋ ରାଧା ରାଧା, ଅଙ୍ଗେ ମାଖ୍ବୋ ଧୂଲୋ କାଦା (୨ଥର) ରାଖୋ ବା ନାରାଖୋ ଦୟାଲ, ଯା ଇଚ୍ଛା ତୋମାର (୨ଥର) ଆରକି ପୂଜା ହବେରେ (୨ଥର) ନା ଧୋଇଲେ ନୟନ୍ ନୀରେ ...।ମ୍ମା।

#### କିଏ ଗୋ ତୁମେ ରଖିଲ ବାନ୍ଧି

କିଏ ଗୋ ତୁମେ ରଖିଲ ବାନ୍ଧି ତୁମରି ପ୍ରେମ ବନ୍ଧନେ (॥) ନାଶିଲ ବ୍ୟଥା ଆଶାର କଥା (୨ଥର) କହିଲ କାନେ କାନେ ତୁମରି ପ୍ରେମ... କିଏଗୋ ତୁମେ....।।।॥

ଦରଦ ଭର। ଏହି ୟହାଣୀ ଅନ୍ତର ବ୍ୟଥା ନେଇଛି ଟାଣି ତୁମରି ଧନେ କରିଲ ଧନୀ କିଲୋଡ଼ା ଆଉ ଜୀବନେ ତୂମରି ପ୍ରେମ... କିଏଗୋ ତୁମେ.....॥୧॥

ଅନ୍ଧକାରକୁ ଅନ୍ଧକରି ଆଲୋକ ତୁମେ ଦେଇଛ ଭରି ମରଣ ଆଜି ଯାଇଛି ମରି ତୁମରି ନାମ ମନନେ ତୁମରି ପ୍ରେମ... କିଏ ଗୋ ତୁମେ ......॥ ୨॥

ବିଶ୍ୱଯାରେ କରିଛି ହେଳା କରିଲ ତାକୁ ଗଳାର ମାଳା (॥) ଏ ଅଭିନବ ତୁମରି ଲୀଳା (୨ଥର) ନାହିଁ ତ ବିଶ୍ୱ ଭୁବନେ ତୁମରି ପ୍ରେମ... କିଏ ଗୋ ତୁମେ.....॥୩॥

## ଗୁରୁନାମ ନିଏ ଭାସାନୋ ତରୀ

ଗୁରୁନାମ ନିଏ ଭାସାନୋ ତରୀ ସେ ଦିନ ଡୁବେ ଯାବେରେ ଚନ୍ଦ୍ର, ସୁର୍ଯ୍ୟ, ଗ୍ରହ, ତାରା ତାରାଓ ଡୁବେ ଯାବେରେ ସେଦିନ ତାରାଓ ଡୁବେ ଯାବେରେ..... ॥୦॥

ବହୁଦିନ୍ ପରେ ଆବାର, ମୋରା ଗାଙ୍ଗେ ଏଲୋ କୁଆର ( ୨ଥର) ଏବାର୍ କୁଆରେ ଛେଡ଼େଛି ପାଡ଼ି ଆରକି ତରୀ ଥାକେରେ...(॥) ଆରକି ତରୀ ଥାକେରେ...ଏବାର... ଗୁରୁନାମ......॥ ୧॥

ନବଭାବେ ନବୀନ୍ ତରୀ, ଗ୍ରୀଗୁରୁ ହୋଲେନ କାଷ୍ତାରୀ ( ୨ଥର) ଏବାର୍ ଆସୁକ୍ ଯତ ତୁଫାନ୍ ଭାରୀ ଆର୍କି ତରୀ ଡୁବେରେ...(॥) ଆର୍କି ତରୀ ଡୁବେରେ...ଏବାର... ଗୁରୁନାମ......॥ ୨॥

ମୁକୁନ୍ଦ ଦାସ ଭନେ ତୁଫାନେ ଆର୍ ଭୟ କରିସ୍ନେ ( ୨ଥର) ଆମରା ରାଧାର ନାମେ ବାଦାମ ଦିଏ ଉଚ୍ଚାନ୍ ବେୟେ ଯାବୋରେ...(॥) ଉଚ୍ଚାନ୍ ବେୟେ ଯାବୋରେ... ଆମରା.... ଗୁରୁନାମ......॥୩॥

#### କୀବନ ନାଥ ଜୀବନ୍ତ ଏଠି

ଜୀବନ ନାଥ ଜୀବନ୍ତ ଏଠି ଅଛନ୍ତି ତୋତେ ୟହଁ ଭାବିଲେ ଥରେ କହରେ ଦୂରେ (୨ଥର) ପାରିବ କିଏ ରହି ଜୀବନ.....॥୦॥

ନାଚିବ ନୟନେ ଅଧର ହସ, ଭୂବନ ଭୂଲା ସେ ମଧୁର ରୂପ (୨ଥର) ଶୁଭିବ କାନେ ଆ...ଆ..ରେ... ଆ...ଆ...(୨ଥର) କାଙ୍ଗାଳ ମୁଁ ତୋ ପାଇଁ ଜୀବନ......॥୧॥

ମୁରତି ବୋଲିରେ ଭାବନା ଯାର, ଭକ୍ତି ହୀନ ସେ ରିକ୍ତ ଚିର (୨ଥର) (ତାର) ଶାନ୍ତି ସୁଧା ସ୍ନିଗ୍ଧ ନୀରେ...(୨ଥର) ତୃଷା ମେଷ୍ଟେ ନାହିଁ ଜୀବନ......॥୨॥

କରୁଣା ଭରା ନୟନ ନୀରେ, ସାଗର ହୋଇ ଶ୍ରାବଶ ଝରେ (୨ଥର) ହୃଦୟେ ବନ୍ଧା ବେଦନା ବାଧା (୨ଥର) କଳୁଷ ଗଲା ଧୋଇ... ଜୀବନ.....।୩॥

ଶ୍ରୀ ପଦ ଧୂଳି ଶ୍ରୀ ଅଙ୍ଗ ଛୁଇଁ, ଧନ୍ୟ ଏହି ପୁଶ୍ୟ ଭୂଇଁ (୨ଥର) ପୁରୁଷୋତ୍ତମ କର୍ମ ଯଞ୍ଜେ...(୨ଥର) ପ୍ରେମେ ପଡ ଡ଼େଇଁ...

ଜୀବନ..... ॥୪॥

୧୬୮

### ତୁମକୁ ଜୀବନେ ପ୍ରଭୂ ନଥିଲେ ଧରି

ତୁମକୁ ଜୀବନେ ପ୍ରଭୂ ନଥିଲେ ଧରି (୨ଥର) ଯାଇଥାନ୍ତା ଡୁବି ଭବ ସାଗରେ ତରୀ ତୁମକୁ ......॥୦॥

ତୁମ ପ୍ରେମ ତୁମ ଦୟା, ଧରି ରଖିଛିଏ କାୟା (୨ଥର) କାଟିଛି ଏ ଭବମାୟା ନାମାମୃତ ବିତରି (୨ଥର) ନାମାମୃତ ବିତରି...କାଟିଛି ଏ... ତୁମକୁ ......॥୧॥

ଅଶାନ୍ତ ଏ ମନ ତଳେ, ମରଣ ଅନଳ କଳେ ଊଲିଲେ ଡୁମରି ତାଳେ, ଜୀବନ ଆସେ ଫେରି (॥) ତୁମେ ଯନ୍ତୀ ମୁଁ ଯେ ଯନ୍ତ, ତୁମେ ମୋ ପିତା ମୁଁ ପୁତ୍ର ତୁମରି ପ୍ରଦର ମନ୍ତ ସାହା ମାତ୍ର ମୋହରି (॥) ସାହା ମାତ୍ର ମୋହାରି...ତୁମରି ପ୍ରଦର... ତୁମକୁ ......॥ । । । ॥

କରିଛି ତୁମକୁ ପର, ତଥାପି ଧରିଛ କର ଜନମେ ଜନମେ ମୋର, ବ୍ୟଥା ନେଇଛ ହରି (॥) ଜଗତ ଜୀବନ ନାଥ, ତୁମେ ମୋ ମାନ ମହତ ପ୍ରଭୂ ହେ ମୁଁ ଆଲୋକିତ, ଆଲୋକରେ ତୁମରି (॥) ଆଲୋକରେ ତୁମରି...ପ୍ରଭୂ ହେ... ତୁମକୁ ......॥୩॥

# ତୋରା କେ ଦେଖିବି ମନେର୍ ମାନୁଷ୍

ତୋରା କେ ଦେଖିବି ମନେର୍ ମାନୁଷ୍ଠ, କେ ଦେଖିବି ଆୟ ବାରେକ୍ ହେରିଲେ ଯାରେ ଆଧାଁର୍ ଘୁଁଟେ ଯାୟ ଆଧାଁର୍ ଘୁଁଟେ ଯାୟ ମୋନେର୍ ଆଧାଁର୍ ଘୁଁଟେ ଯାୟ ବାରେକ୍ ହେରିଲେ ଯାରେ ଆଧାଁର୍ ଘୁଁଟେ ଯାୟ ତୋରା.....।।

ବୃହ୍ନା ବିଷ୍ଣୁ ଆଦି ଯତ ଦେବଗନେ ଭାବିଆନା ପାୟ ଯାୟ କବୁ ଧ୍ୟାନେ (॥) (ତିନି) ଜୀବେର୍ ତରେ ନର ଦେହ ଧୋରେ (୨ଥର) ଶ୍ରୀ ଅନୁକୂଲ ହୟେ ଆଜି ଉଦୟ ଧରାୟ (୨ଥର) ତୋରା.....॥ ୧॥

(ତାର) ପ୍ରେମମାଖା ମୂର୍ତ୍ତି ଖାନି ଦେଖିଲ ନୟନେ ଆପନ ହାରା ହୋୟେ ସବେ ପଡ଼େ ଚରନେ ମୁଖେ ମଧୁର ହାସି ଯାୟ ପ୍ରାନେ ପସି ( ୨ଥର) ସାଧ୍ୟ ନାହିକୋ ଜୀବେ ନୟନ ଫିରାୟ( ୨ଥର) ତୋରା......॥ ୨॥

ପାପି ତାପି କିୟା ଧନୀ କାଗାଂଲ ମୁର୍ଖ ପଣିତ କିୟା ବ୍ରାହ୍ନନ ଚଣ୍ଡାଲ (॥) ତିନି ଜନେ ଜନେ ପ୍ରେମ ଆଲିଙ୍ଗନେ (୨ଥର) ଅବିୟରେ ରାଧା ନାମ ବିଲାୟ (୨ଥର) ତୋରା ......॥୩॥

ମନେ କଥା ପ୍ରାନେର୍ ବ୍ୟଥା ସାଥେ ଲୟେ କତୋ ଶତୋ ଜୀବ ଆସ୍ଛେ ଧେୟେ (॥) ମାଥାର୍ ଭାର୍ ବୋଝା ସବ୍ ତା'ର୍ ପାୟେଦିଏ ( ୨ଥର) ତାରା ଆନନ୍ଦେ ରାଧାନାମେ ଜଗତ ମାତାୟ ( ୨ଥର) ତୋରା .....॥४॥

### ନାମର ଅନଳ ଜାଳରେ, ପ୍ରାଣର ପ୍ରଦୀପ ଜାଳ

ନାମର ଅନଳ ଜାଳରେ, ପ୍ରାଶର ପ୍ରଦୀପ ଜାଳ (୨ଥର) ଗ୍ରାମରେ ନଗରେ ପ୍ରତି ଘରେ ଘରେ (୨ଥର) ଆନନ୍ଦ ଅମୃତ ଢ଼ାଳ ରେ (୨ଥର) ନାମର......॥୦॥

ହୁମାନଳ ଅଖଣ୍ଡ ଶିଖା, ଦଗ୍ଧ କରୁ କଳୁଷ ବ୍ୟଥା (୨ଥର) ଭରି ଯାଉ ଶାନ୍ତି ସ୍ୱଞ୍ଜି, ମର୍ଭ୍ୟ ହେଉ ଅମରାବତୀ (୨ଥର) ପତିତ ପାବନ ପୁରୁଷୋଇମ (୨ଥର) ସେବାରେ ପରାଣ ଢ଼ାଳ ରେ (୨ଥର) ନାମର......॥୧॥

କଳିରେ ନାମ ଏକା ସାର, ଧନ ଜନ ସବୁ ଅସାର (୨ଥର) ନାମ ପ୍ରେମେ ମଜିଲେ ମନ, ପ୍ରାଣରାମ ମହାଚେତନ (୨ଥର) ଅଭୟ ପୟର ନିର୍ଭରେ ଧର (୨ଥର) ଘୁଞ୍ଜିଯିବ ମହାକାଳ ରେ (୨ଥର) ନାମର......॥୨॥

ଆସିଛନ୍ତି ଜୀବନ ନାଥ, ସେହି ସତ୍ୟ ଆଲୋକ ପଥ (୨ଥର) ସର୍ବଦିଗେ ଦିଅରେ କହି, ତା ବିନୁ ଅନ୍ୟଗତି ନାହିଁ (୨ଥର) ତାକୁ ତନୁ ମନ ଧନ ଦିଅ (୨ଥର) ହୃଦୟ ମନ୍ଦିରେ ବରିନିଅ ତାକୁ ତନୁ ମନ ଧନ ଦିଅ ମହାନଦ ରୋଳ ହରି ହରି ବୋଲ (୨ଥର) ଜୟ ଜୟ ଅନୁକୂଳରେ...(୨ଥର)

### ବଦନ ଭରିଆ ଗୁରୁନାମ୍ ନିଆ

ବଦନ ଭରିଆ ଗୁରୁନାମ୍ ନିଆ ଦିବାହୁ ତୋଲିଆ ନାଚରେ (॥) ହୋକ୍ନା କେନୋ ପାଶାନ୍ ହୃିଦୟ ( ୨ଥର) ନାମେତେ ଗଲିଆ ଯାଇବେରେ (॥) ନାମେତେ ଗଲିଆ...ନାମେତେ... ବଦନ.....॥।॥

ପ୍ରେମ୍ ମାଖା ମାଖି ନାମେରି ସନେ ଉଥଲିବେ ପ୍ରେମ୍ ନାମ୍ ଉଚ୍ଚାରନେ (॥) ପ୍ରେମ୍ ଅଶ୍ରୁଧାରା ବୋହିବେ ନୟନେ ( ୨ଥର) ହୃଦୟ ପୁଲକିତ ହୋଇବେରେ (॥) ହୃଦୟ ପୁଲକିତ...ହୃଦୟ... ବଦନ......॥ ॥ ॥

ପାପ୍ ତାପ ହାରୀ ରାଧା ରାଧା ନାମ୍ ନାମ୍ ଅଭ୍ୟାସ୍ କର ଦିଅନା ବିରାମ୍ (॥) ଲଇତେ ଲଇତେ ପାବେ ମୋକ୍ଷ ଧାମ୍ (୨ଥର) ପୂର୍ଷ ଶାନ୍ତି ଧାମେ ଯାଇବେରେ (॥) ପୂର୍ଷ ଶାନ୍ତି ଧାମେ...ପୂର୍ଷ ଶାନ୍ତି... ବଦନ......॥ १॥

ସତ୍ସଙ୍ଗ ପ୍ରେମ କର ଅନ୍ୱେଷଣ୍ ରାଧା ରାଧା ନାମ୍ ଜପ ଅନୁକ୍ଷଣ୍ ଗୋପାଲ ଗୋବିଦ ଅନୁକୂଲଚନ୍ଦ୍ର ( ୨ଥର) ପୁରୁଷୋଭମ ଜୟ ହେ (॥) ପୁରୁଷୋଭମ ଜୟ ହେ...ପୁରୁଷୋଭମ... ବଦନ.....।୩॥

## ବୃନ୍ଦାବନ ବୃନ୍ଦାବନ ଏହି ନବ ବୃନ୍ଦାବନ

ବୃନ୍ଦାବନ ବୃନ୍ଦାବନ ଏହି ନବ ବୃନ୍ଦାବନ ଦେଖରେ ସରବେ ଭକତଙ୍କ ମେଳେ ( ୨ଥର) ବିଜେ ଶ୍ରୀପୁରୁଷୋରମ... ବୃନ୍ଦାବନ.....॥୦॥

ନର ତନୁ ଧରି ଆସିହନ୍ତି ହରି ଏହି ଯେ ମରତ ଧାମ (॥) ସଙ୍ଗେ ସଖା ଧରି ଅନନ୍ତ କିଶୋରୀ (୨ଥର) ଲୀଳା କଲେ ସଂକୀର୍ତ୍ତନ... ବୃନ୍ଦାବନ.....॥୧॥

ପାପି ତାପି ମେଳେ ଲୀଳା ଆରୟିଲେ ଧନ୍ୟ ହେଲେ କଗତ କନ (॥) ଚରଣ ସ୍ମୁର୍ଶରେ ପଲ୍ଲବି ଉଠିଲେ (୨ଥର) ଶୁଷ ତରୁ ଲତା ଗଣ... ବୃଦାବନ.....॥୨॥

ଆସରେ ସରବେ ତାଙ୍କରି ଗରବେ କରିବା ବନ୍ଦନା ଗାନ (॥) ତନୁ ମନ ଧନ ଅରପି ଗାଇବା (୨ଥର) ବନ୍ଦେ ଶ୍ରୀପୁରୁଷୋଢମ...

### ମୋରୀ ଠାକୁରଜୀକି ବାନି

ମୋରୀ ଠାକୁର୍କୀ କି ବାନି, ପରମାନନ୍ଦ କି କାହାନୀ ସାରା କଗତ୍ମେ ଗୁଞ୍ଜେଲା (୨ଥର) କୟ ରାଧେ ରାଧେ କିରିତନ ଗାଞ୍ଜେ ସଂସାର ସାରା ଝୁମେଲା (୨ଥର) ହୋ ସଂସାର ସାରା ଝୁମେଲା (୩ଥର) କୟ ରାଧେ ରାଧେ.....।।

> ଦେଏଘର ମେଁ ସଂଗ୍ରୀବା ତିରଥି (ହୋ) ଭକ୍ତି ଭଚ୍ଚନିଷ୍ଣା ହୋଷ୍ଟେଲା (୨ଥର) ବନ୍ଦେ ପୁରୁଷୋତ୍ତମ ଦେହିକେ ନାରା (୨ଥର) ଠାକୁର୍ ଚରନ୍ ସବ୍ ପୂଚ୍ଚେଲା କ୍ଷୟ ରାଧେ ରାଧେ......॥୧॥

ସତ୍ସଙ୍ଗୀକେ ନାରା ଲଗନୱା (ହୋ) ପ୍ରେମ କଲିୱା ଫୁଟେଲା (୨ଥର) ଉକର୍ ଉକର୍ ଫୁଲୱା ଫୁଟାଇଲା ବାଟୋ (୨ଥର) ସାରା ବଗିୟ ମହକେଲା କୟ ରାଧେ ରାଧେ......॥୨॥

ଅମ୍ବିତ୍ ସରୋବର୍ ପ୍ୟାରକି ଲେହେରେଁ
(ହୋ) ଜ୍ଞାନ ଫୁଂହାରା ଫୁଟେଲା (୨ଥର) କିରଣୋଁକି ବାରିଷ୍ଠ ଜାହାଁ ହରଗମ୍ ଖୋକେ (୨ଥର) ସଦା ସତ୍ସଙ୍ଗୀମେ ଫୁଟେଲା ଜୟ ରାଧେ ରାଧେ.....।୩॥

48

### ହରିବୋଲେ ନୟନେରି କଲେ

ହରିବୋଲେ ନୟନେରି ଜଲେ ଭାସାୟେ କେନୋ ତାରେ ଡାକୋନା ହରି ହରି ବଲୋ ଦିନ୍ ଫୁରାୟେ ଗେଲୋ ପାରେ ସୟଲ କିଛୁ କରୋନା ହରି ବୋଲେ... ॥୦॥

ମାୟାରି ସଂସାରେ ଆମାର୍ ଆମାର୍ ବୋଲେ ଇହ କାଲ୍ ପର କାଲ୍ ହାରାୟୋନା (॥) ହରି ବୋଲେ... ॥ ୧ ॥

ନିତାଇ ବଲେ ଭାଇ ଆର୍ତୋ ସମୟ ନାଇଁ ଜୟ ରାଧେ ଗୋବିନ୍ଦ ବଲୋନା (॥) ହରି ବୋଲେ... ॥ ୨ ॥

ସଦ୍ଗୁରୁଙ୍କର ଶରଣାପନ୍ନ ହୁଅ, ସତ୍ନାମ ମନନ କର, ଆଉ, ସତ୍ସଙ୍କର ଆଶ୍ରପ୍ ଗ୍ରହଣ କର – ମୁଁ ନିଷ୍ଟ କରି କହୁଛି, ତୁମକୁ ଆଉ ତୁମର ଉନ୍ୟନ ପାଇଁ ରାବିବାକୁ ହେବ ନାହିଁ ।" –ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ଠାକୁର ଅନୁକୂଳଚନ୍ଦ୍ର